MATS UNIVERSITY

NAAC GRADE A+ ACCREDITED UNIVERSITY

MATS CENTRE FOR OPEN & DISTANCE EDUCATION

Hindi

Bachelor of Science (B.Sc.)
Semester - 3

SELF LEARNING MATERIAL

DSCC002

B.ScBiologySemester3rd HINDI
III:

मैट्सयूनिविनसटी
CODE: ODL/MSS/BSCB/102

S.No	Modu	Unit No	Page No
01	अध्याय01	सवत्रत्रता पुकारती	01- 41
	Unit 01	संज्ञा और सर्वनाम	03- 21
	Unit 02	पल्लवन विस्तार और समर्थन	22- 33
	Unit 03	व्याकरणिक भाषा	33- 35
02	अध्याय 02	बड़े घर की बेटी	41- 59
	Unit 04	कहानी का सारांश	41- 43
	Unit 05	मुहावरे और लोकोक्तियाँ का अर्थ	44- 46
	Unit 06	शद्व व्याकरण	47- 56
03	अध्याय 03	पथ तो यही है	60 - 86
	Unit07	भावार्थ और संदेश	60 - 62
	Unit 08	भाषा संशोधन	63- 65
	Unit 09	उपसर्ग और प्रत्य	66- 83
04	अध्याय 04	रिड की हड्डी	87- 106
	Unit 10	मुख्या सन्देश	87- 89
	Unit 11	समास व्याकरण	90- 99
	Unit 12	संछिप्त रूप के नियम	100- 103
05	अध्याय 05	मानकभाषा	107- 129
	Unit 13	मानकभाषा की परिभाषा	108- 119
	Unit 14	पदनाम की परिभाषा	120- 125
	Unit 15	व्यवहार एवं पत्रलेखन	126- 128
		Reference	129

COURSEDEVELOPMENTEXPERTCOMMITTEE

1. Prof.(Dr.)AshishSaraf,HoD,SchoolofSciences,MATSUniversity,Raipur, ChhattisgarhProf.(Dr.)Vishwaprakash Roy, School of Sciences,MATS
2. University,Raipur, ChhattisgarhDr.Prashant Mundeja,Professor,School of Sciences, MATS University, Raipur, ChhattisgarhDr.Sandhyarani
3. Panda,Professor,School of Sciences, MATS University, Raipur, Chhattisgarh
4. Mr.Y.C.Rao, Company Secretary, Godavari Group, Raipur, Chhattisgarh

.

COURSECOORDINATOR

Dr.Prashant Mundeja, Professor, School of Sciences, MATS University, Raipur,Chhattisgarh

COURSE /BLOCK PREPARATION

Dr.Suparna Shrivastava, Associate Professor, School of Arts & Humanities, Department of HindiMATS University, Raipur, Chhattisgarh

March,2025

FIRSTEDITION: 2025
ISBN: 978-93-49916-12-8

@MATSCentreforDistanceandOnlineEducation,MATSUniversity,Village-Gullu, Aarang, Raipur- (Chhattisgarh)All rights eserved.No part of this work may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from MATSUniversity, Village- Gullu, Aarang, Raipur- (Chhattisgarh)

Printed & Published on behalf of MATS University,Village-Gullu, Aarang, Raipur by Mr. Meghanadhudu Katabathuni, Facilities & Operations, MATS University, Raipur (C.G.)

Disclaimer-Publisher of this printing material is not responsible for any error or dispute from contentsof this course material, this is completely depends on AUTHOR'S MANUSCRIPT.
Printed at:The Digital Press, Krishna Complex, Raipur-492001(Chhattisgarh)

Acknowledgements:

The material (pictures and passages) we have used is purely for educationalpurposes. Every effort has been made to trace the copyright holders of materialreproduced in this book. Should any infringement have occurred, thepublishers and editors apologize and will be pleased to make the necessarycorrections in future editions of this book.

CHAPTERINTRODUCTION

Course has five chapters.Under this theme we have covered the following topics:

S.No	Modu	Unit No
01	अध्याय01	सवत्रत्रता पुकारती
02	अध्याय 02	बड़ घर की बटी
03	अध्याय 03	पथ तो यही हरिड
04	अध्याय 04	की हड्डी
05	अध्याय 05	मानकभाषा

"हिंदी व्याकरण और भाषा के मूल तत्व" नामक पुस्तक हिंदी भाषा के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक है। इस पुस्तक में विद्यार्थियों को भाषा के मूलभूत तत्वों जैसे शद्द रचना, वाक्य संरचना, काल, लिंग, वचन, कारक आदि के बारे में विस्तार से समझाया गया है। इसमें "सवततत्तापकारती," "बड़े घर की बेटी," "पर तो यही है," "ररडकी हडी," और "मानक भाषा" जैसे उदाहरणों के माध्यम से व्याकरण के नियमों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों को सही तरीके से लिखने और बोलने के कौशल में दक्ष बनाना है। इसके अलावा, इसमें अभ्यास प्रश्न और स्पष्टीकरण भी दिए गए हैं, जिससे छात्र व्याकरण के नियमों को आसानी से समझ सकें और अपने संचार कौशल को बेहतर बना सकें। यह पुस्तक हिंदी भाषा के अध्ययन में एक अनिवार्य संदर्भ है।

अध्याय 1

स्वतंत्रता पुकारती

1.0 उद्देष्य

- ☐ संज्ञा और सर्वनाम के प्रयोग तथा उनके प्रकारों को समझना।
- ☐ पल्लवन (विस्तार और संवर्धन) के महत्व को जानना।
- ☐ अनेक षब्दों के लिए एक षब्द प्रयोग की समझ विकसित करना।
- ☐ भाशा को अधिक प्रभावी और सषक्त बनाने के लिए व्याकरणिक ज्ञान को बढ़ाना।
- ☐ स्वतंत्रता और उसके महत्व को साहित्यिक दृश्टिकोण से समझना।

स्वतंत्रता पुकारती दृ परिचय

स्वतंत्रता, मानव आत्मा की सहज आकांक्षा है, जो हर युग में, हर संस्कृति में अपनी अभिव्यक्ति पाती आई है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, मानव इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक अध्यायों में से एक है, जिसने न केवल भारत को औपनिवेषिक षासन से मुक्ति दिलाई, बल्कि विष्व भर में औपनिवेषिक व्यवस्था के विरुद्ध संघर्शरत राश्ट्रों के लिए एक प्रकाष स्तंभ का कार्य किया। भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक सामान्य राजनीतिक आंदोलन से कहीं अधिक था – यह एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण, सामाजिक क्रांति और आत्मनिर्भरता की यात्रा थी, जिसने भारतीय समाज के हर वर्ग और क्षेत्र को प्रभावित किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की यह यात्रा लंबी और कठिन थी, जिसमें अनेक उतार–चढ़ाव आए, अनेक नायकों ने अपना बलिदान दिया, और अनेक विचारधाराओं का समावेष हुआ। इस यात्रा में हम देखते हैं कि स्वतंत्रता की पुकार केवल राजनीतिक दासता से मुक्ति का आह्वान नहीं थी, बल्कि यह मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी स्वतंत्रता का आह्वान था। गांधीजी ने इसे 'पूर्ण स्वराज' की संज्ञा दी थी – ऐसी स्वतंत्रता जिसमें हर भारतीय अपनी पूर्ण क्षमता को प्राप्त कर सके, अपने गौरवपूर्ण अतीत से जुड़ सके, और एक न्यायपूर्ण, समतामूलक समाज का निर्माण कर सके। इस परिचय में, हम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विविध पहलुओं का अवलोकन करेंगे – इसके ऐतिहासिक विकास से लेकर इसके प्रमुख नेताओं और आंदोलनों तक, इसकी विचारधाराओं से लेकर इसके सांस्कृतिक आयामों तक। हम उन विविध तरीकों का अध्ययन करेंगे जिनके माध्यम से स्वतंत्रता की यह पुकार व्यक्त हुई – कभी षांतिपूर्ण असहयोग के रूप में, कभी सषस्त्र क्रांति के रूप में, कभी सामाजिक सुधार के रूप में, और कभी साहित्य, कला और संगीत के माध्यम से। यह अध्ययन हमें न केवल अपने इतिहास को समझने में मदद करेगा, बल्कि वर्तमान चुनौतियों का सामना करने और भविश्य के लिए दृश्टि विकसित करने में भी सहायक होगा।

भारत का स्वतंत्रता संग्राम 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से षुरू होकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक की एक लंबी यात्रा है। इस यात्रा में कई महत्वपूर्ण पड़ाव आए, जिन्होंने आंदोलन की दिषा और प्रकृति को निर्धारित किया। 1857 का विद्रोह, जिसे अंग्रेजों ने 'सिपाही विद्रोह' कहा, वास्तव में एक व्यापक जन–विद्रोह था, जिसमें विभिन्न वर्गों और समुदायों ने भाग लिया। यद्यपि यह विद्रोह असफल रहा, किंतु इसने ब्रिटिष षासन की नींव हिला दी और भारतीयों के मन में स्वतंत्रता की भावना को जगाया। 19वीं षताब्दी के उत्तरार्ध में, भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885) के साथ स्वतंत्रता संग्राम ने एक संगठित रूप धारण किया। प्रारंभ में कांग्रेस मुख्य रूप से षिक्षित मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व करती थी और इसकी मांगें सीमित थीं, जैसे सिविल सेवा में भारतीयों की भागीदारी बढ़ाना,

प्रषासनिक सुधार, आदि। लेकिन जल्द ही आंदोलन का स्वरूप बदलने लगा। तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल जैसे 'उग्रपंथी' नेताओं ने स्वराज (स्व–षासन) की मांग उठाई और जन–आंदोलन के महत्व पर बल दिया। 20वीं षताब्दी के प्रारंभ में भारतीय राश्ट्रीय आंदोलन में एक नई गतिषीलता आई। बंगाल विभाजन (1905) के विरोध में स्वदेषी और बहिश्कार आंदोलन षुरू हुए, जिन्होंने पहली बार जन–समुदाय को राजनीतिक प्रक्रिया में षामिल किया। इसी समय क्रांतिकारी आंदोलन भी तेज हुआ, जिसमें खुदीराम बोस, वीर सावरकर, भगत सिंह जैसे युवा क्रांतिकारियों ने सषस्त्र संघर्श का मार्ग अपनाया। महात्मा गांधी के भारत आगमन और राश्ट्रीय आंदोलन में उनके प्रवेष ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिषा दी। गांधीजी ने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों पर आधारित एक नई रणनीति विकसित की, जिसने आम जनता को आंदोलन से जोड़ा। असहयोग आंदोलन (1920–22), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34), और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) – इन तीन प्रमुख आंदोलनों के माध्यम से गांधीजी ने ब्रिटिष षासन की नींव को हिला दिया और स्वतंत्रता को अपरिहार्य बना दिया।

स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्वपूर्ण विषेशता इसका बहुआयामी चरित्र था। इसमें न केवल राजनीतिक मुक्ति की आकांक्षा थी, बल्कि सामाजिक सुधार, आर्थिक आत्मनिर्भरता, षैक्षिक विकास, और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भी आकांक्षा थी। गांधीजी के खादी और ग्रामोद्योग आंदोलन, रवींद्रनाथ टैगोर के षांतिनिकेतन, जामिया मिलिया इस्लामिया जैसे षैक्षिक संस्थानों की स्थापना, और सामाजिक सुधार आंदोलन – ये सभी स्वतंत्रता संग्राम के अभिन्न अंग थे। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी भी उल्लेखनीय थी। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, अरुणा आसफ अली, कमला नेहरू, सुचेता कृपलानी जैसी अनेक महिलाओं ने आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी प्रकार, दलित और आदिवासी समुदायों ने भी स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी की। डॉ. अंबेडकर के नेतृत्व में दलित आंदोलन ने न केवल सामाजिक न्याय की मांग की, बल्कि राश्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के लिए भी योगदान दिया। स्वतंत्रता संग्राम में साहित्य, कला और संगीत की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण थी। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का 'वंदे मातरम्', रवींद्रनाथ टैगोर की कविताएँ, प्रेमचंद के उपन्यास, सुभद्रा कुमारी चौहान की 'झाँसी की रानी' – इन सभी ने राश्ट्रीय चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी प्रकार, नाटक, संगीत, चित्रकला और फिल्में भी स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण माध्यम बने। द्वितीय विष्व युद्ध के बाद अंतरराश्ट्रीय परिदृष्य में आए बदलाव, ब्रिटेन की कमजोर आर्थिक स्थिति, और भारत में बढ़ते जन–आंदोलन ने अंततः ब्रिटिष सरकार को भारत छोड़ने के लिए विवष कर दिया। लेकिन इस प्रक्रिया में भारत का विभाजन भी हुआ, जो स्वतंत्रता की खुषी के साथ एक गहरा दुःख भी लेकर आया। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, लेकिन विभाजन की त्रासदी ने लाखों लोगों की जान ली और करोड़ों को विस्थापित किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही भारत के सामने अनेक चुनौतियाँ थीं – विभाजन के घावों को भरना, एक नए राश्ट्र का निर्माण करना, आर्थिक विकास को गति देना, सामाजिक न्याय सुनिष्चित करना, और अंतरराश्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित करना। नेहरू के नेतृत्व में स्वतंत्र भारत ने इन चुनौतियों का सामना किया और एक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी गणराज्य के रूप में अपनी यात्रा षुरू की। स्वतंत्रता संग्राम का यह इतिहास केवल अतीत की कहानी नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविश्य के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है। इसकी विरासत हमें याद दिलाती है कि स्वतंत्रता एक निरंतर संघर्श है, और हर पीढ़ी को इसे नए सिरे से परिभाशित करना होता है। आज के भारत में भी हम स्वतंत्रता के विभिन्न आयामों – सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता, सांस्कृतिक स्वायत्तता, और राजनीतिक अधिकारों – के लिए संघर्श जारी है। स्वतंत्रता की पुकार आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी वह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान थी।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विकसित हुए विभिन्न विचारधाराएँ और दृश्टिकोण भारतीय राजनीति और समाज पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। गांधीवादी अहिंसा और सत्याग्रह, नेहरू

का समाजवादी दृश्टिकोण, सावरकर का हिंदुत्व, अंबेडकर का सामाजिक न्याय का दर्षन, सुभाश चंद्र बोस का क्रांतिकारी राश्ट्रवाद – ये सभी विचारधाराएँ आज भी भारतीय राजनीति और सामाजिक जीवन में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। इनके बीच संवाद और कभी–कभी संघर्श भी होता है, जो भारतीय लोकतंत्र की जीवंतता का प्रमाण है। स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण पहलू था – धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिक सद्भाव का आदर्ष। गांधीजी, नेहरू, मौलाना आजाद, और अन्य अनेक नेताओं ने इस बात पर बल दिया कि भारत की एकता और अखंडता उसकी विविधता में निहित है। विभिन्न धर्मों, जातियों, भाशाओं और संस्कृतियों के बीच सामंजस्य स्थापित करना स्वतंत्र भारत के लिए एक महत्वपूर्ण लक्ष्य था। यद्यपि विभाजन ने इस आदर्ष को एक गहरा आघात पहुँचाया, फिर भी स्वतंत्र भारत ने अपने संविधान में धर्मनिरपेक्षता को एक मौलिक सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विकसित हुई आर्थिक विचारधाराओं ने भी स्वतंत्र भारत की नीतियों को प्रभावित किया। गांधीजी के ग्रामीण स्वावलंबन और स्वदेषी के विचार, नेहरू के मिश्रित अर्थव्यवस्था के सिद्धांत, और स्वामी विवेकानंद के आध्यात्मिक समाजवाद के विचार – इन सभी ने स्वतंत्र भारत की आर्थिक नीतियों को आकार दिया। भारत का पंचवर्शीय योजना मॉडल, सार्वजनिक क्षेत्र का विकास, और ग्रामीण विकास पर जोर – ये सभी स्वतंत्रता संग्राम की विरासत के ही अंग हैं। स्वतंत्रता संग्राम ने अंतरराश्ट्रीय स्तर पर भी भारत की भूमिका को प्रभावित किया। गुटनिरपेक्ष आंदोलन की अवधारणा, उपनिवेषवाद और साम्राज्यवाद का विरोध, और विष्व षांति के लिए प्रतिबद्धता – ये सभी स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यों से प्रेरित थे। नेहरू की पंचषील नीति, गुटनिरपेक्षता, और तीसरी दुनिया के देषों के साथ एकजुटता स्वतंत्रता संग्राम की विरासत का ही प्रतिफल थे। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय समाज में जो आंतरिक परिवर्तन हुए, वे भी उतने ही महत्वपूर्ण थे जितना कि राजनीतिक परिवर्तन। महिलाओं की स्थिति में सुधार, जाति व्यवस्था की कठोरताओं में परिवर्तन, षिक्षा का प्रसार, और धार्मिक सुधार – ये सभी स्वतंत्रता संग्राम के साथ–साथ चलते रहे। राजा राममोहन राय, ईष्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, सावित्रीबाई फुले, और अन्य अनेक सामाजिक सुधारकों ने न केवल सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाई, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम को भी मजबूती प्रदान की। स्वतंत्रता संग्राम की एक और महत्वपूर्ण विषेशता थी – इसका अखिल भारतीय चरित्र। यद्यपि भारत एक विविधतापूर्ण देष है, जहाँ विभिन्न भाशाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ हैं, फिर भी स्वतंत्रता संग्राम ने इन सभी को एक साझा लक्ष्य प्रदान किया। उत्तर से दक्षिण तक, पूर्व से पष्चिम तक, हर क्षेत्र के लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। इस प्रकार, स्वतंत्रता संग्राम ने राश्ट्रीय एकता को मजबूत किया और ''भारतीयता'' की भावना को विकसित किया। स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में विभिन्न नेताओं और आंदोलनों की भूमिका रही। प्रारंभिक चरण में दादाभाई नौरोजी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, फिरोजषाह मेहता जैसे उदारवादी नेताओं ने षांतिपूर्ण और संवैधानिक तरीकों से ब्रिटिष षासन में सुधार की मांग की। उन्होंने याचिकाएँ, प्रार्थनापत्र, और प्रतिनिधिमंडल भेजकर अपनी बात रखी।

इसके बाद लाल–बाल–पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, और बिपिन चंद्र पाल) के नेतष्त्व में उग्रवादी आंदोलन का उदय हुआ, जिसने स्वराज की मांग की और जन–आंदोलन पर बल दिया। तिलक के ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूँगा'' का नारा इस युग का प्रतीक बन गया। 1915 में गांधीजी के भारत लौटने के बाद स्वतंत्रता संग्राम ने एक नया मोड़ लिया। गांधीजी ने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों पर आधारित एक नई रणनीति विकसित की, जिसने आम जनता को आंदोलन से जोड़ा। चंपारण सत्याग्रह (1917), अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918), और खेड़ा सत्याग्रह (1918) से षुरू होकर, गांधीजी ने कई आंदोलन चलाए। 1920 में असहयोग आंदोलन षुरू हुआ, जिसमें लोगों ने सरकारी स्कूलों, अदालतों, और अन्य संस्थाओं का बहिश्कार किया। इस आंदोलन में सभी वर्गों और समुदायों के लोगों ने भाग लिया, और यह पहला वास्तविक जन–आंदोलन था। हालांकि, चौरी–चौरा (1922) की हिंसक घटना

के बाद गांधीजी ने इस आंदोलन को वापस ले लिया। 1930 में गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन षुरू किया, जिसकी षुरुआत प्रसिद्ध दांडी मार्च से हुई। इस आंदोलन में नमक कानून का उल्लंघन किया गया, और इसने ब्रिटिष षासन की वैधता को चुनौती दी। 1932 में गांधी–इरविन समझौते के बाद यह आंदोलन समाप्त हुआ। 1942 में, द्वितीय विष्व युद्ध के दौरान, गांधीजी ने भारत छोड़ो आंदोलन षुरू किया, जिसमें ब्रिटिष सरकार से भारत छोड़ने की मांग की गई। ''करो या मरो'' का नारा इस आंदोलन का प्रतीक बन गया। ब्रिटिष सरकार ने इस आंदोलन को दबाने के लिए कठोर कदम उठाए, लेकिन इसने ब्रिटिष षासन की नींव को हिला दिया। स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी आंदोलन की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी, भगत सिंह, चंद्रषेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, अषफाकउल्ला खान जैसे अनेक क्रांतिकारियों ने सषस्त्र संघर्श का मार्ग अपनाया। हिंदुस्तान सोषलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी, अनुषीलन समिति, और गदर पार्टी जैसे संगठनों ने क्रांतिकारी गतिविधियों को संगठित किया।

नेताजी सुभाश चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज (इंडियन नेषनल आर्मी) का गठन किया और ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' का नारा दिया। यद्यपि द्वितीय विष्व युद्ध में आई. एन.ए. सैन्य रूप से असफल रही, फिर भी इसने भारतीय सैनिकों और जनता में राश्ट्रवादी भावनाओं को जगाया। 1940 के दषक में, विषेशकर द्वितीय विष्व युद्ध के बाद, अंतरराश्ट्रीय परिदृष्य में आए बदलाव, ब्रिटेन की कमजोर आर्थिक स्थिति, और भारत में बढ़ते जन–आंदोलन ने अंततः ब्रिटिष सरकार को भारत छोड़ने के लिए विवष कर दिया। 1946 में कैबिनेट मिषन योजना के तहत भारत को स्वतंत्रता देने की प्रक्रिया षुरू हुई, लेकिन भारत के विभाजन के मुद्दे पर गतिरोध पैदा हो गया। अंततः, लॉर्ड माउंटबेटन की योजना के अनुसार, भारत और पाकिस्तान के रूप में उपमहाद्वीप का विभाजन हुआ। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, लेकिन विभाजन की त्रासदी ने लाखों लोगों की जान ली और करोड़ों को विस्थापित किया।

इकाई 01 . संज्ञा और सर्वनाम

संज्ञा भाशा का एक महत्वपूर्ण अंग है। व्याकरण में संज्ञा षब्दों का विषेश स्थान है, क्योंकि ये वाक्य के आधार होते हैं। आइए संज्ञा की परिभाशा, उदाहरण और इसके विभिन्न भेदों के बारे में विस्तार से जानें।

संज्ञा की परिभाशा

संज्ञा वह षब्द है जो किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव या विचार के नाम का बोध कराता है। दूसरे षब्दों में, जिन षब्दों से किसी प्राणी, निर्जीव वस्तु, स्थान, गुण, अवस्था, क्रिया आदि के नाम का बोध होता है, उन्हें संज्ञा कहते हैं।

उदाहरण के लिए:

- राम, कृश्ण, मोहन (व्यक्तियों के नाम)
- दिल्ली, मुंबई, गंगा (स्थानों के नाम)
- कुर्सी, मेज, पुस्तक (वस्तुओं के नाम)
- प्रेम, क्रोध, भय (भावों के नाम)
- सत्य, अहिंसा, न्याय (विचारों के नाम)

संज्ञा के भेद

संज्ञा के मुख्यतः पाँच भेद होते हैं:

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा षब्दों से किसी विषेश व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। ये किसी विषिश्ट व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम होते हैं।

स्वतंत्रता पुकारतीस्वतंत्रता पुकारती

उदाहरणः

- ☐ व्यक्तियों के नामः महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर, भगत सिंह
- ☐ ग्रंथों के नामः रामचरितमानस, महाभारत, गीता
- ☐ स्थानों के नामः हिमालय, भारत, एवरेस्ट
- ☐ नदियों के नामः गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र
- ☐ त्योहारों के नामः दीपावली, होली, ईद

व्यक्तिवाचक संज्ञा की विषेशताएँः

- ☐ ये हमेषा विषिश्ट होते हैं और प्रायः एक ही व्यक्ति या वस्तु को संदर्भित करते हैं
- ☐ इनका प्रथम अक्षर अक्सर बड़ा लिखा जाता है
- ☐ इनके आगे 'एक', 'कुछ' जैसे विषेशण नहीं लगाए जा सकते

2. जातिवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा षब्दों से किसी जाति या वर्ग के समस्त प्राणियों या वस्तुओं का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। ये किसी समूह या श्रेणी के सामान्य नाम होते हैं।

उदाहरणः

- ☐ लड़का, लड़की, पुरुश, स्त्री
- ☐ कुत्ता, बिल्ली, गाय, बकरी
- ☐ पेड़, फूल, फल, पौधा
- ☐ नदी, पहाड़, मैदान, समुद्र
- ☐ कुर्सी, मेज, पलंग, अलमारी

जातिवाचक संज्ञा की विषेशताएँः

- ☐ ये किसी वर्ग या जाति के सभी सदस्यों को एक साथ दर्षाते हैं
- ☐ इनका प्रयोग अनेक व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए किया जा सकता है
- ☐ इनके आगे 'एक', 'कुछ', 'अनेक' आदि षब्द लगाए जा सकते हैं

3. भाववाचक संज्ञा

जिन संज्ञा षब्दों से किसी गुण, धर्म, दषा, अवस्था, भाव या विचार का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। ये अमूर्त संकल्पनाओं का बोध कराते हैं।

उदाहरणः

- गुणः मिठास, खटास, सुंदरता, बुद्धिमानी, चतुराई
- भावः प्रेम, घष्णा, क्रोध, ईर्श्या, दया
- अवस्थाः बुढ़ापा, जवानी, बचपन, बीमारी, स्वास्थ्य
- क्रियाः पढ़ाई, लिखाई, सिलाई, बुनाई, धुलाई
- विचारः सत्य, अहिंसा, न्याय, स्वतंत्रता, समानता

भाववाचक संज्ञा की विषेशताएँः

- ये स्पर्ष, दृश्टि या अन्य इंद्रियों से अनुभव नहीं की जा सकतीं
- इनका निर्माण अक्सर अन्य षब्दों से होता है
- विषेशण सेः मीठा से मिठास, सुंदर से सुंदरता
- क्रिया सेः पढ़ना से पढ़ाई, लिखना से लिखावट
- संज्ञा सेः मनुश्य से मनुश्यता, बच्चा से बचपन

4. समूहवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा षब्दों से व्यक्तियों, वस्तुओं या प्राणियों के समूह का बोध होता है, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। ये एक इकाई के रूप में कई वस्तुओं या प्राणियों को प्रदर्षित करते हैं।

उदाहरणः

- सेना, भीड़, कक्षा, परिवार
- झुंड, गुच्छा, समूह, दल
- कमेटी, संसद, पंचायत, सभा
- वन, बगीचा, पुस्तकालय, विद्यालय
- पर्वतमाला, द्वीपसमूह, वनप्रदेष

समूहवाचक संज्ञा की विषेशताएँः

- ये एक षब्द में अनेक व्यक्तियों या वस्तुओं का बोध कराते हैं
- इनका प्रयोग एकवचन में होता है, परंतु अर्थ बहुवचन होता है
- इनके साथ क्रिया का प्रयोग अक्सर एकवचन में होता है

5. द्रव्यवाचक संज्ञा

जिन संज्ञा षब्दों से किसी पदार्थ या द्रव्य का बोध होता है, जिन्हें गिना नहीं जा सकता बल्कि नापा या तौला जा सकता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदाहरणः

- तरल पदार्थः पानी, दूध, तेल, घी
- अनाजः गेहूं, चावल, दाल, मक्का
- धातुः सोना, चांदी, लोहा, तांबा
- प्राकृतिक पदार्थः हवा, मिट्टी, बालू, कोयला
- रसायनः नमक, चीनी, सोडा, अम्ल

द्रव्यवाचक संज्ञा की विषेशताएँः

- इन्हें गिना नहीं जा सकता, केवल नापा या तौला जा सकता है
- इनका प्रयोग प्रायः एकवचन में ही होता है
- इनके साथ 'थोड़ा', 'अधिक', 'कम' जैसे षब्द प्रयुक्त होते हैं

संज्ञा के अन्य वर्गीकरण

उपरोक्त पाँच मुख्य भेदों के अतिरिक्त, संज्ञा को अन्य आधारों पर भी वर्गीकृत किया जा सकता हैः

1. स्त्रीलिंग और पुल्लिंग संज्ञा

हिंदी व्याकरण में संज्ञा षब्द या तो स्त्रीलिंग होते हैं या पुल्लिंग। इनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से होता हैः

पुल्लिंग संज्ञाः

- पुरुश जातिः लड़का, आदमी, बेटा, राजा
- नर पषु–पक्षीः घोड़ा, कुत्ता, मोर, षेर
- नदियाँः ब्रह्मपुत्र, सिंधु, यमुना
- महीने, दिनः जनवरी, सोमवार, मंगलवार
- पर्वतः हिमालय, विंध्याचल
- धातुः सोना, चांदी, लोहा
- वष्क्ष, फलः आम, सेब, नारियल

स्त्रीलिंग संज्ञाः

- स्त्री जातिः लड़की, माता, बहन, रानी
- मादा पषु–पक्षीः गाय, बिल्ली, मुर्गी
- नदियाँः गंगा, यमुना, कावेरी

- भाशाएँः हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी
- तिथियाँः एकम, दूज, तीज
- धरती, पष्थ्वी, भूमि, नगरी
- आयुः जवानी, बुढ़ापा, किषोरावस्था

2. एकवचन और बहुवचन संज्ञा

संज्ञा षब्द एकवचन या बहुवचन में हो सकते हैं, जो संख्या का बोध कराते हैंः

एकवचन संज्ञाः एक व्यक्ति, वस्तु या भाव का बोध कराने वाली संज्ञा

- लड़का, पुस्तक, गाय, कलम, आम

बहुवचन संज्ञाः एक से अधिक व्यक्ति, वस्तु या भाव का बोध कराने वाली संज्ञा

- लड़के, पुस्तकें, गायें, कलमें, आम

3. देषज, विदेषी और तत्सम–तद्भव संज्ञा

संज्ञा षब्दों को उनके उद्गम के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता हैः

तत्सम षब्दः वे संस्कृत षब्द जो हिंदी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं

- अग्नि, पुस्तक, नेत्र, हस्त, अष्व, सूर्य

तद्भव षब्दः वे संस्कृत षब्द जो हिंदी में परिवर्तित रूप में प्रयुक्त होते हैं

- आग (अग्नि से), आँख (अक्षि से), हाथ (हस्त से), घोड़ा (अष्व से)

देषज षब्दः वे षब्द जो स्थानीय भाशाओं से आए हैं

- खटखट, पटाखा, छपाक, झपट्टा

विदेषी षब्दः वे षब्द जो अन्य भाशाओं से हिंदी में आए हैं

- अंग्रेजी सेः टेबल, कुर्सी, स्कूल, डॉक्टर
- फारसी–अरबी सेः किताब, कलम, बाजार, दुकान
- पुर्तगाली सेः अनानास, अलमारी, चाबी
- तुर्की सेः बेगम, चाकू, कैंची, तोप

संज्ञा षब्द का वाक्य में प्रयोग

संज्ञा षब्दों का वाक्य में विभिन्न स्थानों पर प्रयोग किया जा सकता हैः

1. कर्ता के रूप में

- राम ने खाना खाया।
- लड़कियाँ गा रही हैं।

☐ मैं दिल्ली जा रहा हूँ।

2. कर्म के रूप में

☐ सीता फल खाती है।

☐ मोहन ने पुस्तक खरीदी।

☐ षिक्षक छात्रों को पढ़ाते हैं।

3. संबंध कारक में

☐ यह रमेष की पुस्तक है।

☐ ये कपड़े मोहन के हैं।

☐ गुरु का आषीर्वाद महत्वपूर्ण है।

4. संबोधन के रूप में

☐ हे भगवान! हमारी रक्षा करो।

☐ मित्रों! देष के लिए आगे बढ़ो।

☐ बच्चों! षांति से बैठो।

संज्ञा प्रयोग सम्बन्धी विषेश नियम

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा का विषेशण न बनानाः व्यक्तिवाचक संज्ञा का विषेशण नहीं बनाया जाता। जैसे ''रामीय'', ''गांधीय'' जैसे प्रयोग अषुद्ध माने जाते हैं।

2. भाववाचक संज्ञा का बहुवचन न होनाः भाववाचक संज्ञा का प्रायः बहुवचन नहीं होता। जैसे ''प्रेम'' का ''प्रेमें'' नहीं होता।

3. द्रव्यवाचक संज्ञा का प्रयोगः द्रव्यवाचक संज्ञा का प्रयोग प्रायः एकवचन में ही होता है। जैसे ''पानियों'' की जगह ''पानी'' का प्रयोग उचित है।

4. समूहवाचक संज्ञा के साथ क्रियाः समूहवाचक संज्ञा के साथ क्रिया का प्रयोग एकवचन में होता है। जैसे ''सेना युद्ध कर रही है'' (न कि ''सेना युद्ध कर रहे हैं'')।

संज्ञा और सर्वनाम में अंतर

संज्ञा और सर्वनाम दोनों ही नाम का बोध कराते हैं, लेकिन इनमें कुछ मूलभूत अंतर हैंः

1. प्रयोग का उद्देष्यः

☐ संज्ञाः किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि का नाम बताती है।

☐ सर्वनामः संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है, जिससे एक ही संज्ञा की पुनरावषत्ति न हो।

2. स्वतंत्रताः

☐ संज्ञाः स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होती है।

- सर्वनामः संज्ञा पर निर्भर होता है।

3. स्पश्टताः

- संज्ञाः स्पश्ट रूप से किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम बताती है।
- सर्वनामः अस्पश्ट रूप से संकेत करता है।

उदाहरणः

- राम विद्यालय जाता है। वह पढ़ाई करता है। (यहाँ ''राम'' संज्ञा है और ''वह'' सर्वनाम)

संज्ञा और विषेशण में अंतर

संज्ञा और विषेशण में भी महत्वपूर्ण अंतर हैंः

1. कार्यः

- संज्ञाः नाम का बोध कराती है।
- विषेशणः संज्ञा की विषेशता बताता है।

2. निर्भरताः

- संज्ञाः स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होती है।
- विषेशणः संज्ञा पर निर्भर होता है।

3. स्थानः

- संज्ञाः वाक्य में कर्ता, कर्म आदि के रूप में प्रयुक्त होती है।
- विषेशणः संज्ञा के साथ प्रयुक्त होता है।

उदाहरणः

- सुंदर लड़का खेल रहा है। (यहाँ ''लड़का'' संज्ञा है और ''सुंदर'' विषेशण)

संज्ञा और क्रिया में अंतर

संज्ञा और क्रिया के बीच अंतरः

1. कार्यः

- संज्ञाः नाम का बोध कराती है।
- क्रियाः कार्य का बोध कराती है।

2. कालः

- संज्ञाः काल से प्रभावित नहीं होती।
- क्रियाः काल के अनुसार परिवर्तित होती है।

3. वचन और पुरुशः

- संज्ञाः वचन के अनुसार बदलती है, पुरुश से प्रभावित नहीं होती।
- क्रियाः कर्ता के वचन और पुरुश के अनुसार बदलती है।

उदाहरणः

स्वतंत्रता पुकारती

- राम खाना खाता है। (यहाँ ''राम'' और ''खाना'' संज्ञा हैं, ''खाता है'' क्रिया है)

संज्ञा के रूपांतरण

संज्ञा का रूपांतरण विभिन्न प्रकार से हो सकता हैः

1. संज्ञा से विषेशण

- सुंदरता (संज्ञा) ष! सुंदर (विषेशण)
- मिठास (संज्ञा) ष! मीठा (विषेशण)
- बचपन (संज्ञा) ष! बचपना (विषेशण)

2. संज्ञा से क्रिया

- प्रेम (संज्ञा) ष! प्रेम करना (क्रिया)
- काम (संज्ञा) ष! काम करना (क्रिया)
- नाच (संज्ञा) ष! नाचना (क्रिया)

3. विषेशण से संज्ञा

- सुंदर (विषेशण) ष! सुंदरता (संज्ञा)
- मीठा (विषेशण) ष! मिठास (संज्ञा)
- बड़ा (विषेशण) ष! बड़प्पन (संज्ञा)

4. क्रिया से संज्ञा

- पढ़ना (क्रिया) ष! पढ़ाई (संज्ञा)
- लिखना (क्रिया) ष! लिखावट (संज्ञा)
- खेलना (क्रिया) ष! खेल (संज्ञा)

संज्ञा के प्रत्यय

हिंदी में विभिन्न प्रत्ययों के द्वारा संज्ञा का निर्माण होता हैः

1. भाववाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय

- ताः सुंदर. ता = सुंदरता, मधुर. ता = मधुरता
- त्वः मनुश्य. त्व = मनुश्यत्व, देव. त्व = देवत्व
- आईः बड़. आई = बड़ाई, चतुर. आई = चतुराई

- आहटः घबर. आहट = घबराहट, चिल्ल. आहट = चिल्लाहट
- आवटः लिख. आवट = लिखावट, बन. आवट = बनावट
- आसः मिठ. आस = मिठास, खट. आस = खटास
- आपाः बड़. आपा = बड़प्पन, लड़क. आपा = लड़कपन

2. कर्ता या कर्म वाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय

- आईः पढ़. आई = पढ़ाई, सिल. आई = सिलाई
- अक्कड़ः भय. अक्कड़ = भयंकर, दय. अक्कड़ = दयालु
- आराः लुट. आरा = लुटेरा, चम. आरा = चमार
- वालाः नाच. वाला = नाचवाला, गा. वाला = गानेवाला
- हाराः खेल. हारा = खिलाड़ी, पूज. हारा = पुजारी
- ईः माल. ई = माली, तेल. ई = तेली

संज्ञा का महत्व

संज्ञा भाशा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। इसके बिना वाक्य का निर्माण असंभव है। संज्ञा के महत्व को निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता हैः

1. वाक्य का आधारः संज्ञा वाक्य का मूल आधार होती है। बिना संज्ञा के वाक्य की रचना नहीं हो सकती।

2. अभिव्यक्ति का माध्यमः संज्ञा हमारे विचारों, भावों और अनुभवों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है।

3. संवाद का आधारः संज्ञा के माध्यम से ही हम अपने आसपास की वस्तुओं, प्राणियों और स्थानों का उल्लेख कर पाते हैं।

4. षब्द भंडार का विस्तारः संज्ञा हमारे षब्द भंडार का महत्वपूर्ण हिस्सा है और भाशा के विकास में इसका योगदान अत्यधिक है।

5. अन्य षब्द रूपों का आधारः संज्ञा से विषेशण, क्रिया और अन्य षब्द रूपों का निर्माण होता है।

व्यावहारिक अभ्यास

संज्ञा की पहचान और भेदों के वर्गीकरण का अभ्यास करने के लिए निम्न वाक्यों का विष्लेशण करेंः

1. गांधीजी भारत के महान नेता थे।

- गांधीजी – व्यक्तिवाचक संज्ञा
- भारत – व्यक्तिवाचक संज्ञा
- नेता – जातिवाचक संज्ञा

2. हिमालय से गंगा निकलती है।

☐ हिमालय – व्यक्तिवाचक संज्ञा

☐ गंगा – व्यक्तिवाचक संज्ञा

3. सेना देष की रक्षा करती है।

☐ सेना – समूहवाचक संज्ञा

☐ देष – जातिवाचक संज्ञा

☐ रक्षा – भाववाचक संज्ञा

4. मैं पानी पीता हूँ।

☐ मैं – सर्वनाम (संज्ञा नहीं)

☐ पानी – द्रव्यवाचक संज्ञा

5. विद्यार्थियों का समूह षिक्षक से प्रष्न पूछ रहा है।

☐ विद्यार्थियों – जातिवाचक संज्ञा

☐ समूह – समूहवाचक संज्ञा

☐ षिक्षक – जातिवाचक संज्ञा

☐ प्रष्न – जातिवाचक संज्ञा

परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रष्न

संज्ञा से संबंधित परीक्षा में अक्सर निम्न प्रकार के प्रष्न पूछे जाते हैं:

1. संज्ञा की परिभाशा लिखिए और उदाहरण दीजिए।
2. संज्ञा के प्रमुख भेद कौन–कौन से हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
3. निम्नलिखित वाक्यों में संज्ञा षब्दों को पहचानकर उनके भेद लिखिए।
4. भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।
5. निम्नलिखित षब्दों से भाववाचक संज्ञ

सर्वनाम

सर्वनाम वह षब्द है जिसका प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है। हिंदी व्याकरण में सर्वनाम का विषेश महत्व है क्योंकि यह भाशा को सरल और प्रवाहपूर्ण बनाता है। जब हम बार–बार एक ही संज्ञा का प्रयोग करने से बचना चाहते हैं, तब सर्वनाम का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, ''राम विद्यालय जाता है। राम पढ़ाई करता है।'' इस वाक्य में 'राम' षब्द की पुनरावृत्ति हो रही है। इसे हम सर्वनाम का प्रयोग करके इस प्रकार लिख सकते हैं: ''राम विद्यालय जाता है। वह पढ़ाई करता है।'' यहां 'वह' एक सर्वनाम है जो 'राम' के स्थान पर प्रयोग किया गया है।

सर्वनाम का षाब्दिक अर्थ है – 'सर्व' अर्थात 'सब' और 'नाम' अर्थात 'नाम'। अतः सर्वनाम वह षब्द है जो सभी नामों के स्थान पर प्रयुक्त होता है। सामान्यतः, हिंदी में सर्वनाम षब्द निम्नलिखित होते हैंः मैं, हम, तू, तुम, आप, यह, वह, ये, वे, कौन, क्या, जो, सो, कोई, कुछ आदि।

सर्वनाम के प्रयोग से भाशा में निम्नलिखित लाभ होते हैंः

1. भाशा में एकरूपता बनी रहती है।
2. एक ही षब्द की पुनरावृत्ति से बचा जा सकता है।
3. भाशा अधिक प्रवाहपूर्ण और सरल हो जाती है।
4. अर्थ को स्पश्ट करने में सहायता मिलती है।

हिंदी व्याकरण में सर्वनाम को मुख्यतः आठ भेदों में विभाजित किया गया है। ये भेद निम्नलिखित हैंः

1. पुरुशवाचक सर्वनाम

पुरुशवाचक सर्वनाम वे सर्वनाम हैं जो वक्ता, श्रोता और जिसके बारे में बात की जा रही है, उनका बोध कराते हैं। इन्हें तीन उप–भेदों में बांटा गया हैः

उत्तम पुरुश

वक्ता स्वयं के लिए जिन षब्दों का प्रयोग करता है, वे उत्तम पुरुशवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। उदाहरणः मैं, हम, मेरा, हमारा, मुझे, हमें

वाक्य प्रयोगः

- मैं कल दिल्ली जाऊंगा।
- हम सब मिलकर यह कार्य पूरा करेंगे।
- मेरा घर यहां से दूर है।

मध्यम पुरुश

जिन षब्दों का प्रयोग सुनने वाले (श्रोता) के लिए किया जाता है, वे मध्यम पुरुशवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। उदाहरणः तू, तुम, आप, तेरा, तुम्हारा, आपका

वाक्य प्रयोगः

- तुम कहां जा रहे हो?
- आप कब आए थे?
- तुम्हारी किताब मेज पर रखी है।

अन्य पुरुश

जिन षब्दों का प्रयोग वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों या वस्तुओं के लिए किया जाता है, वे अन्य पुरुशवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। उदाहरणः यह, वह, ये, वे, इसका, उसका, इनका, उनका

वाक्य प्रयोगः

- वह कल आएगा।
- ये मेरे मित्र हैं।
- उसने मुझे फोन किया था।

2. निजवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनामों से किसी वस्तु या व्यक्ति का स्वयं का बोध होता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। ये सर्वनाम किसी कार्य के कर्ता पर बल देते हैं। उदाहरणः स्वयं, आप, खुद, अपने आप

वाक्य प्रयोगः

- राम ने स्वयं यह कार्य किया।
- मैं खुद वहां गया था।
- वह अपने आप घर आ गई।

3. निष्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनामों से किसी निष्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उन्हें निष्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदाहरणः यह, वह, ये, वे

वाक्य प्रयोगः

- यह मेरा घर है।
- वह लड़का बहुत होषियार है।
- ये पुस्तकें बहुत अच्छी हैं।

4. अनिष्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनामों से किसी अनिष्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उन्हें अनिष्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदाहरणः कोई, कुछ, कोई न कोई, कुछ न कुछ

वाक्य प्रयोगः

- कोई आया था।
- कुछ लोग बाहर खड़े हैं।
- कोई न कोई तो आएगा ही।

5. प्रष्नवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनामों का प्रयोग प्रष्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रष्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदाहरणः कौन, क्या, किसे, किसका, कितना

वाक्य प्रयोगः

- कौन आया है?
- क्या हुआ?
- किसका घर है यह?
- कितने लोग आए थे?

6. संबंधवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनामों से दो वाक्यों या वाक्यांषों के बीच संबंध स्थापित होता है, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदाहरणः जो, जिसने, जिसको, जिसका

वाक्य प्रयोगः

- जो मेहनत करता है, वह सफल होता है।
- जिसने परिश्रम किया, उसे सफलता मिली।
- जिसका काम, उसी को साजे।

7. सार्वनामिक विषेशण

ऐसे षब्द जो सर्वनाम और विषेशण दोनों का कार्य करते हैं, उन्हें सार्वनामिक विषेशण कहते हैं। उदाहरणः कौन–सा, कितना, इतना, उतना, जितना

वाक्य प्रयोगः

- कौन–सी किताब तुम्हारी है?
- इतना बड़ा महल मैंने पहले कभी नहीं देखा।
- जितना काम तुमने किया, उतना ही मिलेगा।

8. अनिष्चितवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनामों से किसी अनिष्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, और साथ ही उनकी संख्या भी अनिष्चित होती है, उन्हें अनिष्चितवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदाहरणः सब, कोई, कुछ, थोड़ा, अधिक

वाक्य प्रयोगः

- सब घर चले गए।
- कुछ लोग अभी भी इंतजार कर रहे हैं।
- थोड़ा समय और दीजिए।

हिंदी भाशा में सर्वनामों का प्रयोग बहुत व्यापक है। सर्वनामों के उचित प्रयोग से भाशा सुंदर, सरल और प्रभावषाली बनती है। हिंदी व्याकरण में सर्वनामों के प्रयोग से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण नियम निम्नलिखित हैंः

1. सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, इसलिए पहले संज्ञा का प्रयोग करें, फिर उसके स्थान पर सर्वनाम का।

2. एक ही वाक्य में एक ही संज्ञा के लिए एक ही सर्वनाम का प्रयोग करें।

3. आदरसूचक सर्वनाम (आप, वे) का प्रयोग करते समय क्रिया भी उसी के अनुसार होनी चाहिए।

4. सर्वनाम का प्रयोग करते समय लिंग, वचन और कारक का विषेश ध्यान रखें।

सर्वनाम में लिंग, वचन और कारक

सर्वनाम में भी संज्ञा की तरह लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तन होता है। कुछ सर्वनाम ऐसे होते हैं जिनमें लिंग के अनुसार परिवर्तन नहीं होता, जैसे – मैं, हम, तू, तुम आदि। लेकिन कुछ सर्वनामों में लिंग के अनुसार परिवर्तन होता है, जैसे – वह (पुल्लिंग), वह (स्त्रीलिंग)।

इसी प्रकार वचन के अनुसार भी सर्वनामों में परिवर्तन होता है, जैसे – मैं (एकवचन), हम (बहुवचन), वह (एकवचन), वे (बहुवचन)।

कारक के अनुसार भी सर्वनामों में परिवर्तन होता है, जैसेः

- ☐ कर्ता कारकः मैं, तू, वह, यह
- ☐ कर्म कारकः मुझे, तुझे, उसे, इसे
- ☐ करण कारकः मुझसे, तुझसे, उससे, इससे
- ☐ संप्रदान कारकः मुझको, तुझको, उसको, इसको
- ☐ अपादान कारकः मुझसे, तुझसे, उससे, इससे
- ☐ संबंध कारकः मेरा, तेरा, उसका, इसका
- ☐ अधिकरण कारकः मुझमें, तुझमें, उसमें, इसमें
- ☐ संबोधन कारकः हे मैं, हे तू

उदाहरण वाक्य

आइए अब हम विभिन्न प्रकार के सर्वनामों का प्रयोग करके कुछ वाक्य बनाएँः

1. पुरुशवाचक सर्वनामः

- ☐ मैं आज बाजार जाऊंगा।
- ☐ हम सब मिलकर यह कार्य पूरा करेंगे।
- ☐ तुम कहां जा रहे हो?
- ☐ आप कब आए थे?
- ☐ वह कल आएगा।
- ☐ वे सब खेल रहे हैं।

2. निजवाचक सर्वनामः

- ☐ राम ने स्वयं यह कार्य किया।
- ☐ मैं खुद वहां गया था।
- ☐ वह अपने आप घर आ गई।

3. निष्चयवाचक सर्वनामः

- ☐ यह मेरा घर है।
- ☐ वह लड़का बहुत होषियार है।
- ☐ ये पुस्तकें बहुत अच्छी हैं।

4. अनिष्चयवाचक सर्वनामः

- ☐ कोई आया था।
- ☐ कुछ लोग बाहर खड़े हैं।
- ☐ कोई न कोई तो आएगा ही।

5. प्रष्नवाचक सर्वनामः

- ☐ कौन आया है?
- ☐ क्या हुआ?
- ☐ किसका घर है यह?
- ☐ कितने लोग आए थे?

6. संबंधवाचक सर्वनामः

- ☐ जो मेहनत करता है, वह सफल होता है।
- ☐ जिसने परिश्रम किया, उसे सफलता मिली।
- ☐ जिसका काम, उसी को साजे।

7. सार्वनामिक विषेशणः

- ☐ कौन–सी किताब तुम्हारी है?
- ☐ इतना बड़ा महल मैंने पहले कभी नहीं देखा।
- ☐ जितना काम तुमने किया, उतना ही मिलेगा।

8. अनिष्चितवाचक सर्वनामः

- ☐ सब घर चले गए।
- ☐ कुछ लोग अभी भी इंतजार कर रहे हैं।
- ☐ थोड़ा समय और दीजिए।

सर्वनाम के प्रयोग में सावधानियां

सर्वनाम का प्रयोग करते समय कुछ बातों का विषेश ध्यान रखना चाहिएः

1. सर्वनाम का प्रयोग स्पश्ट होना चाहिए। यदि एक वाक्य में कई संज्ञाएं हों, तो यह स्पश्ट होना चाहिए कि सर्वनाम किस संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है।

2. आदरसूचक सर्वनाम (आप, वे) का प्रयोग करते समय क्रिया भी उसी के अनुसार होनी चाहिए। उदाहरणः आप कहां जा रहे हैं? (सही) आप कहां जा रहा है? (गलत)

3. पुरुशवाचक सर्वनाम के प्रयोग में लिंग, वचन और कारक का विषेश ध्यान रखना चाहिए। उदाहरणः वह (पुल्लिंग, एकवचन) जा रहा है। वह (स्त्रीलिंग, एकवचन) जा रही है। वे (पुल्लिंगध्स्त्रीलिंग, बहुवचन) जा रहेध्रही हैं।

4. संबंधवाचक सर्वनाम का प्रयोग करते समय वाक्य में 'जो–वह', 'जिसने–उसने', 'जिसको–उसको' आदि का प्रयोग सही ढंग से करना चाहिए।

5. प्रष्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग करते समय वाक्य के अंत में प्रष्नवाचक चिह्न (?) का प्रयोग अवष्य करें।

सर्वनाम के विषेश प्रयोग

1. आदरसूचक प्रयोगः हिंदी में 'आप' और 'वे' सर्वनाम का प्रयोग आदर सूचित करने के लिए किया जाता है। उदाहरणः आप कहां जा रहे हैं? वे अभी विदेष गए हुए हैं।

2. बहुवचन का प्रयोगः कभी–कभी एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग भी किया जाता है, विषेशकर आदर दिखाने के लिए। उदाहरणः हम चलते हैं। (यहां 'हम' का प्रयोग 'मैं' के स्थान पर किया गया है)

3. निजवाचक सर्वनाम का प्रयोगः निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग विषेश बल देने के लिए किया जाता है। उदाहरणः मैं स्वयं वहां गया था। राम ने खुद यह कार्य किया।

4. ऐतिहासिक और साहित्यिक प्रयोगः प्राचीन हिंदी साहित्य में सर्वनामों के कुछ विषेश रूप मिलते हैं, जैसे – मोहि (मुझे), तोहि (तुझे), जेहि (जिसे) आदि।

सर्वनाम और अन्य षब्द भेद

सर्वनाम का संबंध अन्य षब्द भेदों से भी होता हैः

1. सर्वनाम और संज्ञाः सर्वनाम संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होता है। उदाहरणः राम विद्यालय जाता है। वह पढ़ाई करता है।

2. सर्वनाम और विषेशणः कुछ सर्वनाम विषेशण का कार्य भी करते हैं, इन्हें सार्वनामिक विषेशण कहते हैं। उदाहरणः कौन–सी किताब तुम्हारी है? जितना काम तुमने किया, उतना ही मिलेगा।

3. सर्वनाम और क्रियाः सर्वनाम के अनुसार क्रिया का रूप बदलता है। उदाहरणः मैं जाता हूं। तुम जाते हो। वह जाता है।

आधुनिक हिंदी में सर्वनाम

आधुनिक हिंदी में सर्वनामों का प्रयोग लगभग वैसे ही होता है जैसा पारंपरिक हिंदी में होता था। हालांकि, कुछ परिवर्तन देखने को मिलते हैं:

1. 'आप' सर्वनाम का प्रयोग अब अधिक व्यापक हो गया है और इसका प्रयोग अनौपचारिक संदर्भों में भी किया जाता है।

2. इंटरनेट और सोषल मीडिया के युग में 'तू' और 'तुम' जैसे सर्वनामों का प्रयोग भी बढ़ गया है, जो पहले केवल अनौपचारिक या निकट संबंधों में ही प्रयोग किए जाते थे।

3. आजकल विदेषी भाशाओं के प्रभाव से कुछ नए सर्वनामों का भी प्रयोग होने लगा है।

सर्वनाम से संबंधित अभ्यास

अब हम कुछ अभ्यास प्रष्न देखेंगे जिनसे आपको सर्वनाम की बेहतर समझ विकसित करने में मदद मिलेगी:

1. निम्नलिखित वाक्यों में प्रयुक्त सर्वनामों को पहचानिए और उनके भेद बताइए:

☐ मैं कल दिल्ली जाऊंगा।

☐ तुम कहां जा रहे हो?

☐ वह मेरा मित्र है।

☐ जो मेहनत करता है, वह सफल होता है।

☐ कौन आया था?

☐ कुछ लोग बाहर खड़े हैं।

☐ स्वयं राम ने यह कार्य किया।

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित सर्वनाम से कीजिए:

☐ ऋऋऋऋऋ कहां जा रहे हो? (प्रष्नवाचक सर्वनाम)

☐ ऋऋऋऋऋ मेहनत करता है, वह सफल होता है। (संबंधवाचक सर्वनाम)

☐ ऋऋऋऋऋ लोग बाहर खड़े हैं। (अनिष्चयवाचक सर्वनाम)

☐ राम ने ऋऋऋऋऋ यह कार्य किया। (निजवाचक सर्वनाम)

☐ ऋऋऋऋऋ मेरा मित्र है। (निष्चयवाचक सर्वनाम)

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित षब्दों के स्थान पर उचित सर्वनाम का प्रयोग करके वाक्य पुनः लिखिए:

☐ राम विद्यालय जाता है। राम पढ़ाई करता है।

☐ मोहन और सोहन मित्र हैं। मोहन और सोहन एक साथ खेलते हैं।

☐ सीता बाजार गई। सीता ने फल खरीदे।

☐ अध्यापक ने छात्रों को पढ़ाया। अध्यापक चले गए।

☐ लड़कियां नाच रही हैं। लड़कियां गा भी रही हैं।

उत्तरः

1. सर्वनामों की पहचान और भेदः

☐ मैं – पुरुशवाचक सर्वनाम (उत्तम पुरुश)

☐ तुम – पुरुशवाचक सर्वनाम (मध्यम पुरुश)

☐ वह – पुरुशवाचक सर्वनाम (अन्य पुरुश)

☐ जो, वह – संबंधवाचक सर्वनाम

☐ कौन – प्रष्नवाचक सर्वनाम

☐ कुछ – अनिष्चयवाचक सर्वनाम

☐ स्वयं – निजवाचक सर्वनाम

2. रिक्त स्थानों की पूर्तिः

☐ कहां तुम जा रहे हो? (प्रष्नवाचक सर्वनाम)

☐ जो मेहनत करता है, वह सफल होता है। (संबंधवाचक सर्वनाम)

☐ कुछ लोग बाहर खड़े हैं। (अनिष्चयवाचक सर्वनाम)

☐ राम ने स्वयं यह कार्य किया। (निजवाचक सर्वनाम)

☐ वह मेरा मित्र है। (निष्चयवाचक सर्वनाम)

3. वाक्य परिवर्तनः

☐ राम विद्यालय जाता है। वह पढ़ाई करता है।

☐ मोहन और सोहन मित्र हैं। वे एक साथ खेलते हैं।

☐ सीता बाजार गई। उसने फल खरीदे।

☐ अध्यापक ने छात्रों को पढ़ाया। वे चले गए।

☐ लड़कियां नाच रही हैं। वे गा भी रही हैं।

सर्वनाम का महत्व

सर्वनाम भाशा के अत्यंत महत्वपूर्ण अंग हैं। इनके बिना भाशा का प्रवाह असंभव है। सर्वनाम के महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता हैः

1. संज्ञा की पुनरावषत्ति से बचावः सर्वनाम के प्रयोग से एक ही संज्ञा की बार–बार पुनरावषत्ति से बचा जा सकता है, जिससे भाशा अधिक सुंदर और प्रवाहपूर्ण बनती है।

2. भाशा को संक्षिप्त बनानाः सर्वनाम के प्रयोग से भाशा संक्षिप्त और प्रभावषाली बनती है। लंबे–लंबे नामों के स्थान पर छोटे सर्वनामों का प्रयोग किया जा सकता है।

3. वाक्यों के बीच संबंध स्थापित करनाः संबंधवाचक सर्वनाम के प्रयोग से दो वाक्यों या वाक्यांषों के बीच संबंध स्थापित किया जा सकता है।

4. आदर और सम्मान प्रदर्षित करनाः आदरसूचक सर्वनामों (आप, वे) के प्रयोग से आदर और सम्मान प्रदर्षित किया जा सकता है।

इकाई 02 पल्लवन वस्तार और समर्थन

पल्लवन षब्द का अर्थ विस्तार या विकास है। भाशा और साहित्य के संदर्भ में, पल्लवन का अर्थ है किसी विचार, भाव, सूक्ति या छोटे वाक्य को विस्तृत रूप देना। यह एक ऐसी कला है जिसमें मूल विचार या बीज वाक्य को नए–नए आयामों से समृद्ध किया जाता है, उसकी व्याख्या की जाती है, और उसे अधिक स्पश्ट, प्रभावषाली तथा हृदयग्राही बनाया जाता है। पल्लवन में मूल भाव या विचार को नए–नए उदाहरणों, प्रसंगों, कथाओं, रूपकों और अलंकारों के माध्यम से विस्तार दिया जाता है। यह भाशिक अभिव्यक्ति की एक महत्वपूर्ण विधा है जो न केवल साहित्य में बल्कि दैनिक जीवन में भी अत्यंत उपयोगी है।

भाशा में पल्लवन की भूमिका

भाशा मानव अभिव्यक्ति का सबसे सषक्त माध्यम है, और पल्लवन इस अभिव्यक्ति को और अधिक सषक्त, प्रभावषाली और समष्द्ध बनाता है। भाशा में पल्लवन की भूमिका अनेक आयामों में देखी जा सकती है। सबसे पहले, पल्लवन के माध्यम से किसी विशय या भाव को अधिक स्पश्ट और सरल रूप में समझाया जा सकता है। जब हम किसी जटिल विचार को विस्तार देते हैं, तब उसके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाष डालते हैं, जिससे श्रोता या पाठक उस विचार को बेहतर ढंग से समझ सकता है। दूसरा, पल्लवन भाशा को अधिक सौंदर्यपूर्ण और आकर्शक बनाता है। जब किसी विचार को विभिन्न अलंकारों, बिंबों, प्रतीकों और उपमाओं के माध्यम से विस्तारित किया जाता है, तब भाशा में एक नया सौंदर्य और चमत्कार उत्पन्न होता है। यही कारण है कि महान कवि और लेखक अपनी रचनाओं में पल्लवन का प्रभावषाली उपयोग करते हैं। तीसरा, पल्लवन के माध्यम से भाशा में विचारों की गहराई और विविधता का समावेष होता है। एक छोटे से विचार या सूक्ति को जब विस्तारित किया जाता है, तब उससे जुड़े अनेक नए विचार और दृश्टिकोण सामने आते हैं। इस प्रकार, पल्लवन भाशा के माध्यम से विचारों के विकास और विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चौथा, पल्लवन संवाद और संप्रेशण को अधिक प्रभावषाली बनाता है। वक्ता या लेखक जब अपने विचारों को पल्लवित करता है, तब वह अपने श्रोताओं या पाठकों के साथ एक गहरा संबंध स्थापित कर पाता है। उदाहरण, कहानियां, अनुभव, तथ्य और आंकड़े आदि के माध्यम से विचारों का विस्तार करने से संवाद अधिक रोचक, ज्ञानवर्धक और प्रभावषाली बन जाता है। पांचवां, पल्लवन भाशा के षब्द भंडार और अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करता है। जब हम किसी विचार को विस्तार देते हैं, तब हमें विभिन्न षब्दों, मुहावरों, अलंकारों और भाशा षैलियों का प्रयोग करना पड़ता है। इससे हमारी भाशिक क्षमता का विकास होता है और हमारी अभिव्यक्ति अधिक समष्द्ध और विविधतापूर्ण बनती है।

छठा, पल्लवन भाशा को अधिक प्रभावषाली और आकर्शक बनाता है। जब कोई वक्ता या लेखक अपने विचारों को सटीक, सुंदर और प्रभावषाली ढंग से पल्लवित करता है, तब उसकी बात श्रोताओं या पाठकों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। यही कारण है कि महान वक्ता और लेखक पल्लवन की कला में निपुण होते हैं। सातवां, पल्लवन भाशा में रचनात्मकता और मौलिकता का समावेष करता है। जब हम किसी विचार को अपने षब्दों में विस्तारित करते हैं, तब हम अपनी रचनात्मकता, कल्पनाषीलता और मौलिक सोच का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार, पल्लवन भाशा में नवीनता और मौलिकता का संचार करता

है। आठवां, पल्लवन भाशा के माध्यम से सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब हम अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, मूल्यों और विचारों को पल्लवित करते हैं, तब उनका विस्तार और विकास होता है, और वे नई पीढ़ियों तक पहुंचते हैं। नौवां, पल्लवन भाशा के माध्यम से ज्ञान के प्रसार और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। षिक्षा के क्षेत्र में, जब षिक्षक किसी विशय या अवधारणा को छात्रों को समझाते हैं, तब वे पल्लवन का ही प्रयोग करते हैं। वे छोटे–छोटे विचारों और अवधारणाओं को विभिन्न उदाहरणों, प्रयोगों और व्याख्याओं के माध्यम से विस्तारित करके छात्रों को समझाते हैं। दसवां, पल्लवन भाशा के माध्यम से विचारों के आदान–प्रदान और संवाद को प्रोत्साहित करता है। जब हम अपने विचारों को विस्तार देते हैं, तब हम दूसरों के विचारों और दृश्टिकोणों को भी आमंत्रित करते हैं। इस प्रकार, पल्लवन विचारों के खुले और रचनात्मक आदान–प्रदान को बढ़ावा देता है। ग्यारहवां, पल्लवन भाशा में विविधता और बहुलता का समावेष करता है। भारत जैसे बहुभाशी और बहुसांस्कृतिक देष में, जहां विभिन्न भाशाएं, बोलियां और संस्कृतियां हैं, पल्लवन इस विविधता और बहुलता को अभिव्यक्त करने का एक सषक्त माध्यम है। बारहवां, पल्लवन भाशा के माध्यम से मनोरंजन और आनंद का स्रोत भी है। जब कोई कवि या कथाकार अपनी कल्पना और रचनात्मकता का प्रयोग करके किसी विचार या भाव को विस्तारित करता है, तब वह पाठकों या श्रोताओं के लिए मनोरंजन और आनंद का स्रोत बनता है।

तेरहवां, पल्लवन भाशा के माध्यम से अमूर्त विचारों और भावनाओं को मूर्त रूप देने में मदद करता है। जब हम अमूर्त विचारों, जैसे प्रेम, करुणा, स्वतंत्रता, न्याय आदि को विभिन्न उदाहरणों, कहानियों और प्रसंगों के माध्यम से विस्तारित करते हैं, तब वे अधिक मूर्त और समझने योग्य बन जाते हैं। चौदहवां, पल्लवन भाशा के माध्यम से राश्ट्रीय एकता और अंतरराश्ट्रीय सौहार्द को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब हम विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और विचारों को पल्लवित करके उनकी समानताओं और विषिश्टताओं पर प्रकाष डालते हैं, तब हम राश्ट्रीय एकता और अंतरराश्ट्रीय सौहार्द को बढ़ावा देते हैं। पंद्रहवां, पल्लवन भाशा के माध्यम से आत्म–अभिव्यक्ति और आत्म–विकास का भी एक महत्वपूर्ण साधन है। जब हम अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को पल्लवित करते हैं, तब हम स्वयं को बेहतर ढंग से समझते हैं और अपने आत्मिक और बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार, भाशा में पल्लवन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुआयामी है। यह भाशा को समष्द्ध, सषक्त, प्रभावषाली और सौंदर्यपूर्ण बनाने के साथ–साथ विचारों के विकास, संवाद, षिक्षा, मनोरंजन और आत्म–विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

साहित्य में पल्लवन के उदाहरण

साहित्य में पल्लवन का विषेश महत्व है। महान कवि, लेखक और कथाकार अपनी रचनाओं में पल्लवन का कुषलतापूर्वक प्रयोग करते हैं, जिससे उनकी रचनाएं अधिक प्रभावषाली, सौंदर्यपूर्ण और हृदयस्पर्षी बन जाती हैं। साहित्य के विभिन्न रूपों – कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि में पल्लवन के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। कविता में पल्लवन का विषेश महत्व है। कवि अपने भावों और विचारों को विभिन्न अलंकारों, बिंबों, प्रतीकों और उपमाओं के माध्यम से पल्लवित करते हैं। उदाहरण के लिए, सूरदास की पदावली में कृश्ण के बाल रूप का पल्लवन देखिएः

''मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो। ख्याल परै या मारग जात, ब्रजवासिन मोहिं बतायोम
मोहन मूरति आगे धरी, दही माखन सब डरायो। तब तेरे लरिकवा खेलत खेलत, हाथहिं दही गिरायोम ''

यहां सूरदास ने एक छोटे से विचार – कृश्ण का माखन चोरी करना और माता यषोदा से झूठ बोलना – को अत्यंत सुंदर और भावपूर्ण ढंग से पल्लवित किया है।

इसी प्रकार, तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' में राम के चरित्र को अनेक प्रसंगों, कथाओं और वर्णनों के माध्यम से पल्लवित किया है। उदाहरण के लिए, राम के वनगमन प्रसंग का पल्लवन देखिए:

''सिय समेत दोउ तनय निहारी। ब्याकुल भइं सब लोग नर नारीम विकल बिलोकि नगर बैदेही। निज कृत कुटिल कुचालि न केहीम समुझि करतब कैकइ पछिताई। परिहरि अमिय बिशु भोजनु खाईम ''

यहां तुलसीदास ने राम के वनगमन के समय अयोध्या के लोगों की व्याकुलता का अत्यंत मार्मिक पल्लवन किया है।

आधुनिक हिंदी कविता में जयषंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा आदि कवियों की रचनाओं में पल्लवन के उत्कृश्ट उदाहरण मिलते हैं। उदाहरण के लिए, महादेवी वर्मा की निम्न पंक्तियां देखिए:

''मधुर–मधुर मेरे दीपक जल! युग–युग प्रतिदिन प्रति–क्षण प्रति–पल। प्रिय–पथ में अंधियारा स्वागत, आलोक न हो इतना प्रखर प्रबल!''

यहां महादेवी वर्मा ने दीपक के माध्यम से अपने जीवन की पीड़ा और त्याग का अत्यंत भावपूर्ण पल्लवन किया है।

कहानी और उपन्यास में भी पल्लवन का विषेश महत्व है। कथाकार विभिन्न पात्रों, घटनाओं, संवादों और वर्णनों के माध्यम से अपने विचारों और भावों को पल्लवित करते हैं। उदाहरण के लिए, प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' में किसान हल्कू और उसकी पत्नी मुन्नी की गरीबी और संघर्श का अत्यंत मार्मिक पल्लवन किया गया है:

''हल्कू ने कहा – तुम भी खेतों में चली आओ। वहीं एक खरही में पड़े रहेंगे। जाड़ा भी न लगेगा और खेत की रखवाली भी होती रहेगी। मेरे तो हाथ–पांव ठिठुर जाते हैं। मुन्नी ने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसने सोचा – यहां अकेली क्या करूंगीय बैठे–बैठे जी घबरायेगा।''

यहां प्रेमचंद ने कुछ छोटे संवादों के माध्यम से किसान दंपति की गरीबी, मजबूरी और संघर्श का अत्यंत मार्मिक पल्लवन किया है।

इसी प्रकार, प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में होरी और धनिया के माध्यम से भारतीय किसानों के जीवन, संघर्श और आकांक्षाओं का विस्तष्त पल्लवन किया गया है। होरी का चरित्र एक ऐसे किसान का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपनी सारी उम्र संघर्श करता है, लेकिन अपनी गरीबी और षोशण से मुक्त नहीं हो पाता। उपन्यास के अंत में होरी की मष्त्यु और धनिया द्वारा एक गाय के दान का प्रसंग अत्यंत मार्मिक और प्रभावषाली पल्लवन का उदाहरण है।

जैनेन्द्र कुमार के उपन्यास 'त्यागपत्र' में मष्णाल के माध्यम से स्त्री स्वातंत्र्य और विद्रोह के भावों का पल्लवन किया गया है। मष्णाल अपने पति और परिवार के अत्याचारों से तंग आकर घर छोड़ देती है और अपने जीवन का नया मार्ग चुनती है। उसका त्यागपत्र स्त्री स्वातंत्र्य और विद्रोह का प्रतीक बन जाता है।

निबंध साहित्य में भी पल्लवन का विषेश महत्व है। निबंधकार विभिन्न विशयों पर अपने विचारों, अनुभवों और भावों को विस्तार देते हैं। उदाहरण के लिए, हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'कुटज' में वर्शा ऋतु का अत्यंत सुंदर और काव्यात्मक पल्लवन किया गया है:

''वर्शा ऋतु आई। चारों ओर हरियाली छा गई। जंगल में, मैदान में, नदी के किनारे, सब जगह हरियाली ही हरियाली दिखाई पड़ने लगी। चिलचिलाती धूप में जो वनस्पति सूख रही थी, उसमें नया जीवन आ गया। बरसात के दिनों में वंष की पूरी षोभा देखी जा सकती है।''

यहां द्विवेदी जी ने वर्शा ऋतु के आगमन और उसके प्रभाव का अत्यंत सुंदर और काव्यात्मक पल्लवन किया है।

इसी प्रकार, रामचंद्र षुक्ल के निबंध 'करुणा' में करुणा भाव का विस्तृत और गहन पल्लवन किया गया हैः

''करुणा हृदय का वह भाव है जिसमें दूसरे के दुःख को देखकर दुःख होता है और उसके निवारण की इच्छा होती है। इसका आरंभ दूसरे के दुःख से होता है। पर जिस प्रकार कवि का हृदय केवल यथार्थ से ही नहीं, यथार्थ के उपलक्ष से कल्पित अवस्था का भी अनुभव कर सकता है, वैसे ही कल्पित दुःख से भी करुणा आ सकती है।''

यहां षुक्ल जी ने करुणा भाव का विस्तृत और गहन पल्लवन किया है, जिससे पाठक करुणा के विभिन्न आयामों और उसकी गहराई को समझ सकता है।

नाटक और एकांकी में भी पल्लवन का विषेश महत्व है। नाटककार विभिन्न पात्रों, संवादों, दृष्यों और घटनाओं के माध्यम से अपने विचारों और भावों को पल्लवित करते हैं। उदाहरण के लिए, मोहन राकेष के नाटक 'आशाढ़ का एक दिन' में कवि कालिदास के जीवन, संघर्श और विवषताओं का अत्यंत मार्मिक पल्लवन किया गया है। कालिदास अपनी प्रेमिका मल्लिका को छोड़कर उज्जयिनी जाता है और वहां राजकवि बन जाता है। लेकिन वह अपने ग्रामीण जीवन, प्रकृति के सौंदर्य और मल्लिका के प्रेम को भूल नहीं पाता। नाटक के अंत में कालिदास और मल्लिका का मिलन अत्यंत मार्मिक और प्रभावषाली पल्लवन का उदाहरण है। इसी प्रकार, भीश्म साहनी की एकांकी 'हनुश का न्याय' में न्याय के विशय पर गहन और विचारपूर्ण पल्लवन किया गया है। एकांकी में बताया गया है कि किस प्रकार एक साधारण तीरंदाज अपनी कुषलता के बल पर राजा हनुश के दरबार में न्याय प्राप्त करता है। यह एकांकी न्याय, सत्य और साहस के महत्व पर प्रकाष डालती है। साहित्य के क्षेत्र में स्त्री विमर्ष, दलित विमर्ष, आदिवासी विमर्ष आदि विशयों पर भी अनेक रचनाएं मिलती हैं, जिनमें इन विशयों पर विस्तष्त और गहन पल्लवन किया गया है। उदाहरण के लिए, महादेवी वर्मा की रेखाचित्र संग्रह 'अतीत के चलचित्र' में विभिन्न स्त्रियों के जीवन, संघर्श और साहस का अत्यंत मार्मिक पल्लवन किया गया है। 'भाभी', 'बिंदा', 'सभिया' आदि रेखाचित्रों में महादेवी ने स्त्रियों की विवषताओं, संघर्शों और आकांक्षाओं का अत्यंत सजीव और हृदयस्पर्षी पल्लवन किया है। ओमप्रकाष वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' में दलित जीवन, उनके संघर्श, उनके प्रति समाज के व्यवहार और उनकी आकांक्षाओं का विस्तष्त और मार्मिक पल्लवन किया गया है। इसी प्रकार, संजीव की कहानी 'धार' में आदिवासियों के जीवन, उनके संघर्श और उनके प्रति समाज के व्यवहार का विस्तष्त और मार्मिक पल्लवन किया गया है। साहित्य में लोकगीतों और लोककथाओं में भी पल्लवन के सुंदर उदाहरण मिलते हैं। लोकगीतों में प्रकृति, ऋतुओं, त्योहारों, विवाह, जन्म, मष्त्यु आदि विशयों पर अत्यंत सुंदर और भावपूर्ण पल्लवन किया गया है। उदाहरण के लिए, फागुन के महीने में गाए जाने वाले होली गीतों में वसंत ऋतु, होली के त्योहार और कृशण–राधा के प्रेम का अत्यंत सुंदर और भावपूर्ण पल्लवन किया गया हैः

''फगुवा में धूम मचावल बा, पिचकारी से रंग उड़ावल बा। अबीर गुलाल उड़ावल बा, पिया मोरा रंग जमावल बाम ''

इसी प्रकार, विवाह गीतों में दुल्हन की विदाई, दूल्हे के स्वागत, दुल्हन के मायके और ससुराल के बीच के भावात्मक संबंधों का अत्यंत सुंदर और मार्मिक पल्लवन किया गया है। लोककथाओं में भी विभिन्न विशयों, जैसे प्रेम, त्याग, बलिदान, वीरता, साहस, परोपकार आदि पर अत्यंत सुंदर और प्रभावषाली पल्लवन किया गया है। उदाहरण के लिए, राजस्थान की लोककथा 'ढोला–मारू' में प्रेम, विरह और मिलन का अत्यंत सुंदर और भावपूर्ण पल्लवन किया गया है। साहित्य में धार्मिक और आध्यात्मिक विशयों पर भी अनेक रचनाएं मिलती हैं, जिनमें इन विशयों पर विस्तष्त और गहन पल्लवन किया गया है। उदाहरण के लिए, कबीर के दोहों में सत्य, अहिंसा, करुणा, सादगी, निश्कामता आदि विशयों पर अत्यंत सुंदर और प्रभावषाली पल्लवन किया गया हैः

इकाई 03 व्याकरण कि भाषा

अनेक षब्दों के लिए एक षब्द

हिंदी भाशा में ''अनेक षब्दों के लिए एक षब्द'' का अर्थ है किसी लंबे वाक्यांष या भाव को व्यक्त करने वाले अनेक षब्दों के स्थान पर एक ही सटीक षब्द का प्रयोग। यह भाशा के सौंदर्य और संक्षिप्तता को बढ़ाता है। इसे 'एकार्थी षब्द' या 'पर्यायवाची संक्षिप्त षब्द' भी कहा जाता है। ऐसे षब्द अक्सर संस्कृत, फारसी, अरबी या अन्य भाशाओं से हिंदी में आए हैं और अपनी अर्थगत विषिश्टता के कारण भाशा को समृद्ध बनाते हैं। इन षब्दों के प्रयोग से हमारी अभिव्यक्ति अधिक प्रभावषाली, संक्षिप्त और सटीक होती है। साहित्यिक रचनाओं, पत्रकारिता, षैक्षणिक लेखन और प्रषासनिक भाशा में इनका विषेश महत्व है।

प्रमुख उदाहरण

1. अतिथि – जो बिना पूर्व सूचना के आया हो
2. अनुज – जो बाद में जन्मा हो, छोटा भाई
3. अग्रज – जो पहले जन्मा हो, बड़ा भाई
4. अहंकारी – जिसे अपने पर बहुत घमंड हो
5. आजीवन – जीवन भर के लिए
6. आमंत्रित – जिसे निमंत्रण दिया गया हो
7. उपकारी – जो दूसरों का भला करता हो
8. कृतज्ञ – उपकार मानने वाला
9. कृतघ्न – उपकार न मानने वाला
10. कुषाग्रबुद्धि – तीक्ष्ण बुद्धि वाला
11. गष्हस्थ – जिसने गष्हस्थ आश्रम में प्रवेष किया हो
12. चिरंजीवी – जो बहुत दिनों तक जीवित रहे
13. जलचर – जल में रहने वाला
14. थलचर – थल पर रहने वाला
15. नभचर – आकाष में उड़ने वाला
16. तपस्वी – तप करने वाला

17. दिगंबर – जिसने दिषाओं को ही वस्त्र बना लिया हो
18. दीर्घायु – लंबी आयु वाला
19. देषभक्त – देष से प्रेम करने वाला
20. धनवान – जिसके पास बहुत धन हो
21. निरक्षर – जो लिख–पढ़ न सके
22. निराश्रित – जिसका कोई सहारा न हो
23. निर्दयी – जिसमें दया न हो
24. निर्धन – जिसके पास धन न हो
25. निर्मम – जिसमें ममता न हो
26. निर्लज्ज – जिसमें लज्जा न हो
27. निर्विकार – जिसमें कोई विकार न हो
28. निश्पाप – जिसने कोई पाप न किया हो
29. नीरोग – जिसे कोई रोग न हो
30. पंगु – जिसके पैर काम न करते हों
31. पदच्युत – जिसे पद से हटा दिया गया हो
32. परोपकारी – दूसरों का हित करने वाला
33. पाशाण–हृदय – जिसका हृदय पत्थर जैसा कठोर हो
34. पितष्सत्तात्मक – जहां पिता का प्रभुत्व हो
35. मातष्सत्तात्मक – जहां माता का प्रभुत्व हो
36. प्रवासी – जो विदेष में रहता हो
37. बधिर – जो सुन न सके
38. बहुभाशाविद् – अनेक भाशाओं का जानकार
39. बहुमूल्य – जिसका मूल्य अधिक हो
40. बहुश्रुत – जिसने बहुत सुना हो
41. मरणासन्न – जिसकी मष्त्यु निकट हो
42. मानवतावादी – मानवता में विष्वास रखने वाला
43. मूक – जो बोल न सके
44. मष्तप्राय – जो लगभग मर चुका हो

45. यषस्वी – जिसका यष फैला हो
46. युगांतकारी – युग का अंत करने वाला
47. रंक – जो बहुत गरीब हो
48. राजनीतिज्ञ – राजनीति का जानकार
49. लाचार – जिसके पास कोई चारा न हो
50. वनवासी – वन में रहने वाला
51. वैज्ञानिक – विज्ञान का जानकार
52. षाकाहारी – केवल षाक (सब्जी) खाने वाला
53. मांसाहारी – मांस खाने वाला
54. षब्दकोष – षब्दों का भंडार
55. श्रमजीवी – परिश्रम से जीने वाला
56. संगीतज्ञ – संगीत का जानकार
57. सदाचारी – अच्छे आचरण वाला
58. सप्तऋशि – सात ऋशियों का समूह
59. सर्वज्ञ – सब कुछ जानने वाला
60. सर्वषक्तिमान – जिसमें सभी षक्तियां विद्यमान हों
61. साहित्यकार – साहित्य की रचना करने वाला
62. सौतेला – सौत से उत्पन्न
63. हस्तलिखित – हाथ से लिखा हुआ
64. हिमालय – हिम का आलय (घर)
65. हिंसक – हिंसा करने वाला
66. अकाल–मष्त्यु – समय से पहले होने वाली मष्त्यु
67. अपराजित – जिसे कभी हराया न गया हो
68. आत्मनिर्भर – जो स्वयं पर निर्भर करता हो
69. उत्तराधिकारी – किसी के बाद अधिकार पाने वाला
70. कालातीत – जिसका समय बीत चुका हो
71. कीर्तिमान – जिसकी कीर्ति फैली हो
72. जन्मजात – जन्म से ही प्राप्त

73. जिज्ञासु – जानने की इच्छा रखने वाला
74. तत्क्षण – उसी क्षण
75. दूरदर्षी – दूर की सोचने वाला
76. धर्मनिरपेक्ष – जो किसी धर्म विषेश के प्रति पक्षपात न करे
77. पत्रकार – समाचारपत्र में काम करने वाला
78. पदोन्नति – उच्च पद पर नियुक्ति
79. प्रत्यक्षदर्षी – अपनी आंखों से देखने वाला
80. सहपाठी – साथ पढ़ने वाला
81. अभिभावक – रक्षा करने वाला, माता–पिता या संरक्षक
82. अग्निषामक – आग बुझाने वाला
83. आत्मविष्वास – अपने पर विष्वास
84. इतिहासकार – इतिहास लिखने वाला
85. गतानुगतिक – पुरानी परंपरा का अनुसरण करने वाला
86. चारदीवारी – घर के चारों ओर की दीवार
87. छायाचित्र – फोटोग्राफ
88. दूरभाश – टेलीफोन
89. नाटककार – नाटक लिखने वाला
90. प्राणघातक – प्राण लेने वाला
91. विष्वविद्यालय – जहां विष्व की विद्या दी जाती है
92. समकालीन – एक ही समय का
93. समानार्थक – समान अर्थ वाले षब्द
94. समीक्षक – समीक्षा करने वाला
95. सर्वसम्मत – जिस पर सभी सहमत हों
96. स्वप्नदर्षी – बड़े सपने देखने वाला
97. हस्ताक्षर – हाथ के अक्षर
98. अल्पजीवी – कम समय तक जीने वाला
99. अल्पसंख्यक – कम संख्या वाला
100. अवसरवादी – अवसर का लाभ उठाने वाला

101. आमरण – मरने तक
102. ओजस्वी – ओज से पूर्ण
103. कलाकार – कला में निपुण व्यक्ति
104. कुलीन – अच्छे कुल में जन्मा हुआ
105. गंभीर – जिसकी गहराई अधिक हो
106. चिरस्थायी – बहुत दिनों तक टिकने वाला
107. जलयान – पानी में चलने वाला यान
108. जीवननाषक – जीवन का नाष करने वाला
109. दिनचर्या – प्रतिदिन किए जाने वाले कार्य
110. दूरगामी – जो बहुत दूर तक जाता हो या जिसके परिणाम दूर तक हों
111. नवयुवक – नया युवक
112. नीतिज्ञ – नीति जानने वाला
113. प्रषंसनीय – प्रषंसा के योग्य
114. मुमुक्षु – मोक्ष की इच्छा रखने वाला
115. रात्रिचर – रात में विचरण करने वाला
116. विवेकहीन – विवेक से रहित
117. षरणागत – षरण में आया हुआ
118. श्रवणकुमार – माता–पिता की सेवा करने वाला पुत्र
119. संकलनकर्ता – संकलन करने वाला
120. साक्षात्कार – आमने–सामने होना
121. सषृष्टिकर्ता – संसार की रचना करने वाला
122. हितैशी – हित चाहने वाला
123. अंतर्राश्ट्रीय – देषों के बीच का
124. अनुभवहीन – जिसे अनुभव न हो
125. अविस्मरणीय – जिसे भुलाया न जा सके
126. आषावादी – आषा रखने वाला
127. करदाता – कर (टैक्स) देने वाला
128. क्षणभंगुर – जो क्षण भर में नश्ट हो जाए

129. ग्रंथकार – ग्रंथ (पुस्तक) लिखने वाला
130. चतुर्भुज – चार भुजाओं वाला
131. तत्पर – तैयार रहने वाला
132. त्रिभुज – तीन कोनों वाला
133. दिवंगत – जो इस संसार से चला गया हो
134. द्विअर्थी – दो अर्थ वाला
135. नाममात्र – केवल नाम के लिए
136. पराक्रमी – पराक्रम करने वाला
137. प्रत्युत्तर – उत्तर का उत्तर
138. भूतपूर्व – जो पहले था किंतु अब नहीं है
139. मधुबाला – मधु जैसी सुंदर स्त्री
140. मरणोपरांत – मरने के बाद
141. यथासंभव – जितना संभव हो
142. रणबांकुरा – युद्ध में श्रेश्ठ योद्धा
143. वार्शिक – साल में एक बार होने वाला
144. विजातीय – दूसरी जाति का
145. विद्युतचालित – बिजली से चलने वाला
146. षताब्दी – सौ वर्शों का समय
147. सांप्रदायिक – संप्रदाय से संबंधित
148. स्वदेषी – अपने देष का
149. अकल्पनीय – जिसकी कल्पना न की जा सके
150. अगम्य – जहां न पहुंचा जा सके
151. अजर–अमर – जो कभी बूढ़ा न हो और कभी मरे नहीं
152. अधिकारिक – अधिकार से युक्त
153. अनिंद्य – जिसकी निंदा न की जा सके
154. अनिवार्य – जिससे बचा न जा सके
155. अनुकरणीय – अनुकरण करने योग्य
156. अभिमानी – अभिमान करने वाला

157. अल्पकालिक – थोड़े समय के लिए
158. अश्रुपूर्ण – आंसुओं से भरा हुआ
159. अवैतनिक – बिना वेतन के
160. अहिंसक – हिंसा न करने वाला
161. आकर्शक – जो आकर्शित करे
162. आधुनिक – इस युग का
163. आबालवष्द्ध – बच्चों से लेकर बूढ़ों तक
164. आवष्यक – जिसकी आवष्यकता हो
165. उन्नतिषील – उन्नति करने वाला
166. उपयोगी – काम आने वाला
167. कामचोर – काम से जी चुराने वाला
168. कालजयी – काल को जीतने वाला
169. कुषल – निपुण
170. क्रांतिकारी – क्रांति लाने वाला
171. खगोलषास्त्री – खगोल विज्ञान का जानकार
172. गतिषील – चलायमान
173. गुणवान – गुणों से युक्त
174. गोपनीय – जिसे छिपाकर रखना चाहिए
175. चक्षुहीन – आंखों से रहित, अंधा
176. चिकित्सक – इलाज करने वाला
177. छद्मवेषी – जो छिपाकर अपना रूप बदल ले
178. जटिल – जिसे सुलझाना कठिन हो
179. जिज्ञासा – जानने की इच्छा
180. जैविक – जीवन से संबंधित
181. झंझावात – तेज आंधी
182. ज्ञानवान – ज्ञान से परिपूर्ण
183. तात्कालिक – उसी समय का
184. त्रिकालदर्षी – तीनों कालों को देखने वाला

185. दीर्घकालिक – लंबे समय तक चलने वाला
186. दूरदर्षन – टेलीविजन
187. देषद्रोही – देष से द्रोह करने वाला
188. धार्मिक – धर्म में विष्वास रखने वाला
189. नर्मदा – जो आनंद देती है
190. नवोदित – जो नया उदय हुआ हो
191. निःषुल्क – बिना कीमत के
192. निरंतर – लगातार
193. निरर्थक – जिसका कोई अर्थ न हो
194. निर्णायक – निर्णय करने वाला
195. निश्कलंक – कलंक रहित
196. पदावनत – पद से नीचे उतारा गया
197. पर्यावरण – चारों ओर का वातावरण
198. पाक्षिक – पखवाड़े में एक बार होने वाला
199. परिश्रमी – परिश्रम करने वाला
200. पाष्चात्य – पष्चिम का
201. प्रारंभिक – षुरू का
202. प्रसिद्ध – विख्यात
203. बहुआयामी – जिसके कई आयाम हों
204. बहुप्रचलित – जो बहुत प्रचलित हो
205. बार–बार – अनेक बार
206. बालसुलभ – बच्चों जैसा
207. भौगोलिक – भूगोल संबंधी
208. मंगलमय – मंगल से पूर्ण
209. मार्मिक – मर्म को छूने वाला
210. मौखिक – मुंह से
211. यथार्थवादी – सत्य पर आधारित
212. रक्तचाप – ब्लड प्रेषर

213. राजनीतिक – राजनीति से संबंधित
214. राश्ट्रप्रेमी – राश्ट्र से प्रेम करने वाला
215. लोकप्रिय – जो लोगों में प्रिय हो
216. व्यावहारिक – व्यवहार में आने वाला
217. षीघ्रगामी – तेजी से चलने वाला
218. षोकसंतप्त – षोक से व्याकुल
219. संवेदनषील – जिसमें संवेदना हो
220. सदाबहार – जो हमेषा खिला रहे
221. सप्ताहिक – सप्ताह में एक बार होने वाला
222. सर्वकालिक – सब समय का
223. सर्वविदित – जो सब जानते हों
224. साप्ताहिक – हफ्ते में एक बार होने वाला
225. सामाजिक – समाज से संबंधित
226. सार्वजनिक – सब के लिए
227. सार्वभौमिक – सब जगह की
228. साहसिक – साहस से पूर्ण
229. सुदूर – बहुत दूर
230. सुलभ – आसानी से मिलने वाला
231. स्थानीय – स्थान विषेश का
232. स्वागत – अच्छी तरह से आगमन
233. हितकारी – हित करने वाला
234. अंत्येश्टि – अंतिम संस्कार
235. अकस्मात – अचानक
236. अखंड – जो खंडित न हो
237. अग्रगामी – आगे बढ़ने वाला
238. अद्वितीय – जिसके समान दूसरा न हो
239. अनंत – जिसका अंत न हो
240. अनाथ – जिसके माता–पिता न हों

241. अनुचित – जो उचित न हो
242. अनुषासित – जो अनुषासन में रहता हो
243. अपेक्षित – जिसकी अपेक्षा की गई हो
244. अभूतपूर्व – जो पहले कभी न हुआ हो
245. अविवाहित – जिसकी षादी न हुई हो
246. अष्लील – जो षोभनीय न हो
247. असंभव – जो संभव न हो
248. असहनीय – जो सहन न किया जा सके
249. आकस्मिक – अचानक होने वाला
250. आजन्म – जन्म से लेकर
251. आत्महत्या – स्वयं को मारना
252. आधिकारिक – अधिकार से युक्त
253. उज्ज्वल – चमकदार
254. उत्कृश्ट – सर्वश्रेश्ठ
255. एकपक्षीय – एक ही पक्ष का
256. कड़कड़ाती – बहुत अधिक (ठंड के लिए)
257. कृत्रिम – जो प्राकृतिक न हो
258. क्रमबद्ध – क्रम में व्यवस्थित
259. क्षयरोग – टी.बी. रोग
260. गुणात्मक – गुण से संबंधित
261. घनिश्ठ – अत्यंत निकट
262. चिंतनषील – सोच–विचार करने वाला
263. चिरप्रतीक्षित – जिसकी बहुत दिनों से प्रतीक्षा की जा रही हो
264. चौमासा – चार महीने की अवधि
265. जन्मदिवस – जन्म का दिन
266. जीवनसाथी – पति या पत्नी
267. तत्परता – तैयारी
268. तदनुसार – उसके अनुसार

269. तत्काल – उसी समय
270. तत्पष्चात – उसके बाद
271. दूरगामी – दूर तक जाने वाला
272. देषांतर – देष का अंतर
273. धन्यवाद – आभार
274. नवविवाहित – नया विवाहित
275. नवीनतम – सबसे नया
276. नियमित – नियम से चलने वाला
277. निरंकुष – जिस पर कोई अंकुष न हो
278. निरापद – जिसमें कोई आपदा न हो
279. निराहार – बिना आहार के
280. निर्धारित – पहले से तय किया हुआ
281. निर्भीक – भय से रहित
282. निर्लोभी – लोभ से रहित
283. निर्वासित – देष से निकाला गया
284. निश्क्रिय – जो क्रिया न करता हो
285. पक्षपातपूर्ण – पक्षपात से युक्त
286. पाठ्यक्रम – पढ़ाई का क्रम
287. पुरस्कृत – जिसे पुरस्कार दिया गया हो
288. पूर्वानुमान – पहले से अनुमान लगाना
289. प्रचारक – प्रचार करने वाला
290. प्रतिदिन – हर दिन
291. प्रतिश्ठित – जिसकी प्रतिश्ठा हो
292. प्रत्यक्ष – सामने
293. प्रभावषाली – जिसका प्रभाव पड़ता हो
294. प्रामाणिक – प्रमाण युक्त
295. प्रासंगिक – प्रसंग से संबंधित
296. प्रौढ़ – पूर्ण विकसित

297. बहुमुखी – अनेक मुख वाला, अनेक गुण वाला

298. बाह्य – बाहर का

299. ब्रह्मचारी – जो ब्रह्मचर्य का पालन करे

300. भविश्यवाणी – भविश्य के बारे में कहना

301. भूमध्य – पष्थ्वी के बीच का

302. मनमोहक – मन को मोहने वाला

303. महापुरुश – महान व्यक्ति

304. महात्मा – महान आत्मा वाला

305. महानगर – बड़ा षहर

306. महाराश्ट्र – महान राश्ट्र

307. मस्तिश्क – दिमाग

308. मूल्यवान – कीमती

309. रजिस्टर्ड – पंजीकृत

आत्म मूल्यांकन प्रष्न

बहुविकल्पीय प्रष्न

प्रष्न 1: 'स्वतंत्रता पुकारती' कविता के माध्यम से मुख्य रूप से क्या अभिव्यक्त किया गया है?

।) विज्ञान का विकास

ठ) स्वतंत्रता का महत्व और देषभक्ति

ब) प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन

क) सामाजिक बुराइयों की आलोचना

उत्तरः ठ) स्वतंत्रता का महत्व और देषभक्ति

प्रष्न 2: निम्नलिखित में से कौन–सा षब्द 'संज्ञा' का उदाहरण नहीं है?

।) पुस्तक

ठ) दौड़ना

ब) दिल्ली

क) बच्चा

उत्तरः ठ) दौड़ना

प्रष्न 3: 'संज्ञा' के कितने प्रमुख भेद होते हैं?

।) तीन

ठ) चार

ब) पाँच

क) छह

उत्तरः ब) पाँच

प्रष्न 4ः निम्नलिखित में से कौन–सा 'सर्वनाम' का उदाहरण है?

।) कमल

ठ) वह

ब) विद्यालय

क) पुस्तक

उत्तरः ठ) वह

प्रष्न 5ः 'सर्वनाम' के कितने प्रकार होते हैं?

।) तीन

ठ) चार

ब) सात

क) पाँच

उत्तरः ब) सात

प्रष्न 6ः 'पल्लवन' का भाशा में क्या महत्व है?

।) यह नए षब्दों के निर्माण में सहायक होता है

ठ) यह भाशा को कठिन बनाता है

ब) यह केवल साहित्य में प्रयुक्त होता है

क) इसका भाशा पर कोई प्रभाव नहीं होता

उत्तरः ।) यह नए षब्दों के निर्माण में सहायक होता है

प्रष्न 7ः साहित्य में पल्लवन का उपयोग किस उद्देष्य से किया जाता है?

।) केवल पुराने षब्दों को हटाने के लिए

ठ) भाशा को समष्द्ध और प्रभावी बनाने के लिए

ब) व्याकरण के नियमों को बदलने के लिए

क) अनावष्यक षब्द जोड़ने के लिए

उत्तरः ठ) भाशा को समष्द्ध और प्रभावी बनाने के लिए

प्रष्न 8: 'जो कभी नहीं मरता' के लिए एक षब्द क्या होगा?

।) नष्वर

ठ) अमर

ब) जीवित

क) स्थिर

उत्तरः ठ) अमर

प्रष्न 9: 'जिसे आसानी से धोखा दिया जा सके' के लिए एक षब्द क्या होगा?

।) चालाक

ठ) बुद्धिमान

ब) भोला

क) संकोची

उत्तरः ब) भोला

प्रष्न 10: 'अनेक षब्दों के लिए एक षब्द' की परिभाशा क्या है?

।) एक वाक्य को संक्षिप्त करने की कला

ठ) एक से अधिक षब्दों का उपयोग

ब) अनेक षब्दों को एक षब्द में प्रकट करने की प्रक्रिया

क) संज्ञा और सर्वनाम का मिश्रण

उत्तरः ब) अनेक षब्दों को एक षब्द में प्रकट करने की प्रक्रिया

संक्षिप्त उत्तर वाले प्रष्नः

1. 'स्वतंत्रता पुकारती' का मुख्य संदेष क्या है?
2. संज्ञा किसे कहते हैं? उदाहरण दें।
3. संज्ञा के कितने भेद होते हैं? उनके नाम लिखें।
4. सर्वनाम क्या होता है? उदाहरण सहित समझाइए।
5. सर्वनाम के कितने प्रकार होते हैं?
6. पल्लवन का क्या अर्थ है और यह भाशा को कैसे समष्द्ध बनाता है?
7. ''अनेक षब्दों के लिए एक षब्द'' से क्या तात्पर्य है?
8. ''राजा, रानी, मंत्री, सेनापति'' के लिए एक षब्द क्या होगा?

9. ''जो कभी मरता नहीं'' के लिए एक षब्द लिखें।

10. स्वतंत्रता का महत्व संक्षेप में बताइए।

दीर्घ उत्तर वाले प्रष्नः

1. 'स्वतंत्रता पुकारती' पाठ का सारांष लिखिए।

2. संज्ञा और उसके भेदों को उदाहरण सहित स्पश्ट कीजिए।

3. सर्वनाम के प्रकारों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

4. पल्लवन की आवष्यकता और उसके लाभों को स्पश्ट कीजिए।

5. ''अनेक षब्दों के लिए एक षब्द'' की परिभाशा लिखें और 10 उदाहरण दें।

6. स्वतंत्रता का साहित्य और समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

7. स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नायकों पर एक निबंध लिखिए।

8. पल्लवन का उपयोग कर स्वतंत्रता पर एक अनुच्छेद लिखिए।

9. स्वतंत्रता का महत्व कविता के रूप में लिखिए।

10. स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व के बीच संबंध स्पश्ट कीजिए।

अध्याय 2

बड़े घर की बेटी

2.0 उद्देष्य

☐ 'बड़े घर की बेटी' कहानी का सार समझना और इसके नैतिक मूल्यों का विष्लेशण करना।

☐ मुहावरे और लोकोक्तियों का अर्थ एवं उनका सही प्रयोग सीखना।

☐ तत्सम और तद्भव षब्दों का अंतर तथा उनके उदाहरण समझना।

☐ पर्यायवाची षब्दों की पहचान करना और उनका उचित प्रयोग सीखना।2.1 ब

इकाई 04 – कहानी का सारांष

प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी 'बड़े घर की बेटी' हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण रचना है जिसमें समाज के विभिन्न पहलुओं का चित्रण किया गया है। यह कहानी जहां एक ओर सामाजिक विशमताओं और वर्ग भेद को दर्षाती है, वहीं दूसरी ओर मानवीय मूल्यों, त्याग और प्रेम के भाव को भी उजागर करती है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता, अमीर–गरीब के भेदभाव और विधवा जीवन की विडंबनाओं को बड़े ही प्रभावषाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

कहानी का सारांष

'बड़े घर की बेटी' कहानी का प्रारंभ एक संपन्न परिवार से संबंध रखने वाली आनंदी नामक युवती से होता है। आनंदी एक धनी परिवार की पुत्री है और उसका विवाह भी एक संपन्न परिवार में हुआ है। परंतु दुर्भाग्यवष, विवाह के कुछ ही समय बाद उसके पति की मष्त्यु हो जाती है, जिससे वह विधवा हो जाती है। तत्कालीन समाज में विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय होती थी और उन्हें अनेक प्रकार के प्रतिबंधों और रूढ़िवादी नियमों का पालन करना पड़ता था। आनंदी के पिता प्रतापचंद बहुत धनी हैं, और उनके पास अनेक संपत्तियां और जमीनें हैं। वे अपनी पुत्री को घर वापस ले आते हैं और उसका सम्मान तथा ख्याल रखते हैं। प्रतापचंद के घर पर उनके मुनीम का बेटा लालबिहारी काम करता है, जो एक ईमानदार और मेहनती युवक है। लालबिहारी और आनंदी के बीच ध ीरे–धीरे एक मानवीय संबंध विकसित होता है। प्रतापचंद की मष्त्यु के बाद, उनकी संपत्ति और रियासत अव्यवस्थित हो जाती है। उनके बेटे, आनंदी के भाई, अयोग्य और अकुषल निकलते हैं जो संपत्ति का सही प्रबंधन नहीं कर पाते। इस अव्यवस्था के बीच, लालबिहारी अपनी ईमानदारी और कर्तव्यनिश्ठा से काम करते हुए रियासत को संभालने का प्रयास करता है। जब आनंदी के भाई की मष्त्यु हो जाती है, तो आनंदी को अपने पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी बनाया जाता है। वह अब एक स्वतंत्र और समष्द्ध महिला है, जिसके पास अपार धन–संपत्ति है। परंतु इस समय भी वह अपने समाज की रूढ़िवादी मान्यताओं से बंधी हुई है और विधवा होने के कारण अनेक प्रतिबंधों का सामना करती है। कहानी का मोड़ तब आता है जब लालबिहारी, जिसे अब तक आनंदी के प्रति गहरा आदर और प्रेम हो चुका है, उसे अपनी भावनाओं से अवगत कराता है। वह आनंदी से विवाह का

प्रस्ताव रखता है। आनंदी पहले तो इस प्रस्ताव से हैरान होती है, क्योंकि वह एक 'बड़े घर की बेटी' है और लालबिहारी एक साधारण परिवार से है। परंतु धीरे–धीरे वह अपने दिल की आवाज सुनती है और समझती है कि मानवीय मूल्य और प्रेम, सामाजिक प्रतिश्ठा और वर्ग भेद से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। अंततः, आनंदी और लालबिहारी का विवाह होता है। यह विवाह न केवल दो व्यक्तियों का मिलन है, बल्कि दो अलग–अलग वर्गों और विचारधाराओं का भी मिलन है। आनंदी अपनी सारी संपत्ति दान कर देती है और लालबिहारी के साथ एक साधारण जीवन जीना स्वीकार करती है। इस प्रकार, कहानी एक सकारात्मक और आषावादी नोट पर समाप्त होती है, जहां प्रेम और मानवीय मूल्य सभी सामाजिक बंधनों और वर्ग भेद पर विजयी होते हैं।

कहानी का विष्लेशण

सामाजिक विशमता और वर्ग भेद का चित्रण

'बड़े घर की बेटी' कहानी में प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज में व्याप्त वर्ग भेद और सामाजिक विशमता का यथार्थपरक चित्रण किया है। कहानी में प्रतापचंद के धनी और प्रतिश्ठित परिवार और मुनीम लालबिहारी के साधारण परिवार के बीच का अंतर स्पश्ट रूप से दिखाया गया है। यह अंतर न केवल आर्थिक स्तर पर है, बल्कि सामाजिक प्रतिश्ठा, जीवन षैली और सोच में भी है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि वर्ग भेद और सामाजिक विशमता मनुश्य द्वारा निर्मित कृत्रिम बाधाएं हैं, जो मानवीय संबंधों और प्रेम के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करती हैं। आनंदी और लालबिहारी के बीच विकसित होने वाले प्रेम संबंध इन्हीं सामाजिक बाधाओं से जूझते हैं।

विधवा जीवन की विडंबनाएं

कहानी का एक और महत्वपूर्ण पहलू है तत्कालीन समाज में विधवाओं की स्थिति का चित्रण। आनंदी एक युवा विधवा है जिसे समाज के अनेक रूढ़िवादी नियमों और प्रतिबंधों का पालन करना पड़ता है। उसे अपने जीवन के अनेक आनंदों और सुखों से वंचित रहना पड़ता है। प्रेमचंद ने बड़े ही संवेदनषील ढंग से विधवाओं के जीवन की इन विडंबनाओं को प्रस्तुत किया है। हालांकि आनंदी एक धनी परिवार से है और उसके पास अपार संपत्ति है, फिर भी वह अपनी इच्छाओं और भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाती। यह दर्षाता है कि आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद, सामाजिक बंधन और रूढ़िवादिता व्यक्ति की स्वतंत्रता को कितना सीमित कर सकते हैं।

मानवीय मूल्यों की जीत

'बड़े घर की बेटी' कहानी का सबसे महत्वपूर्ण संदेष है मानवीय मूल्यों और प्रेम की जीत। कहानी के अंत में, आनंदी अपनी सारी संपत्ति दान कर देती है और लालबिहारी के साथ एक साधारण जीवन जीना स्वीकार करती है। यह निर्णय दर्षाता है कि वह अपने अहंकार, सामाजिक प्रतिश्ठा और वर्ग भेद से ऊपर उठकर, प्रेम और मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देती है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से यह संदेष दिया है कि सच्चा सुख और आनंद धन–संपत्ति और सामाजिक प्रतिश्ठा में नहीं, बल्कि प्रेम, त्याग और मानवीय संबंधों में निहित है। आनंदी और लालबिहारी का प्रेम इसी सत्य का प्रतीक है।

स्त्री सषक्तिकरण का संदेष

'बड़े घर की बेटी' कहानी में स्त्री सषक्तिकरण का संदेष भी निहित है। आनंदी एक ऐसी स्त्री है जो अपने निर्णय स्वयं लेती है और अपने जीवन का मार्ग स्वयं चुनती है। वह

समाज की रूढ़िवादिता और बंधनों से मुक्त होकर, अपनी इच्छाओं और भावनाओं के अनुसार जीवन जीने का साहस दिखाती है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से स्त्री स्वतंत्रता और सषक्तिकरण का समर्थन किया है। वे दिखाते हैं कि स्त्रियां भी अपने निर्णय लेने में सक्षम हैं और उन्हें भी अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं के अनुसार जीवन जीने का अधिकार है।

आर्थिक स्वतंत्रता बनाम मानसिक स्वतंत्रता

कहानी में एक और महत्वपूर्ण विशय है आर्थिक स्वतंत्रता बनाम मानसिक स्वतंत्रता का द्वंद्व। आनंदी के पास अपार धन–संपत्ति है, परंतु वह मानसिक रूप से स्वतंत्र नहीं है। वह समाज के बंधनों और रूढ़िवादिता से जकड़ी हुई है। इसके विपरीत, लालबिहारी आर्थिक रूप से संपन्न नहीं है, परंतु वह मानसिक रूप से स्वतंत्र है। वह अपनी इच्छाओं और विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करता है। प्रेमचंद ने इस द्वंद्व के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि सच्ची स्वतंत्रता मानसिक स्वतंत्रता में निहित है, न कि आर्थिक स्वतंत्रता में। आनंदी जब अपनी संपत्ति त्याग देती है और लालबिहारी के साथ जीवन जीना चुनती है, तो वह वास्तव में मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त करती है।

प्रेमचंद की लेखन षैली का प्रभाव

'बड़े घर की बेटी' कहानी प्रेमचंद की विषिश्ट लेखन षैली का उत्कृश्ट उदाहरण है। प्रेमचंद अपने साहित्य में सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हैं और उसके माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों और विसंगतियों पर प्रहार करते हैं। इस कहानी में भी, उन्होंने सामाजिक विशमता, वर्ग भेद और विधवाओं की स्थिति जैसे विशयों पर प्रकाष डाला है। प्रेमचंद की भाशा सरल, सहज और प्रभावषाली है। वे जटिल सामाजिक मुद्दों को भी इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि वे आम पाठक की समझ में आ जाएं। 'बड़े घर की बेटी' कहानी में भी, उन्होंने गंभीर सामाजिक मुद्दों को एक सरल और रोचक कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

'बड़े घर की बेटी' कहानी की प्रासंगिकता

हालांकि 'बड़े घर की बेटी' कहानी एक पुरानी कहानी है, परंतु इसके विशय और संदेष आज भी प्रासंगिक हैं। आज भी हमारे समाज में वर्ग भेद, सामाजिक विशमता और लिंग भेद जैसी समस्याएं मौजूद हैं। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद ने जो संदेष दिया है – प्रेम, त्याग और मानवीय मूल्यों की महत्ता – वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था। इसके अलावा, कहानी में स्त्री सषक्तिकरण का संदेष भी आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक है। आज जब हम स्त्री स्वतंत्रता और सषक्तिकरण की बात करते हैं, तो आनंदी जैसे चरित्र हमें प्रेरित करते हैं। वह एक ऐसी स्त्री है जो अपने निर्णय स्वयं लेती है और समाज की रूढ़िवादिता और बंधनों से मुक्त होकर अपनी इच्छाओं के अनुसार जीवन जीने का साहस दिखाती है।

'बड़े घर की बेटी' प्रेमचंद की एक महत्वपूर्ण कहानी है जो सामाजिक विशमता, वर्ग भेद और विधवाओं की स्थिति जैसे विशयों पर प्रकाष डालती है। इसके साथ ही, यह कहानी प्रेम, त्याग और मानवीय मूल्यों की महत्ता का संदेष भी देती है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से यह दिखाया है कि सच्चा सुख और आनंद धन–संपत्ति और सामाजिक प्रतिश्ठा में नहीं, बल्कि प्रेम और मानवीय संबंधों में निहित है। आज के समय में भी, जब हम आर्थिक विकास और भौतिक सुख–सुविधाओं की ओर दौड़ रहे हैं, 'बड़े घर की बेटी' जैसी कहानियां हमें याद दिलाती हैं कि जीवन का सच्चा अर्थ और सुख मानवीय मूल्यों, प्रेम और त्याग में निहित है। यही कारण है कि प्रेमचंद की यह कहानी आज भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रभावषाली है जितनी वह उस समय थी। यह कहानी न केवल एक साहित्यिक कृति है, बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज भी है जो तत्कालीन समाज का

यथार्थपरक चित्रण प्रस्तुत करती है। इसके माध्यम से हम उस समय के समाज, उसकी मान्यताओं, रूढ़िवादिता और विसंगतियों को समझ सकते हैं। साथ ही, यह कहानी हमें प्रेरित करती है कि हम भी अपने जीवन में प्रेम, त्याग और मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता दें। अंततः, 'बड़े घर की बेटी' कहानी हमें यह संदेष देती है कि सच्चा सुख और आनंद बाहरी भौतिक सुख–सुविधाओं में नहीं, बल्कि आंतरिक षांति और संतोश में निहित है। यह कहानी हमें सिखाती है कि हम अपने अहंकार, वर्ग भेद और सामाजिक प्रतिश्ठा से ऊपर उठकर, प्रेम और मानवीय मूल्यों को अपनाएं, क्योंकि यही जीवन का सच्चा अर्थ और उद्देष्य है।

इकाई 05 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

भाशा मानव संचार का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है, और मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ इस भाशा के सबसे रंगीन और अर्थपूर्ण अंग हैं। ये षब्द केवल संवाद के साधन नहीं हैं, बल्कि एक संपूर्ण संस्कृति, परंपरा और जीवन दर्षन के वाहक हैं। मुहावरे और लोकोक्तियाँ भाशा को न केवल अधिक सजीव और प्रभावषाली बनाते हैं, बल्कि उन्हें गहराई, व्यंग्य और भावनात्मक अभिव्यक्ति का अनूठा माध्यम भी बनाते हैं। मुहावरा षब्द संस्कृत के 'मुह' (मुख) और 'आवरण' (आवरण) से बना है, जिसका अर्थ है मुख का आवरण या मुख से निकलने वाला अभिव्यक्ति। ये विषेश वाक्य प्रयोग होते हैं जो षब्दों के मूल अर्थ से परे एक गहरा और विषिश्ट अर्थ रखते हैं। लोकोक्तियाँ इससे भी अधिक व्यापक अवधारणा हैं, जो किसी समाज या संस्कृति के जीवन अनुभव, बुद्धिमत्ता और ज्ञान को प्रतिबिंबित करती हैं।

मुहावरों और लोकोक्तियों का महत्व

1. सांस्कृतिक संरक्षणः ये भाशाई अभिव्यक्तियाँ पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं, मान्यताओं और जीवन के अनुभवों को संजोए रखती हैं। वे एक सामूहिक स्मषति के रूप में कार्य करते हैं, जो समाज के मूल्यों और विष्वासों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाते हैं।

2. भाशाई समषद्धिः मुहावरे और लोकोक्तियाँ भाशा को अधिक लचीला, रचनात्मक और अभिव्यक्तिपूर्ण बनाते हैं। ये साधारण षब्दों को असाधारण अर्थ प्रदान करते हैं, जिससे संवाद अधिक प्रभावषाली और रोचक बन जाता है।

3. संचार की गहराईः ये अभिव्यक्तियाँ जटिल भावनाओं और परिस्थितियों को संक्षिप्त और प्रभावी तरीके से व्यक्त करने में सक्षम होती हैं। एक छोटा सा मुहावरा कई वाक्यों के अर्थ को एक पल में समझा सकता है।

4. सामाजिक बुद्धिमत्ताः लोकोक्तियाँ जीवन के गहन अनुभवों से निकली होती हैं। ये नैतिक षिक्षाएँ, जीवन के सिद्धांत और व्यावहारिक बुद्धि को संजोए रखती हैं।

मुहावरों और लोकोक्तियों की विषेशताएँ

1. रूपात्मक अभिव्यक्तिः ये अक्सर रूपक, व्यंग्य और अलंकारिक भाशा का उपयोग करते हुए अपने अर्थ को व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, ''बैल के सींग निकल आए'' एक ऐसी स्थिति को दर्षाता है जहाँ किसी की गलती या छुपा हुआ स्वभाव प्रकट हो जाता है।

2. सांस्कृतिक संदर्भः प्रत्येक मुहावरा और लोकोक्ति उस समाज की संस्कृति, इतिहास और जीवन षैली को प्रतिबिंबित करता है। ये किसानी जीवन से लेकर षहरी अनुभवों तक विभिन्न पृश्ठभूमियों से जुड़े होते हैं।

3. भावनात्मक अभिव्यक्तिः ये केवल षब्द नहीं, बल्कि भावनाओं के वाहक हैं। दुख, खुषी, क्रोध, निराषा – सभी भावनाएँ इन अभिव्यक्तियों में गहराई से निहित होती हैं।

मुहावरों के प्रकार

बड़े घर की बेटी

1. व्यंग्यात्मक मुहावरेः जो किसी व्यक्ति या स्थिति पर व्यंग्य करते हैं, जैसे ''नाच न जाने आंगन टेढ़ा''।

2. नैतिक षिक्षा वाले मुहावरेः जो जीवन के महत्वपूर्ण सबक देते हैं, जैसे ''धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय''।

3. हास्य–व्यंग्य मुहावरेः जो हँसी या मजाक के माध्यम से गंभीर बातें कहते हैं, जैसे ''अंधों में काना राजा''।

4. परिस्थितिजन्य मुहावरेः जो विषिश्ट परिस्थितियों का वर्णन करते हैं, जैसे ''आफत में फँसना''।

प्रमुख उदाहरण और उनका विष्लेशण

1. जीवन दर्षन से संबंधित मुहावरे

''धैर्य धन का मूल है''

यह मुहावरा धैर्य के महत्व को दर्षाता है। यह केवल आर्थिक संदर्भ में नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में धैर्य की महत्ता को रेखांकित करता है। यह सिखाता है कि सफलता तत्काल नहीं, बल्कि निरंतर प्रयास और धैर्य से आती है। किसान की तरह, जो बीज बोता है और उसके फलने–फूलने के लिए धैर्य रखता है, मनुश्य को भी जीवन में धैर्य रखना चाहिए।

''अति सर्वत्र वर्जयेत''

यह संस्कृत से लिया गया मुहावरा चरम सीमाओं से बचने की चेतावनी देता है। चाहे वह खाने–पीने में हो, काम में हो या किसी भी गतिविधि में, अति सदैव हानिकारक होती है। यह संतुलन का महत्व सिखाता है और जीवन में मध्यम मार्ग अपनाने की प्रेरणा देता है।

2. सामाजिक व्यवहार से संबंधित लोकोक्तियाँ

''अतिथि देवो भव''

यह प्राचीन भारतीय संस्कृति की सबसे महान लोकोक्तियों में से एक है। यह अतिथि सत्कार के महत्व को दर्षाता है। इसका अर्थ है कि अतिथि को देवता के समान सम्मान दिया जाना चाहिए। यह मुहावरा मानवीय मूल्यों, सम्मान और मेहमाननवाजी की भावना को दर्षाता है।

''घर की मुर्गी दाल बराबर''

यह मुहावरा मानवीय स्वभाव की एक गहरी सच्चाई को दर्षाता है। अक्सर लोग दूसरों की चीजों को अधिक महत्व देते हैं और अपने पास मौजूद वस्तुओं की कीमत नहीं समझते। यह अपने पास मौजूद संसाधनों की कद्र करने की आवष्यकता को रेखांकित करता है।

3. नैतिक षिक्षा वाले मुहावरे

''सत्य की जीत होती है''

यह मुहावरा नैतिक मूल्यों के महत्व को दर्षाता है। यह कहता है कि अंततः सच्चाई विजयी होती है, चाहे उसे स्वीकार करने में कितना भी समय लग जाए। यह मानव समाज के नैतिक आधार को मजबूत करने वाला एक महत्वपूर्ण संदेष है।

''झूठ के पैर छोटे होते हैं''

यह मुहावरा झूठ की अस्थायी प्रकृति को दर्षाता है। इसका अर्थ है कि झूठ लंबे समय तक नहीं चल सकता और अंततः सच्चाई सामने आ ही जाती है। यह व्यक्ति को सच्चाई पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

4. परिश्रम और उद्यम से संबंधित मुहावरे

''जैसी करनी वैसी भरनी''

यह मुहावरा कर्म के सिद्धांत को दर्षाता है। यह कहता है कि मनुश्य को वही मिलता है जो वह करता है। यह कर्म और परिणाम के बीच के संबंध को रेखांकित करता है और व्यक्ति को अच्छे कर्म करने के लिए प्रेरित करता है।

''लोहा लोहे को काटता है''

यह मुहावरा प्रतिस्पर्धा और संघर्श की गहरी समझ को दर्षाता है। यह बताता है कि कभी–कभी समस्याओं का समाधान उन्हीं के समान साधनों से किया जा सकता है। यह जीवन की जटिलताओं को समझने में मदद करता है।

5. व्यंग्यात्मक और हास्य मुहावरे

''नाच न जाने आंगन टेढ़ा''

यह मुहावरा उन लोगों के लिए प्रयोग किया जाता है जो अपनी कमजोरियों या अक्षमताओं को छिपाने के लिए बहाने बनाते हैं। यह व्यक्ति की स्व–पहचान और ईमानदारी की महत्ता को दर्षाता है।

''अंधों में काना राजा''

यह मुहावरा ऐसी परिस्थितियों को दर्षाता है जहाँ अल्प योग्यता वाला व्यक्ति भी नेतष्त्व की स्थिति में आ जाता है। यह सामाजिक व्यवस्था में मौजूद विसंगतियों पर व्यंग्य करता है।

मुहावरों और लोकोक्तियों का वर्तमान महत्व

आधुनिक समय में भी मुहावरे और लोकोक्तियाँ अपना महत्व बरकरार रखे हुए हैं। डिजिटल युग में जहाँ संचार संक्षिप्त और त्वरित हो गया है, ये अभिव्यक्तियाँ जटिल भावनाओं और विचारों को सटीक रूप से व्यक्त करने में सक्षम हैं।

इकाई 06 तत्सम और तद्भव षब्द

हिंदी भाशा के षब्द–भंडार का निर्माण विभिन्न स्रोतों से हुआ है। इसमें संस्कृत भाशा का विषेश योगदान रहा है। संस्कृत से हिंदी में आए षब्द मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं – तत्सम और तद्भव। तत्सम षब्द वे षब्द हैं जो संस्कृत से हिंदी में बिना किसी परिवर्तन के ज्यों के त्यों ग्रहण किए गए हैं। 'तत्सम' षब्द का अर्थ ही है 'उसके समान' अर्थात

संस्कृत के समान। ये षब्द अपने मूल रूप में हिंदी में आए हैं और इनका उच्चारण, वर्तनी और अर्थ प्रायः संस्कृत के समान ही होता है। तद्भव षब्द वे हैं जो संस्कृत से हिंदी में आते समय परिवर्तित हो गए हैं। 'तद्भव' का अर्थ है 'उससे उत्पन्न' अर्थात संस्कृत से उत्पन्न। ये षब्द संस्कृत से हिंदी में आते समय उच्चारण की सरलता, भाशाई विकास और लोक व्यवहार के कारण परिवर्तित हो गए हैं। तत्सम और तद्भव षब्दों के बीच मुख्य अंतर यह है कि तत्सम षब्द संस्कृत के मूल रूप को बनाए रखते हैं, जबकि तद्भव षब्द कालांतर में परिवर्तित होकर अपना नया रूप धारण कर लेते हैं। तत्सम षब्द अधिक औपचारिक, साहित्यिक और परिश्कृत माने जाते हैं, जबकि तद्भव षब्द अधिक लोकप्रिय, सहज और व्यावहारिक होते हैं। तत्सम षब्दों में संस्कृत के विषेश वर्ण जैसे ऋ, श, क्ष, त्र, ज्ञ आदि का प्रयोग मिलता है, जबकि तद्भव षब्दों में ये वर्ण सरल होकर र, स, छ, त, ग्य जैसे रूपों में परिवर्तित हो जाते हैं। तत्सम षब्दों में संयुक्त व्यंजन (द्व, द्य, द्म आदि) बरकरार रहते हैं, जबकि तद्भव में ये आमतौर पर सरल हो जाते हैं।

बड़े घर की बेटी

प्रमुख उदाहरण

तत्सम षब्दों के उदाहरण

1. अग्नि – आग का तत्सम रूप
2. पुश्प – फूल का तत्सम रूप
3. नेत्र – आंख का तत्सम रूप
4. मुख – मुंह का तत्सम रूप
5. हस्त – हाथ का तत्सम रूप
6. विद्या – षिक्षा का तत्सम रूप
7. पुस्तक – किताब का तत्सम रूप
8. चन्द्र – चांद का तत्सम रूप
9. सूर्य – सूरज का तत्सम रूप
10. वष्क्ष – पेड़ का तत्सम रूप
11. अष्व – घोड़ा का तत्सम रूप
12. सिंह – षेर का तत्सम रूप
13. मष्त्यु – मौत का तत्सम रूप
14. रात्रि – रात का तत्सम रूप
15. क्षमा – माफी का तत्सम रूप
16. ग्राम – गांव का तत्सम रूप
17. कर्म – काम का तत्सम रूप
18. भ्राता – भाई का तत्सम रूप

19. मातष – माता का तत्सम रूप
20. पितष – पिता का तत्सम रूप
21. पुत्र – बेटा का तत्सम रूप
22. ष्वसुर – ससुर का तत्सम रूप
23. पत्नी – बीवी का तत्सम रूप
24. उश्ण – गरम का तत्सम रूप
25. षीत – ठंडा का तत्सम रूप
26. आकाष – आसमान का तत्सम रूप
27. जल – पानी का तत्सम रूप
28. प्रथम – पहला का तत्सम रूप
29. उत्तम – अच्छा का तत्सम रूप
30. अधर – होंठ का तत्सम रूप

तद्भव षब्दों के उदाहरण

1. आग – अग्नि का तद्भव रूप
2. फूल – पुश्प का तद्भव रूप
3. आंख – नेत्र का तद्भव रूप
4. मुंह – मुख का तद्भव रूप
5. हाथ – हस्त का तद्भव रूप
6. चांद – चन्द्र का तद्भव रूप
7. सूरज – सूर्य का तद्भव रूप
8. पेड़ – वष्क्ष का तद्भव रूप
9. घोड़ा – अष्व का तद्भव रूप
10. दूध – दुग्ध का तद्भव रूप
11. आंसू – अश्रु का तद्भव रूप
12. कान – कर्ण का तद्भव रूप
13. पत्ता – पत्र का तद्भव रूप
14. सांप – सर्प का तद्भव रूप
15. काना – कर्ण का तद्भव रूप

16. काज – कार्य का तद्भव रूप

17. काठ – काश्ठ का तद्भव रूप

18. रिच्छ – ऋक्ष का तद्भव रूप

19. बिच्छू – वषष्चिक का तद्भव रूप

20. बांस – वंष का तद्भव रूप

21. बैल – बलिवर्द का तद्भव रूप

22. कौआ – काक का तद्भव रूप

23. घर – गष्ह का तद्भव रूप

24. अंधेरा – अंधकार का तद्भव रूप

25. भूख – बुभुक्षा का तद्भव रूप

26. गांव – ग्राम का तद्भव रूप

27. चमार – चर्मकार का तद्भव रूप

28. किसान – कृशक का तद्भव रूप

29. ससुर – ष्वसुर का तद्भव रूप

30. जीभ – जिह्वा का तद्भव रूप

हिंदी भाशा में तत्सम और तद्भव षब्दों का प्रयोग अवसर, विशय और संदर्भ के अनुसार किया जाता है। साहित्यिक और औपचारिक लेखन में तत्सम षब्दों का अधिक प्रयोग होता है, जबकि दैनिक बोलचाल और व्यावहारिक संवाद में तद्भव षब्दों का प्रयोग अधिक होता है। इन दोनों प्रकार के षब्दों के उचित प्रयोग से भाशा में सौंदर्य, प्रभाव और अर्थ की गहराई आती है। तत्सम षब्दों के प्रयोग से भाशा में गंभीरता, विद्वत्ता और औपचारिकता का भाव आता है, जबकि तद्भव षब्दों के प्रयोग से भाशा सरल, सहज और लोकप्रिय बनती है। हिंदी भाशा की समृद्धि इन दोनों प्रकार के षब्दों के सामंजस्यपूर्ण प्रयोग में निहित है। तत्सम और तद्भव षब्दों के अतिरिक्त हिंदी में देषज और विदेषी षब्द भी प्रचलित हैं। देषज षब्द वे होते हैं जो न तो संस्कृत से लिए गए हैं और न ही किसी विदेषी भाशा से, बल्कि देष की अपनी भूमि से उत्पन्न हुए हैं, जैसे – टिकुली, किलकारी, पटाखा आदि। विदेषी षब्द वे हैं जो अरबी, फारसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली, तुर्की आदि भाशाओं से हिंदी में आए हैं, जैसे – किताब, कानून, स्कूल, बटन आदि। तत्सम षब्दों के अनेक रूप हिंदी में मिलते हैं। कुछ तत्सम षब्द ऐसे हैं जिनके अर्थ भी संस्कृत में और हिंदी में समान हैं, जैसे – कमल, नयन, मुख आदि। कुछ तत्सम षब्द ऐसे हैं जिनके अर्थ हिंदी में थोड़े भिन्न हो गए हैं, जैसे – 'व्याकुल' संस्कृत में 'अधीर' अर्थ में प्रयुक्त होता है, जबकि हिंदी में इसका अर्थ 'दुखी' या 'परेषान' है।

तद्भव षब्दों के निर्माण में कुछ नियम देखे जा सकते हैं:

1. 'क्ष' का सरलीकरण: संस्कृत के 'क्ष' वर्ण का हिंदी में 'ख' या 'छ' में परिवर्तन होता है, जैसे – क्षेत्र झ खेत, क्षुधा झ भूख।

2. 'श्र' का सरलीकरण: 'श्र' का 'स' में परिवर्तन होता है, जैसे – श्रावण झ सावन, श्रम झ सम।

बड़े घर की बेटी

3. संयुक्त व्यंजनों का सरलीकरणः संस्कृत के संयुक्त व्यंजन हिंदी में सरल हो जाते हैं, जैसे – पक्व झ पका, ग्राम झ गांव।

4. दीर्घ स्वरों का ह्रस्वीकरणः संस्कृत के दीर्घ स्वर हिंदी में ह्रस्व हो जाते हैं, जैसे – मातृ झ मात, पितृ झ पित।

5. विसर्ग का लोपः संस्कृत के विसर्ग का हिंदी में लोप हो जाता है, जैसे – दुःख झ दुख, मनः झ मन।

इन नियमों के अतिरिक्त, तद्भव षब्दों के निर्माण में अनेक अन्य ध्वनि परिवर्तन भी देखे जा सकते हैं, जैसे – 'र' का 'ल' में परिवर्तन (रात्रि झ रात), 'य' का 'ज' में परिवर्तन (यव झ जौ) आदि।

हिंदी भाशा के विकास के विभिन्न चरणों में तत्सम और तद्भव षब्दों का अनुपात बदलता रहा है। प्राचीन काल में प्राकृत और अपभ्रंष के युग में तद्भव षब्दों का प्रयोग अधिक था। मध्यकाल में भक्तिकाल और रीतिकाल के दौरान संस्कृत के प्रभाव से तत्सम षब्दों का प्रयोग बढ़ा। आधुनिक काल में खड़ी बोली हिंदी के विकास के साथ तत्सम और तद्भव दोनों प्रकार के षब्दों का संतुलित प्रयोग देखा जा सकता है।

तत्सम षब्दों की विषेशताएँः

1. ये षब्द संस्कृत के मूल रूप में बिना किसी परिवर्तन के हिंदी में प्रयोग किए जाते हैं।

2. इनमें संस्कृत के विषेश वर्ण जैसे ऋ, श, क्ष, त्र, ज्ञ आदि का प्रयोग होता है।

3. इनमें संयुक्त व्यंजन बरकरार रहते हैं।

4. इनका उच्चारण संस्कृत के नियमों के अनुसार होता है।

5. ये षब्द अधिकतर औपचारिक और साहित्यिक भाशा में प्रयोग किए जाते हैं।

6. इनमें विसर्ग, अनुस्वार आदि का प्रयोग मिलता है।

7. ये षब्द सुन्दर और श्रव्य होते हैं।

तद्भव षब्दों की विषेशताएँः

1. ये षब्द संस्कृत से हिंदी में आते समय परिवर्तित हो गए हैं।

2. इनमें विषेश संस्कृत वर्णों का सरलीकरण हो जाता है।

3. इनमें संयुक्त व्यंजन सरल हो जाते हैं।

4. इनका उच्चारण सरल होता है।

5. ये षब्द दैनिक बोलचाल और व्यावहारिक भाशा में अधिक प्रयोग किए जाते हैं।

6. इनमें विसर्ग, अनुस्वार आदि का लोप हो जाता है।

7. ये षब्द सहज और सरल होते हैं।

तत्सम और तद्भव षब्दों के उदाहरणों को विभिन्न वर्ग–समूहों में भी बांटा जा सकता हैः

1. प्राणियों के नामः

☐ तत्समः मानव, पषु, पक्षी, मत्स्य, सर्प, अष्व।

☐ तद्भवः मानस, पसु, पंछी, मच्छ, सांप, घोड़ा।

बड़े घर की बेटी

2. षरीर के अंगों के नामः

☐ तत्समः नेत्र, कर्ण, नासिका, दन्त, जिह्वा, अधर।

☐ तद्भवः आंख, कान, नाक, दांत, जीभ, होंठ।

3. रिष्तों के नामः

☐ तत्समः मातष्, पितष्, भ्राता, भगिनी, पुत्र, कन्या।

☐ तद्भवः माई, पिता, भाई, बहन, बेटा, बेटी।

4. प्रकृति से संबंधितः

☐ तत्समः सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, जल, पष्थ्वी।

☐ तद्भवः सूरज, चांद, आग, हवा, पानी, धरती।

5. भावनाओं के नामः

☐ तत्समः प्रेम, क्रोध, भय, षोक, हर्श, विस्मय।

☐ तद्भवः पिरेम, कोह, भै, सोग, हरख, बिसमय।

6. गुणों के नामः

☐ तत्समः गुण, दोश, सत्य, मिथ्या, धर्म, अधर्म।

☐ तद्भवः गुन, दोस, सच, झूठ, धरम, अधरम।

7. समय से संबंधितः

☐ तत्समः वर्श, मास, दिवस, रात्रि, प्रातः, सायं।

☐ तद्भवः बरस, मासध्महीना, दिन, रात, सबेरा, सांझ।

8. स्थान से संबंधितः

☐ तत्समः ग्राम, नगर, देष, भवन, मार्ग, क्षेत्र।

☐ तद्भवः गांव, नगर, देस, भवनध्घर, मारग, खेत।

हिंदी के विभिन्न साहित्यिक युगों में तत्सम और तद्भव षब्दों का प्रयोग अलग–अलग अनुपात में मिलता हैः

1. आदिकालः इस काल के साहित्य में तद्भव षब्दों का प्रयोग अधिक मिलता है। अपभ्रंष से विकसित हो रही हिंदी में तत्सम षब्द कम ही प्रयोग किए जाते थे।

2. भक्तिकालः इस काल में धार्मिक साहित्य के कारण तत्सम षब्दों का प्रयोग बढ़ा, लेकिन सगुण भक्ति धारा के कवियों ने तद्भव षब्दों का भी भरपूर प्रयोग किया।

3. रीतिकालः इस काल में दरबारी संस्कृति के प्रभाव से संस्कृतनिश्ठ षब्दावली का प्रयोग बढ़ा, जिसमें तत्सम षब्दों की संख्या अधिक थी।

4. आधुनिक कालः इस काल के साहित्य में तत्सम और तद्भव दोनों प्रकार के षब्दों का संतुलित प्रयोग मिलता है। छायावाद में तत्सम षब्दों का प्रयोग अधिक हुआ, जबकि प्रगतिवाद और प्रयोगवाद में तद्भव षब्दों का प्रयोग बढ़ा।

तत्सम और तद्भव षब्दों के साथ–साथ हिंदी में अन्य प्रकार के षब्द भी प्रयोग किए जाते हैं, जिन्हें मुख्य रूप से चार वर्गों में बांटा जा सकता हैः

1. तत्समः संस्कृत के मूल रूप में प्रयुक्त षब्द, जैसे – अग्नि, पुश्प, नेत्र।

2. तद्भवः संस्कृत से विकसित होकर परिवर्तित रूप में प्रयुक्त षब्द, जैसे – आग, फूल, आंख।

3. देषजः देष की अपनी भूमि से उत्पन्न षब्द, जो न तो संस्कृत से लिए गए हैं और न ही किसी विदेषी भाशा से, जैसे – टिकुली, किलकारी, पटाखा।

4. विदेषीः अन्य भाशाओं से हिंदी में आए षब्द, जैसे – किताब, कानून (अरबी–फारसी), स्कूल, बटन (अंग्रेजी), अलमारी (पुर्तगाली)।

हिंदी भाशा के विकास और समषद्धि में इन सभी प्रकार के षब्दों का महत्वपूर्ण योगदान है। भाशा के विकास के साथ–साथ नए षब्दों का निर्माण और पुराने षब्दों का परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

तत्सम और तद्भव षब्दों के प्रयोग का प्रभाव हिंदी भाशा के विभिन्न रूपों पर भी पड़ता हैः

1. मानक हिंदीः इसमें तत्सम और तद्भव दोनों प्रकार के षब्दों का संतुलित प्रयोग होता है।

2. बोलचाल की हिंदीः इसमें तद्भव षब्दों का प्रयोग अधिक होता है।

3. साहित्यिक हिंदीः इसमें विशय और षैली के अनुसार तत्सम और तद्भव षब्दों का प्रयोग किया जाता है। गंभीर और दार्षनिक विशयों में तत्सम षब्दों का प्रयोग अधिक होता है, जबकि लोक जीवन और भावनाओं के वर्णन में तद्भव षब्दों का।

4. प्रषासनिक हिंदीः इसमें तत्सम षब्दों का प्रयोग अधिक होता है, विषेश रूप से पारिभाशिक षब्दावली में।

5. मीडिया की हिंदीः इसमें विशय और दर्षकोंध्पाठकों के अनुसार तत्सम और तद्भव षब्दों का प्रयोग किया जाता है।

तत्सम और तद्भव षब्दों के अध्ययन से हिंदी भाशा के विकास और इसके साथ जुड़े सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने में मदद मिलती है। इन षब्दों के माध्यम से हम हिंदी भाशा की ऐतिहासिक यात्रा, संस्कृत से इसके संबंध और भारतीय समाज के विकास को भी समझ सकते हैं। हिंदी भाशा की समृद्धि इन विविध प्रकार के षब्दों के सहअस्तित्व और सामंजस्य में निहित है। तत्सम षब्द जहां भाशा को गौरवषाली और संस्कारयुक्त बनाते हैं, वहीं तद्भव षब्द इसे जनसामान्य के करीब लाते हैं। भाशा के सतत विकास की प्रक्रिया में तत्सम षब्दों से नए तद्भव षब्दों का निर्माण होता रहता है। इसके साथ ही, नई अवधारणाओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए संस्कृत से नए तत्सम षब्दों को भी हिंदी में अपनाया जाता है। तत्सम और तद्भव षब्दों का ज्ञान हिंदी भाशा

के सही प्रयोग, इसके इतिहास की समझ और षब्दों के अर्थ को गहराई से जानने में सहायक होता है। इससे भाशा का षुद्ध और प्रभावषाली प्रयोग संभव होता है। हिंदी भाशा के विकास में तत्सम और तद्भव षब्दों की भूमिका को समझने से यह भी पता चलता है कि किस प्रकार भाशा समाज के साथ बदलती है और उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिवेष से प्रभावित होती है। आधुनिक हिंदी में विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा, विधि, प्रषासन आदि क्षेत्रों की पारिभाशिक षब्दावली के निर्माण में तत्सम षब्दों का विषेश योगदान है। अंग्रेजी के तकनीकी षब्दों के लिए संस्कृत से लिए गए तत्सम षब्दों का प्रयोग किया जाता है, जैसे – ब्वउचनजमत के लिए 'संगणक', ज्मसमचीवदम के लिए 'दूरभाश', ज्मसमअपेपवद के लिए 'दूरदर्षन' आदि। तत्सम और तद्भव षब्दों के अध्ययन से भाशा की ध्वनियों और वर्तनी में होने वाले परिवर्तनों को भी समझा जा सकता है। इससे भाशा की विकास प्रक्रिया और उसके नियमों का पता चलता है। विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों (जैसे – ब्रज, अवधी, मैथिली, भोजपुरी आदि) में तद्भव षब्दों का प्रयोग अधिक मिलता है, जबकि मानक हिंदी में तत्सम षब्दों का प्रयोग तुलनात्मक रूप से अधिक होता है।

हिंदी भाशा के व्याकरण में तत्सम और तद्भव षब्दों के प्रयोग, उनके लिंग, वचन, कारक आदि के नियमों में भी अंतर होता है। तत्सम षब्द अधिकतर संस-

2.4 पर्यायवाची षब्द

पर्यायवाची षब्द वे षब्द होते हैं जिनका अर्थ समान या बहुत मिलता–जुलता होता है। इन्हें 'समानार्थी षब्द' या 'समानार्थक षब्द' भी कहा जाता है। हिंदी भाशा में पर्यायवाची षब्दों की एक समृद्ध परंपरा है जो इस भाशा की व्यापकता और सौंदर्य को दर्षाती है। पर्यायवाची षब्द हमारी भाशा को अधिक सुंदर, प्रभावषाली और अभिव्यंजक बनाते हैं। ये षब्द एक ही वस्तु, भाव या अवधारणा के लिए विभिन्न अभिव्यक्तियां प्रदान करते हैं, जिससे भाशा में विविधता आती है और अभिव्यक्ति अधिक सटीक और प्रभावी हो जाती है। हिंदी साहित्य, विषेशकर कविता में, पर्यायवाची षब्दों का उपयोग छंद, लय और भावों को सुंदर ढंग से व्यक्त करने के लिए किया जाता है। व्याकरणिक दृश्टि से, पर्यायवाची षब्द अक्सर एक ही व्याकरणिक श्रेणी (जैसे संज्ञा, विषेशण, क्रिया) के होते हैं, हालांकि इसके अपवाद भी हो सकते हैं। पर्यायवाची षब्दों की उत्पत्ति विभिन्न स्रोतों से हुई है। कुछ षब्द संस्कृत से आए हैं, कुछ अरबी, फारसी या अन्य भाशाओं से। इसके अलावा, स्थानीय बोलियों और देषज षब्दों से भी पर्यायवाची षब्द हिंदी में षामिल हुए हैं। यह विविधता हिंदी भाशा की समृद्धि और इसकी सांस्कृतिक विरासत को दर्षाती है। भाशा विज्ञान के अनुसार, पूर्ण पर्यायवाची षब्द बहुत कम होते हैं, क्योंकि प्रत्येक षब्द में सूक्ष्म अर्थगत अंतर या संदर्भगत भिन्नता होती है। इसलिए, पर्यायवाची षब्दों का उचित उपयोग संदर्भ, षैली और अभिप्राय पर निर्भर करता है। पर्यायवाची षब्दों का महत्व विभिन्न क्षेत्रों में है। साहित्य में, ये षब्द अभिव्यक्ति को समृद्ध बनाते हैं और लेखकों को अपने विचारों को अधिक सटीक और प्रभावषाली ढंग से व्यक्त करने में मदद करते हैं। षिक्षा के क्षेत्र में, पर्यायवाची षब्दों का ज्ञान छात्रों के षब्द भंडार को बढ़ाता है और उन्हें भाशा के सूक्ष्म अंतरों को समझने में सहायता करता है। अनुवाद कार्य में, पर्यायवाची षब्द अनुवादकों को मूल भाव को बनाए रखते हुए सटीक षब्द चुनने में मदद करते हैं। संचार के क्षेत्र में, ये षब्द संदेष को अधिक प्रभावषाली और स्पश्ट बनाते हैं। इस प्रकार, पर्यायवाची षब्द हिंदी भाशा के एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य अंग हैं जो इसकी समृद्धि और लचीलेपन को बढ़ाते हैं।

प्रमुख उदाहरण

अग्नि (आग) के पर्यायवाची षब्द

अग्नि हिंदी में आग का संस्कृतनिश्ठ षब्द है और इसके अनेक पर्यायवाची षब्द हैं जो विभिन्न संदर्भों में प्रयोग किए जाते हैं। आग के प्रमुख पर्यायवाची षब्दों में आनल, पावक, वह्नि, हुताषन, दहन, अनल, ज्वाला, षिखी, विभावसु, कृषानु, धूमकेतु और रोहिताष्व षामिल हैं। ये षब्द विभिन्न संस्कृत ग्रंथों, काव्यों और पौराणिक कथाओं में प्रयुक्त हुए हैं। उदाहरण के लिए, 'पावक' षब्द का अर्थ है जो पवित्र करे, क्योंकि अग्नि को षुद्धिकरण का प्रतीक माना जाता है। 'हुताषन' षब्द का अर्थ है हवि (आहुति) को खाने वाला, जो अग्नि के यज्ञ में आहुतियों को ग्रहण करने के गुण को दर्षाता है। 'वह्नि' षब्द 'वह' धातु से बना है, जिसका अर्थ है ले जाना, क्योंकि अग्नि आहुतियों को देवताओं तक पहुंचाने का माध्यम मानी जाती है। साहित्य में, विषेशकर कविता में, अग्नि के ये विभिन्न पर्यायवाची षब्द छंद और लय के अनुसार प्रयोग किए जाते हैं, जैसे ''अनल से अंकुर फूटे, पावक से पुश्प खिले''। पौराणिक संदर्भों में, अग्नि के विभिन्न नाम उसके विभिन्न रूपों और कार्यों को दर्षाते हैं। जैसे, 'कृषानु' (अग्नि देवता), 'विभावसु' (जो प्रकाष फैलाता है) और 'धूमकेतु' (जिसका केतु या ध्वज धुआँ है)। आधुनिक हिंदी में आग के लिए अन्य प्रचलित षब्द हैं जैसे जलन, दाह, ज्वलन आदि, जो विषिश्ट संदर्भों में प्रयोग होते हैं। ये विविध पर्यायवाची षब्द अग्नि के विभिन्न गुणों, कार्यों और प्रभावों को दर्षाते हैं और हिंदी भाशा की समृद्धि का परिचय देते हैं।

जल (पानी) के पर्यायवाची षब्द

जल हिंदी में पानी का तत्सम षब्द है और इसके अनेक पर्यायवाची षब्द हैं जो इसके विभिन्न गुणों और रूपों को प्रकट करते हैं। जल के प्रमुख पर्यायवाची षब्दों में नीर, वारि, अम्बु, पय, सलिल, तोय, उदक, पानी, आप, पयोद, अपः, जीवन, मेघज और पयोधि षामिल हैं। इनमें से कई षब्द संस्कृत से आए हैं और कविताओं, साहित्यिक रचनाओं और धार्मिक ग्रंथों में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए, 'नीर' षब्द का प्रयोग अक्सर षुद्ध और स्वच्छ जल के लिए किया जाता है, जबकि 'वारि' षब्द व्यापक अर्थ में जल के लिए प्रयुक्त होता है। 'अम्बु' संस्कृत षब्द है जिसका अर्थ जल है और इसका प्रयोग औपचारिक और साहित्यिक संदर्भों में होता है। जल के कुछ पर्यायवाची षब्द विषेश संदर्भ में ही प्रयोग होते हैं। जैसे, 'पय' षब्द का प्रयोग अक्सर षुद्ध, पौश्टिक और पीने योग्य जल के लिए किया जाता है। 'उदक' षब्द धार्मिक और अनुश्ठानिक संदर्भों में प्रयुक्त होता है, विषेशकर पितृ तर्पण जैसे धार्मिक कर्मकांडों में। 'पयोद' और 'मेघज' षब्द वर्शा के जल को संदर्भित करते हैं, जिसमें 'पयोद' का अर्थ है जल देने वाला (बादल) और 'मेघज' का अर्थ है मेघ से उत्पन्न। 'जीवन' षब्द जल के जीवनदायी गुण को दर्षाता है, जो सभी जीवों के लिए अनिवार्य है। आधुनिक हिंदी में 'पानी' सबसे अधिक प्रचलित षब्द है, जो फारसी 'आब' से निकला है और दैनिक व्यवहार में प्रयोग होता है। ये विविध पर्यायवाची षब्द जल के महत्व और इसके विभिन्न रूपों और गुणों को प्रकट करते हैं।

सूर्य के पर्यायवाची षब्द

सूर्य हिंदी में सूरज का संस्कृत षब्द है और इसके अनेक पर्यायवाची षब्द हैं जो इसके विभिन्न गुणों, कार्यों और पौराणिक महत्व को दर्षाते हैं। सूर्य के प्रमुख पर्यायवाची षब्दों में रवि, भानु, दिनकर, दिवाकर, प्रभाकर, आदित्य, मित्र, अर्क, विवस्वान, मार्तण्ड, सविता, भास्कर, अंषुमान, मिहिर, तपन, अरुण, और पूशा षामिल हैं। ये षब्द विभिन्न संस्कृत ग्रंथों, वेदों, पुराणों और काव्यों में प्रयुक्त हुए हैं और सूर्य के विभिन्न रूपों और विषेशताओं को प्रकट करते हैं। उदाहरण के लिए, 'दिनकर' और 'दिवाकर' षब्द सूर्य की दिन बनाने की क्षमता को दर्षाते हैं, जबकि 'प्रभाकर' और 'भास्कर' षब्द उसके प्रकाष फैलाने के गुण को सूचित करते हैं। सूर्य के कई पर्यायवाची षब्द पौराणिक कथाओं और वैदिक परंपराओं से जुड़े हैं। जैसे, 'आदित्य' षब्द सूर्य को अदिति का पुत्र बताता है, जो वैदिक देवी हैं।

'मित्र' वैदिक देवता है जो सूर्य के रूप में पूजा जाता है और मैत्री या मित्रता का प्रतीक है। 'मार्तण्ड' षब्द मृत अंडे से जन्मे सूर्य को दर्षाता है, जो एक पौराणिक कथा से जुड़ा है। 'विवस्वान' और 'सविता' वेदों में प्रयुक्त सूर्य के नाम हैं। आधुनिक हिंदी में 'सूरज' और 'सूर्य' सबसे अधिक प्रचलित षब्द हैं, जबकि साहित्य और काव्य में अन्य पर्यायवाची षब्दों का प्रयोग अक्सर किया जाता है। ये विविध पर्यायवाची षब्द सूर्य के महत्व, उसकी षक्ति और ज्योति के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करते हैं और हिंदी भाशा की समृद्ध षब्द संपदा का परिचय देते हैं।

आकाष के पर्यायवाची षब्द

आकाष हिंदी में उस अनंत विस्तार को कहते हैं जो पष्थ्वी से ऊपर दिखाई देता है। इसके अनेक पर्यायवाची षब्द हैं जो इसके विभिन्न रूपों और विषेशताओं को दर्षाते हैं। आकाष के प्रमुख पर्यायवाची षब्दों में नभ, गगन, अम्बर, व्योम, अन्तरिक्ष, आसमान, षून्य, द्युलोक, द्यौ, अभ्र, पुश्कर और दिव षामिल हैं। इनमें से अधिकांष षब्द संस्कृत से आए हैं, जबकि 'आसमान' फारसी भाशा का षब्द है। ये षब्द हिंदी साहित्य, विषेशकर कविता में, अक्सर प्रयोग किए जाते हैं और आकाष की विषालता, अनंतता और सौंदर्य को व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, 'नभ' और 'गगन' षब्द आकाष की ऊँचाई और विस्तार को दर्षाते हैं, जबकि 'व्योम' षब्द आकाष की षून्यता और अनंतता का बोध कराता है। आकाष के कुछ पर्यायवाची षब्द विषेश संदर्भों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, 'अन्तरिक्ष' षब्द वैज्ञानिक और आधुनिक संदर्भों में अधिक प्रयोग होता है, विषेशकर अंतरिक्ष अनुसंधान और अंतरिक्ष यान जैसे विशयों में। 'षून्य' षब्द आकाष की रिक्तता को दर्षाता है और दार्षनिक चिंतन में भी महत्वपूर्ण है। 'द्युलोक' और 'दिव' वैदिक साहित्य में स्वर्ग या देवलोक के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, जो आकाष का ही एक भाग माना जाता है। 'अभ्र' षब्द से 'अभ्रक' (एक खनिज) और 'बादल' दोनों के अर्थ निकलते हैं। आधुनिक हिंदी में 'आकाष' और 'आसमान' सबसे अधिक प्रचलित षब्द हैं। ये विविध पर्यायवाची षब्द आकाष के विभिन्न पहलुओं और अवधारणाओं को प्रकट करते हैं, और हिंदी भाशा की समषद्धि और लचीलेपन का प्रमाण हैं।

पष्थ्वी के पर्यायवाची षब्द

पष्थ्वी हिंदी में हमारे ग्रह का संस्कृत नाम है, और इसके अनेक पर्यायवाची षब्द हैं जो इसके विभिन्न गुणों और महत्व को प्रकट करते हैं। पष्थ्वी के प्रमुख पर्यायवाची षब्दों में धरती, भू, धरा, वसुधा, वसुन्धरा, अवनि, क्षिति, धरित्री, मही, मेदिनी, गो, जगती, कुः, उर्वी, भूमि, अचला, रत्नगर्भा, और क्ष्मा षामिल हैं। ये षब्द संस्कृत ग्रंथों, वेदों, पुराणों और काव्यों में प्रयुक्त हुए हैं और पष्थ्वी के विभिन्न गुणों और विषेशताओं को दर्षाते हैं। उदाहरण के लिए, 'वसुधा' और 'वसुन्धरा' षब्द पष्थ्वी की संपन्नता और धन–धान्य से भरपूर होने की विषेशता को दर्षाते हैं, जबकि 'धरित्री' और 'धरा' षब्द उसके धारण करने के गुण को सूचित करते हैं, क्योंकि पष्थ्वी सभी जीवों और वनस्पतियों को धारण करती है। पष्थ्वी के कई पर्यायवाची षब्द इसके विषिश्ट गुणों के आधार पर बने हैं। जैसे, 'अचला' षब्द पष्थ्वी की स्थिरता को दर्षाता है, जबकि 'रत्नगर्भा' उसके गर्भ में छिपे खनिजों और रत्नों की ओर संकेत करता है। 'मेदिनी' षब्द 'मेद' या वसा से जुड़ा है, जो पष्थ्वी की उर्वरता का प्रतीक है। 'गो' षब्द वैदिक साहित्य में पष्थ्वी के लिए प्रयुक्त होता है और इसके साथ ही गाय का भी अर्थ देता है, जो दोनों की पोशण क्षमता के समानता को दर्षाता है। आधुनिक हिंदी में 'धरती' और 'पष्थ्वी' सबसे अधिक प्रचलित षब्द हैं, जबकि साहित्य और काव्य में अन्य पर्यायवाची षब्दों का प्रयोग भी होता है। ये विविध पर्यायवाची षब्द पष्थ्वी के महत्व, उसकी प्राकृतिक सुंदरता और जीवनदायिनी षक्ति के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करते हैं।

वन (जंगल) के पर्यायवाची षब्द

वन हिंदी में जंगल का संस्कृत षब्द है, और इसके अनेक पर्यायवाची षब्द हैं जो इसके विभिन्न स्वरूपों और विषेशताओं को प्रकट करते हैं। वन के प्रमुख पर्यायवाची षब्दों में जंगल, अरण्य, कानन, विपिन, गहन, कांतार, काननः, अटवी, महारण्य, कुंज, कान्तार और दाव षामिल हैं। इनमें से कई षब्द संस्कृत से आए हैं, जबकि 'जंगल' फारसी भाशा का षब्द है। ये षब्द हिंदी साहित्य, विषेशकर कविता और कहानियों में, अक्सर प्रयोग किए जाते हैं और वन की विविधता, गहनता, सघनता और सौंदर्य को व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, 'अरण्य' षब्द एक विस्तृत और गहन वन को दर्षाता है, जबकि 'कानन' षब्द अक्सर सुंदर और सुखद वन के लिए प्रयुक्त होता है। वन के कुछ पर्यायवाची षब्द विषेश संदर्भों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे, 'कांतार' या 'कान्तार' षब्द एक गहन और दुर्गम वन को दर्षाता है, जिसमें प्रवेष करना कठिन हो। 'अटवी' षब्द भी घने जंगल के लिए प्रयुक्त होता है, जिसमें रास्ता खोजना मुष्किल हो। 'कुंज' षब्द अक्सर छोटे और सुंदर उपवन या बगीचे के लिए प्रयोग किया जाता है, विषेशकर जहां पक्षी और जानवर निवास करते हों। 'महारण्य' षब्द एक विषाल और विस्तृत वन को सूचित करता है। आधुनिक हिंदी में 'जंगल' और 'वन' सबसे अधिक प्रचलित षब्द हैं, जबकि 'वन' षब्द अधिक औपचारिक और प्रषासनिक संदर्भों में प्रयुक्त होता है, जैसे वन विभाग, वन संरक्षण आदि। ये विविध पर्यायवाची षब्द वन के विभिन्न स्वरूपों, उनकी प्राकृतिक विषेशताओं और मानव जीवन में उनके महत्व को प्रकट करते हैं।

हवा (वायु) के पर्यायवाची षब्द

हवा या वायु हिंदी में उस वायुमंडलीय तत्व को कहते हैं जिसमें हम साँस लेते हैं। इसके अनेक पर्यायवाची षब्द हैं जो इसके विभिन्न रूपों, गुणों और प्रभावों को दर्षाते हैं। वायु के प्रमुख पर्यायवाची षब्दों में पवन, अनिल, समीर, मारुत, वात, हवा, समीरण, अनिला, प्रभंजन, झकोर, बयार, झोंका, और पवमान षामिल हैं। इनमें से अधिकांष षब्द संस्कृत से आए हैं, जबकि 'हवा' अरबी भाशा का षब्द है। ये षब्द हिंदी साहित्य, विषेशकर कविता में, अक्सर प्रयोग किए जाते हैं और वायु के विभिन्न स्वरूपों और गतियों को व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, 'पवन' और 'समीर' षब्द मंद और सुखद हवा को दर्षाते हैं, जबकि 'प्रभंजन' एक तेज और षक्तिषाली आँधी को सूचित करता है। वायु के कई पर्यायवाची षब्द इसके विभिन्न स्वरूपों और प्रभावों के आधार पर बने हैं। जैसे, 'बयार' षब्द एक हल्की और सुखद हवा को दर्षाता है, जबकि 'झकोर' और 'झोंका' तेज और अचानक आने वाली हवा के झोंके को संदर्भित करते हैं। 'मारुत' वैदिक देवता हैं जो वायु के रूप में पूजे जाते हैं। 'वात' षब्द वैदिक साहित्य और आयुर्वेद में महत्वपूर्ण है, जहाँ इसे तीन दोशों (वात, पित्त, कफ) में से एक माना जाता है। आधुनिक हिंदी में 'हवा' और 'वायु' सबसे अधिक प्रचलित षब्द हैं, जबकि 'वायु' षब्द अधिक वैज्ञानिक और औपचारिक संदर्भों में प्रयुक्त होता है, जैसे वायुमंडल, वायु प्रदूशण आदि। ये विविध पर्यायवाची षब्द वायु के विभिन्न स्वरूपों, गुणों और मानव जीवन में इसके महत्व को प्रकट करते हैं और हिंदी भाशा की समृद्धि का प्रमाण हैं।

आत्म मूल्यांकन प्रष्न

बहुविकल्पीय प्रष्न

प्रष्न 1: 'बड़े घर की बेटी' कहानी के लेखक कौन हैं?

।) प्रेमचंद

ठ) रामधारी सिंह दिनकर

ब) महादेवी वर्मा

क) सुभद्राकुमारी चौहान

उत्तरः ।) प्रेमचंद

प्रष्न 2ः 'बड़े घर की बेटी' कहानी मुख्य रूप से किस विशय पर आधारित है?

।) सामाजिक संघर्श

ठ) पारिवारिक एकता और संस्कार

ब) राजनीति और समाज

क) आर्थिक असमानता

उत्तरः ठ) पारिवारिक एकता और संस्कार

प्रष्न 3ः निम्नलिखित में से कौन–सा मुहावरा सही अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?

।) राम बहुत मेहनती है, वह दिन–रात खून का पसीना बहाता है।

ठ) परीक्षा में अच्छे अंक आने पर मोहन आसमान से गिर पड़ा।

ब) राजू ने अपना काम अधूरा छोड़ दिया और नौ दो ग्यारह हो गया।

क) बारिष होने के बावजूद किसान रेत में सिर छुपा रहा है।

उत्तरः ।) राम बहुत मेहनती है, वह दिन–रात खून का पसीना बहाता है।

प्रष्न 4ः 'अपना उल्लू सीधा करना' मुहावरे का सही अर्थ क्या है?

।) उल्लू को रास्ता दिखाना

ठ) अपनी स्वार्थ सिद्धि करना

ब) दूसरों की मदद करना

क) मेहनत करना

उत्तरः ठ) अपनी स्वार्थ सिद्धि करना

प्रष्न 5ः निम्नलिखित में से कौन–सा षब्द 'तद्भव' षब्द का उदाहरण है?

।) सूर्य

ठ) दंत

ब) घोड़ा

क) विद्या

उत्तरः ब) घोड़ा

प्रष्न 6ः तत्सम और तद्भव षब्दों के बीच मुख्य अंतर क्या है?

।) तत्सम षब्द संस्कृत से सीधे लिए जाते हैं, जबकि तद्भव षब्द परिवर्तित रूप होते हैं

ठ) तद्भव षब्द संस्कृत से सीधे लिए जाते हैं, जबकि तत्सम षब्द परिवर्तित रूप होते हैं

ब) तत्सम षब्द अंग्रेजी भाशा से आते हैं

क) तद्भव षब्द केवल ग्रामीण भाशा में उपयोग होते हैं

उत्तरः ।) तत्सम षब्द संस्कृत से सीधे लिए जाते हैं, जबकि तद्भव षब्द परिवर्तित रूप होते हैं

प्रष्न 7: 'चंद्रमा' का तद्भव रूप क्या होगा?

।) चंदा

ठ) चंद्रिका

ब) चंद्रगुप्त

क) चंद्रलोक

उत्तरः ।) चंदा

प्रष्न 8: 'सूर्य' का पर्यायवाची षब्द कौन–सा नहीं है?

।) भास्कर

ठ) रवि

ब) षषि

क) दिनकर

उत्तरः ब) षषि

प्रष्न 9: 'पवन' के लिए सही पर्यायवाची षब्द क्या होगा?

।) जल

ठ) वायु

ब) सूर्य

क) ध्वनि

उत्तरः ठ) वायु

प्रष्न 10: 'पर्यायवाची षब्द' का सही अर्थ क्या है?

।) समान अर्थ वाले षब्द

ठ) विपरीत अर्थ वाले षब्द

ब) पर्यावरण से जुड़े षब्द

क) कठिन षब्दों के सरल रूप

उत्तरः I) समान अर्थ वाले षब्द

संक्षिप्त उत्तर वाले प्रष्नः

1. 'बड़े घर की बेटी' कहानी का मुख्य संदेष क्या है?
2. इस कहानी की मुख्य पात्र कौन हैं?
3. मुहावरा क्या होता है? उदाहरण दें।
4. लोकोक्ति किसे कहते हैं? एक उदाहरण लिखिए।
5. तत्सम और तद्भव षब्दों में क्या अंतर है?
6. "सूर्य" का तद्भव रूप क्या है?
7. ''विद्या'' का पर्यायवाची षब्द लिखिए।
8. ''अग्नि'' के लिए तीन पर्यायवाची षब्द लिखिए।
9. ''अंधे के आगे रोषनी करना'' मुहावरे का अर्थ लिखिए।
10. ''अपना उल्लू सीधा करना'' मुहावरे का प्रयोग कर वाक्य बनाइए।

दीर्घ उत्तर वाले प्रष्नः

1. 'बड़े घर की बेटी' कहानी का विस्तारपूर्वक सारांष लिखिए।
2. इस कहानी के मुख्य पात्रों के स्वभाव और विषेशताओं का वर्णन कीजिए।
3. मुहावरों और लोकोक्तियों में अंतर स्पश्ट करें तथा 10 उदाहरण दें।
4. तत्सम और तद्भव षब्दों की परिभाशा लिखें और 10–10 उदाहरण दें।
5. पर्यायवाची षब्द किसे कहते हैं? 10 महत्वपूर्ण षब्दों के पर्यायवाची लिखिए।
6. 'बड़े घर की बेटी' कहानी से मिलने वाली षिक्षाओं को विस्तार से लिखिए।
7. ''तत्सम और तद्भव षब्द'' भाशा की समृद्धि में किस प्रकार योगदान देते हैं?
8. मुहावरों और लोकोक्तियों का साहित्य और दैनिक जीवन में क्या महत्व है?
9. कहानी में आने वाले सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों का वर्णन करें।
10. ''पर्यायवाची षब्दों का प्रयोग साहित्य में क्यों आवष्यक है?'' इस पर निबंध लिखें।

अध्याय 3

अब तो पथ यही है

3.0 उद्देष्य

- ☐ कविता 'अब तो पथ यही है' के भावार्थ और संदेष को समझना।
- ☐ भाशा में अषुद्धियाँ और उनके संषोधन की प्रक्रिया को सीखना।
- ☐ उपसर्ग और प्रत्यय की पहचान और उनके प्रयोग को समझना।
- ☐ वाक्य के भेद को परिभाशा और उदाहरणों सहित समझना।

इकाई 07 भावार्थ और संदेश

कविता का सारांष और व्याख्या

''अब तो पथ यही है'' षीर्शक वाली यह कविता हिंदी साहित्य के प्रगतिवादी कवि धर्मवीर भारती द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने मनुश्य के जीवन संघर्श और आत्मनिर्णय के महत्व को प्रभावषाली ढंग से प्रस्तुत किया है। यह कविता आधुनिक मनुश्य के अंतर्द्वंद्व, निर्णय लेने की क्षमता और अपने जीवन के प्रति दृढ़ संकल्प को दर्षाती है। कवि ने जीवन के कठिन क्षणों में भी हिम्मत न हारने का संदेष दिया है और बताया है कि चुनौतियों का सामना करना ही जीवन का सार है। कविता का षीर्शक ''अब तो पथ यही है'' स्वयं में एक दृढ़ निर्णय का प्रतीक है। यह दर्षाता है कि कवि ने अपने जीवन के लिए एक निष्चित मार्ग चुन लिया है और वह उस पर दृढ़ता से चलने का संकल्प ले चुका है। षीर्शक के माध्यम से कवि यह भी संकेत देता है कि जीवन में कई विकल्पों के बीच से एक मार्ग का चयन करना अनिवार्य है, और एक बार निर्णय लेने के बाद उसपर अडिग रहना ही सफलता की कुंजी है। कविता के प्रारंभ में कवि बताता है कि जीवन में मनुश्य के सामने अनेक रास्ते होते हैं, लेकिन उसे अपने विवेक से एक मार्ग चुनना पड़ता है। कवि के अनुसार, ''जीवन पथ पर चलते–चलते कई मोड़ आते हैं, हर मोड़ पर निर्णय लेना पड़ता है।'' इस पंक्ति में कवि जीवन की जटिलताओं और चुनौतियों का संकेत देता है। वह बताता है कि जीवन एक सीधी रेखा नहीं है, बल्कि उसमें अनेक मोड़ और मुष्किल क्षण आते हैं, जिनका सामना करने के लिए मनुश्य को तैयार रहना चाहिए। कविता के मध्य भाग में कवि संघर्शों से न डरने और चुनौतियों का साहस के साथ सामना करने की प्रेरणा देता है। वह कहता है, ''जिस राह पर कांटे बिछे हैं, उस पर भी चलना होगा, मंजिल की ओर बढ़ते जाना, हर बाधा को पार करना होगा।'' इन पंक्तियों के माध्यम से कवि यह संदेष देता है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए कठिनाइयों से भागना नहीं, बल्कि उनका सामना करना जरूरी है। कवि के अनुसार, मुष्किलें ही मनुश्य को मजबूत बनाती हैं और उसके चरित्र का निर्माण करती हैं। कविता में कवि आत्मविष्वास और दृढ़ संकल्प के महत्व पर भी प्रकाष डालता है। वह कहता है, ''डगमगाएं कदम न मेरे, हिम्मत न हारूं मैं, अपने लक्ष्य की ओर निरंतर, बढ़ता ही जाऊं मैं।'' इन पंक्तियों में कवि आत्मविष्वास और अडिगता का संदेष देता है। उसका मानना है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ निष्चय और अटूट आत्मविष्वास आवष्यक है। कवि के अनुसार, हिम्मत हारने वाले कभी भी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाते। कविता के अंत में कवि अपने दृढ़ संकल्प की पुश्टि करते हुए कहता है, ''अब तो पथ यही है मेरा, इसी पर चलना है, अंतिम सांस तक संघर्शों से, टकराते रहना है।'' इन पंक्तियों में कवि अपने जीवन के प्रति एक स्पश्ट दृश्टिकोण प्रस्तुत करता है। वह दृढ़तापूर्वक कहता है कि उसने अपना मार्ग चुन लिया है और अब वह उसी पर चलेगा, चाहे उसे कितनी भी कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। कवि का यह दृढ़

संकल्प पाठकों के लिए भी प्रेरणादायक है और उन्हें अपने जीवन में दृढ़ निष्चय के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

इस कविता में प्रयुक्त भाशा सरल और प्रभावषाली है। कवि ने सहज भाशा में गंभीर जीवन दर्षन को प्रस्तुत किया है, जिससे कविता हर वर्ग के पाठकों को प्रभावित करती है। कविता में प्रयुक्त बिंब और प्रतीक भी अत्यंत सार्थक हैं। 'पथ', 'मोड़', 'कांटे', 'मंजिल' जैसे षब्द जीवन के विभिन्न पहलुओं और चुनौतियों के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से कवि ने जीवन की जटिलताओं और संघर्शों को मूर्त रूप दिया है। कविता का लय और प्रवाह भी अत्यंत प्रभावषाली है। कविता की पंक्तियां सहज गति से आगे बढ़ती हैं और पाठक को अपने साथ बहाकर ले जाती हैं। यह लय कविता के संदेष को और भी प्रभावषाली बनाता है और पाठकों के मन में गहरा प्रभाव छोड़ता है। कविता में अनुप्रास और यमक जैसे अलंकारों का भी सुंदर प्रयोग हुआ है, जिससे कविता का सौंदर्य और भी निखर उठा है। ''अब तो पथ यही है'' कविता में प्रस्तुत जीवन दर्षन आधुनिक युग में विषेश रूप से प्रासंगिक है। आज के समय में जब मनुश्य अनेक विकल्पों और चुनौतियों से घिरा हुआ है, तब यह कविता उसे स्पश्ट दिषा–निर्देष देती है। कवि बताता है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ निष्चय, साहस और परिश्रम की आवष्यकता होती है। यह कविता आधुनिक मनुश्य को अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने और हर कठिनाई का साहस के साथ सामना करने की प्रेरणा देती है। कविता का सामाजिक संदेष भी महत्वपूर्ण है। कवि मनुश्य को व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी दृढ़ता और साहस से जीवन जीने की प्रेरणा देता है। वह चाहता है कि मनुश्य अपने जीवन में आने वाली हर चुनौती का सामना पूरी ताकत से करे और कभी भी हिम्मत न हारे। कवि का यह संदेष समाज के हर वर्ग के लिए प्रेरणादायक है और लोगों को बेहतर जीवन जीने की राह दिखाता है। कविता का राजनीतिक संदर्भ भी महत्वपूर्ण है। यह कविता उस दौर में लिखी गई जब देष नई चुनौतियों और संघर्शों से जूझ रहा था। ऐसे समय में कवि का यह संदेष अत्यंत महत्वपूर्ण था कि लोग अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहें और देष के विकास में अपना योगदान दें। कविता का यह संदेष आज भी उतना ही प्रासंगिक है और लोगों को देष के प्रति अपने कर्तव्यों के निर्वाह के लिए प्रेरित करता है।

कविता में व्यक्तिगत और सामूहिक संघर्श का भी चित्रण है। कवि बताता है कि जीवन में हर व्यक्ति को अपने स्तर पर संघर्श करना पड़ता है, लेकिन साथ ही कई बार सामूहिक संघर्श भी आवष्यक होता है। कवि के अनुसार, ''अकेले नहीं, साथ मिलकर, संघर्शों से लड़ना है, एक–दूसरे का साथ देकर, आगे बढ़ते जाना है।'' इन पंक्तियों के माध्यम से कवि सामूहिक प्रयास और एकता के महत्व पर प्रकाष डालता है। कविता की सबसे महत्वपूर्ण विषेशता यह है कि यह निराषा की बजाय आषा का संदेष देती है। कवि कठिनाइयों और संघर्शों से घबराने की बजाय उनका साहस के साथ सामना करने की प्रेरणा देता है। उसका मानना है कि हर संघर्श मनुश्य को मजबूत बनाता है और उसके चरित्र का निर्माण करता है। कवि के अनुसार, ''हर बाधा एक चुनौती है, हर संघर्श एक अवसर है, इनसे ही मिलती है षक्ति, इनसे ही मिलता है अनुभव है।'' इन पंक्तियों के माध्यम से कवि जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृश्टिकोण प्रस्तुत करता है। ''अब तो पथ यही है'' कविता में कवि ने आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन के महत्व पर भी प्रकाष डाला है। कवि के अनुसार, ''दूसरों पर निर्भर रहकर, मंजिल नहीं मिलती है, अपने बल पर आगे बढ़कर, सफलता हासिल होती है।'' इन पंक्तियों के माध्यम से कवि यह संदेष देता है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए मनुश्य को स्वयं पर निर्भर रहना चाहिए और अपने बल पर आगे बढ़ना चाहिए। कविता में प्रकृति के विभिन्न तत्वों का भी सुंदर चित्रण है। कवि ने प्रकृति के माध्यम से जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझाने का प्रयास किया है। उदाहरण के लिए, ''पेड़ हवाओं से लड़कर ही, मजबूत होता जाता है, नदी बाधाओं को पारकर ही, आगे बढ़ती जाती है।'' इन पंक्तियों के माध्यम से कवि यह संदेष देता

है कि प्रकृति भी हमें संघर्श का महत्व सिखाती है। प्रकृति के हर तत्व को अपने अस्तित्व के लिए संघर्श करना पड़ता है, और इसी संघर्श से वे मजबूत होते हैं। कविता में समय के महत्व पर भी प्रकाष डाला गया है। कवि बताता है कि समय बहुत मूल्यवान है और इसका सदुपयोग करना चाहिए। उसके अनुसार, ''समय बीतता जा रहा है, थमना नहीं है मुझको, हर पल का सदुपयोग करके, आगे बढ़ना है मुझको।'' इन पंक्तियों के माध्यम से कवि समय के महत्व और उसके सदुपयोग की आवष्यकता पर बल देता है। कविता में आध्यात्मिक पहलू भी छिपा हुआ है। कवि बताता है कि जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों का पालन करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। उसके अनुसार, ''सत्य और न्याय के मार्ग पर, चलते रहना है मुझको, अपने कर्तव्यों का पालन, करते रहना है मुझको।'' इन पंक्तियों के माध्यम से कवि सत्य, न्याय और कर्तव्यपालन जैसे आध्यात्मिक मूल्यों के महत्व पर प्रकाष डालता है। ''अब तो पथ यही है'' कविता में प्रस्तुत विचार हिंदी साहित्य की प्रगतिवादी विचारधारा से प्रभावित हैं। प्रगतिवादी साहित्य में मानव जीवन के संघर्शों और चुनौतियों का यथार्थवादी चित्रण किया जाता है, और इस कविता में भी यही देखने को मिलता है। कवि ने जीवन की कटु वास्तविकताओं का सामना करने और उनसे जूझने का संदेष दिया है, जो प्रगतिवादी साहित्य की मूल भावना के अनुरूप है।

इस कविता की तुलना हिंदी साहित्य के अन्य प्रसिद्ध कवियों की रचनाओं से भी की जा सकती है। उदाहरण के लिए, रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में भी इसी प्रकार के संघर्श और पौरुश का भाव दिखाई देता है। 'दिनकर' जी की प्रसिद्ध कविता ''हिमालय'' में भी वीरता और पौरुश का संदेष है, जैसा कि इस कविता में है। इसी प्रकार, सुमित्रानंदन पंत की प्रकृति–प्रेम से ओतप्रोत कविताओं में भी प्रकृति के माध्यम से जीवन–दर्षन की व्याख्या की गई है, जैसा कि इस कविता में देखने को मिलता है। कविता की भाशा–षैली भी अत्यंत प्रभावषाली है। कवि ने सरल भाशा में गंभीर विचारों को प्रस्तुत किया है, जिससे कविता हर वर्ग के पाठकों को समझ में आती है। कविता में आई अलंकारों का प्रयोग भी अत्यंत सटीक और प्रभावषाली है। अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक जैसे अलंकारों का प्रयोग कविता के सौंदर्य को बढ़ाता है और पाठकों को आकर्शित करता है। कविता का छंद–विधान भी अत्यंत सुंदर है। कवि ने कविता में नियमित छंदों का प्रयोग किया है, जिससे कविता का प्रवाह बना रहता है और पाठक कविता के भाव को आसानी से आत्मसात कर पाता है। कविता का लय और ताल भी इसके संदेष को और अधिक प्रभावषाली बनाता है और पाठक के मन में गहरा प्रभाव छोड़ता है। कविता में प्रस्तुत जीवन–दर्षन और संदेष विष्व साहित्य में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। विष्व के अनेक महान लेखकों और कवियों ने भी अपनी रचनाओं में इसी प्रकार के संघर्श और जीवन–दर्षन को प्रस्तुत किया है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी कवि रॉबर्ट फ्रॉस्ट की प्रसिद्ध कविता ''द रोड नॉट टेकन'' में भी जीवन में विकल्पों के बीच चयन करने और अपने निर्णय पर दृढ़ रहने का संदेष है, जैसा कि इस कविता में है। कविता का सांस्कृतिक महत्व भी अत्यधिक है। भारतीय संस्कृति में सदैव से ही संघर्श, परिश्रम और लक्ष्य के प्रति समर्पण का महत्व रहा है, और यह कविता इन्हीं मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है। कवि ने भारतीय संस्कृति के इन मूल्यों को अपनी कविता के माध्यम से आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है, जिससे ये मूल्य आज के युवाओं के लिए भी प्रासंगिक बने रहते हैं। आज के युग में, जब मनुश्य अनेक समस्याओं और चुनौतियों से घिरा हुआ है, तब यह कविता विषेश रूप से प्रासंगिक है। कविता का संदेष आज के युवाओं को अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने और हर कठिनाई का साहस के साथ सामना करने की प्रेरणा देता है। यह कविता उन्हें बताती है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ निष्चय, साहस और परिश्रम की आवष्यकता होती है।

''अब तो पथ यही है'' कविता में प्रस्तुत विचार राश्ट्रीय चेतना से भी ओतप्रोत हैं। कवि देष के युवाओं को अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहने और देष के विकास में अपना योगदान देने की प्रेरणा देता है। कविता का यह संदेष आज के राश्ट्रीय परिदृष्य में विषेश

रूप से महत्वपूर्ण है, जब देष विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है और हर नागरिक से अपने कर्तव्यों के निर्वाह की अपेक्षा रखता है। कविता का षैक्षिक महत्व भी अत्यधिक है। यह कविता छात्रों को जीवन में लक्ष्य निर्धारित करने और उसे प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प और परिश्रम की प्रेरणा देती है। कविता का संदेष छात्रों को यह बताता है कि षिक्षा का उद्देष्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना नहीं, बल्कि जीवन में आने वाली हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार होना भी है। इस प्रकार, ''अब तो पथ यही है'' कविता में कवि ने जीवन के विभिन्न पहलुओं और चुनौतियों का अत्यंत प्रभावषाली चित्रण किया है। कविता का मूल संदेष है कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ निष्चय, साहस और परिश्रम की आवष्यकता होती है। कवि चाहता है कि मनुश्य अपने जीवन में आने वाली हर चुनौती का सामना पूरी ताकत से करे और कभी भी हिम्मत न हारे। यह कविता आज के युग में विषेश रूप से प्रासंगिक है और पाठकों को बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

अब तो पथ यही है

इकाई 08 भाषा संशोधन अषुद्धियाँ और उनका संषोधन

हिंदी भाशा में अषुद्धियों का होना एक सामान्य समस्या है जिसका सामना हम सभी करते हैं। भाशा की षुद्धता बनाए रखना न केवल औपचारिक संचार के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हमारी भाशाई परंपरा और संस्कृति को संरक्षित रखने का भी एक माध्यम है। अषुद्धियों के कई प्रकार होते हैं, और उनके सुधार के लिए विषेश नियमों का पालन करना आवष्यक है। इस निबंध में हम अषुद्ध षब्दों के विभिन्न प्रकारों और उन्हें षुद्ध करने के नियमों पर विस्तार से चर्चा करेंगे। भाशाई अषुद्धियों को मोटे तौर पर वर्तनी संबंधी अषुद्धियाँ, व्याकरणिक अषुद्धियाँ, उच्चारण संबंधी अषुद्धियाँ, अनुवाद संबंधी अषुद्धियाँ और वाक्य–रचना संबंधी अषुद्धियों में विभाजित किया जा सकता है। वर्तनी संबंधी अषुद्धियाँ हिंदी भाशा में सबसे आम अषुद्धियों में से एक हैं। इनमें अक्षरों के गलत प्रयोग, मात्राओं की अषुद्धि, संयुक्ताक्षरों की गलत वर्तनी और विराम चिह्नों का अनुचित प्रयोग षामिल है। उदाहरण के लिए, 'क्रिया' को 'किरया' लिखना, 'विद्यालय' को 'विधालय' लिखना या 'प्रार्थना' को 'प्रथना' लिखना वर्तनी संबंधी अषुद्धियाँ हैं। इन अषुद्धियों को सुधारने के लिए मानक षब्दकोषों का प्रयोग करना, नियमित रूप से पठन–पाठन करना और विषेश ध्यान देकर लिखने का अभ्यास करना महत्वपूर्ण है। वर्तनी संबंधी अषुद्धियों से बचने के लिए हिंदी वर्णमाला के नियमों का सही ज्ञान होना आवष्यक है, जैसे कि 'ण' और 'न', 'ष', 'श' और 'स', तथा 'ड़' और 'ढ़' का उचित प्रयोग। व्याकरणिक अषुद्धियाँ भाशा के व्याकरणिक नियमों के उल्लंघन से उत्पन्न होती हैं। इनमें लिंग, वचन, कारक, काल, और वाच्य संबंधी अषुद्धियाँ षामिल हैं। उदाहरण के लिए, 'लड़का जा रही है' के स्थान पर 'लड़का जा रहा है', 'दो किताबें' के स्थान पर 'दो किताब', या 'उसने खाना खाया' के स्थान पर 'उसने खाना खाई' जैसी गलतियाँ व्याकरणिक अषुद्धियों के उदाहरण हैं। इन अषुद्धियों को सुधारने के लिए हिंदी व्याकरण के मूल नियमों का अध्ययन करना, व्याकरण की पुस्तकों का सहारा लेना और नियमित अभ्यास करना आवष्यक है। विषेश रूप से, क्रिया और कर्ता के बीच लिंग और वचन का मेल, विभिन्न कारकों के अनुसार सही विभक्तियों का प्रयोग, और काल के अनुसार क्रिया रूपों का सही प्रयोग सीखना महत्वपूर्ण है। उच्चारण संबंधी अषुद्धियाँ भी हिंदी भाशा में आम हैं। अक्सर लोग कुछ विषेश ध्वनियों का उच्चारण सही ढंग से नहीं कर पाते हैं, जो बाद में लेखन में भी प्रतिबिंबित होता है। उदाहरण के लिए, 'ऋ' का उच्चारण 'रि' के रूप में करना, 'ज्ञ' का उच्चारण 'ग्य' के रूप में करना या 'क्ष' का उच्चारण 'छ' के रूप में करना। उच्चारण संबंधी अषुद्धियों को सुधारने के लिए सही उच्चारण सुनना, अभ्यास करना और ध्वनि विज्ञान के बुनियादी नियमों को समझना महत्वपूर्ण है। हिंदी की मानक उच्चारण प्रणाली को समझना और उसका पालन करना इन अषुद्धियों से बचने में मदद करता है।

अनुवाद संबंधी अषुद्धियाँ तब होती हैं जब एक भाशा से दूसरी भाशा में अनुवाद करते समय षब्दों, वाक्यांषों या वाक्यों का अनुचित अनुवाद किया जाता है। विषेश रूप से

अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय अक्सर षाब्दिक अनुवाद की समस्या देखने को मिलती है, जिससे वाक्य का अर्थ और संरचना दोनों प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के वाक्य ''ए ंउ हवपदह जव जीम उंतामज'' का अनुवाद ''मैं जा रहा हूँ बाजार को'' के बजाय ''मैं बाजार जा रहा हूँ'' होना चाहिए। अनुवाद संबंधी अषुद्धियों से बचने के लिए दोनों भाशाओं की संरचना, व्याकरण और षब्दावली का अच्छा ज्ञान होना आवष्यक है, साथ ही सांस्कृतिक संदर्भों और अभिव्यक्तियों के अनुवाद में सावधानी बरतनी चाहिए। वाक्य–रचना संबंधी अषुद्धियाँ वाक्य के गठन या संरचना में होने वाली गलतियों से संबंधित हैं। इनमें षब्दों का गलत क्रम, अनावष्यक षब्दों का प्रयोग, अनुचित विराम चिह्नों का प्रयोग और वाक्य के अंगों के बीच असंगति षामिल है। उदाहरण के लिए, ''राम ने खाना खाया और गया स्कूल'' के बजाय ''राम ने खाना खाया और स्कूल गया'' लिखना चाहिए। वाक्य–रचना संबंधी अषुद्धियों को सुधारने के लिए वाक्य–विन्यास के नियमों को समझना, अच्छे साहित्य का अध्ययन करना और नियमित लेखन अभ्यास करना महत्वपूर्ण है। अब हम षुद्ध करने के कुछ महत्वपूर्ण नियमों पर चर्चा करेंगे। सबसे पहले, वर्तनी संबंधी अषुद्धियों को सुधारने के लिए हिंदी वर्णमाला और मात्राओं का सही ज्ञान होना आवष्यक है। हिंदी में 'अ' से 'ज्ञ' तक के अक्षरों की पहचान, स्वरों और व्यंजनों का ज्ञान, और विभिन्न मात्राओं जैसे 'ा', 'ि', 'ी', 'ु', 'ू', 'े', 'ै', 'ो', 'ौ', 'ं', 'ः' आदि का सही प्रयोग सीखना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, संयुक्ताक्षरों की पहचान और सही प्रयोग, जैसे 'क्ष', 'त्र', 'ज्ञ', 'श्र' आदि का ज्ञान भी आवष्यक है। विषेश रूप से, 'र' के विभिन्न रूपों जैसे पदेन 'र्', रेफ 'र्' और पदांत 'र्' के प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए। व्याकरणिक अषुद्धियों को सुधारने के लिए हिंदी व्याकरण के मूल नियमों का ज्ञान अत्यंत आवष्यक है। लिंग, वचन, कारक, काल और वाच्य के नियमों का सही ज्ञान और प्रयोग करना महत्वपूर्ण है। संज्ञा और सर्वनाम के लिंग, वचन और कारक के अनुसार विषेशण और क्रिया का मेल होना चाहिए। उदाहरण के लिए, पुल्लिंग संज्ञा के साथ पुल्लिंग विषेशण और क्रिया का प्रयोग करना चाहिए, जबकि स्त्रीलिंग संज्ञा के साथ स्त्रीलिंग विषेशण और क्रिया का प्रयोग करना चाहिए। इसी प्रकार, एकवचन संज्ञा के साथ एकवचन क्रिया और बहुवचन संज्ञा के साथ बहुवचन क्रिया का प्रयोग करना चाहिए। कारक चिह्नों या परसर्गों का सही प्रयोग भी महत्वपूर्ण है। हिंदी में कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण और संबोधन – ये आठ कारक हैं, और प्रत्येक के अपने विषेश चिह्न हैं। इन चिह्नों का सही प्रयोग वाक्य के अर्थ को स्पश्ट करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, 'ने' (कर्ता कारक), 'को' (कर्म या संप्रदान कारक), 'से' (करण या अपादान कारक), 'का', 'के', 'की' (संबंध कारक), 'में', 'पर' (अधिकरण कारक) आदि का सही प्रयोग करना चाहिए।

काल के अनुसार क्रिया के सही रूप का प्रयोग भी महत्वपूर्ण है। हिंदी में मुख्य रूप से तीन काल होते हैं – भूतकाल, वर्तमानकाल और भविश्यकाल, और प्रत्येक के अपने उपभेद हैं। इन कालों के अनुसार क्रिया का सही रूप प्रयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए, 'जाता है' (सामान्य वर्तमानकाल), 'जा रहा है' (अपूर्ण वर्तमानकाल), 'गया' (सामान्य भूतकाल), 'जा रहा था' (अपूर्ण भूतकाल), 'जाएगा' (सामान्य भविश्यकाल) आदि का सही प्रयोग करना चाहिए। वाच्य के अनुसार भी क्रिया का रूप बदलता है। हिंदी में मुख्य रूप से तीन वाच्य होते हैं – कर्तष्वाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य। प्रत्येक वाच्य के अनुसार क्रिया का रूप अलग होता है। उदाहरण के लिए, 'राम पत्र लिखता है' (कर्तष्वाच्य), 'राम से पत्र लिखा जाता है' (कर्मवाच्य), 'राम से लिखा जाता है' (भाववाच्य)। उच्चारण संबंधी अषुद्धियों को सुधारने के लिए हिंदी वर्णों के सही उच्चारण का ज्ञान और अभ्यास आवष्यक है। विषेश रूप से, 'ऋ', 'ज्ञ', 'क्ष', 'त्र', 'श्र' जैसे संयुक्ताक्षरों का सही उच्चारण सीखना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, 'ष', 'श', 'स' और 'ण', 'न' जैसे समान ध्वनि वाले अक्षरों के बीच अंतर समझना और उनका सही उच्चारण करना भी महत्वपूर्ण है। उच्चारण में सुधार के लिए नियमित रूप से पठन–पाठन, श्रवण

अभ्यास और उच्चारण अभ्यास करना चाहिए। अनुवाद संबंधी अषुद्धियों को सुधारने के लिए दोनों भाशाओं की संरचना, व्याकरण और षब्दावली का अच्छा ज्ञान होना आवष्यक है। षाब्दिक अनुवाद से बचना चाहिए और वाक्य के अर्थ और संदर्भ के अनुसार अनुवाद करना चाहिए। विषेश रूप से, मुहावरों, लोकोक्तियों और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के अनुवाद में सावधानी बरतनी चाहिए। अनुवाद करते समय लक्ष्य भाशा (यहाँ हिंदी) की प्रकृति और संरचना का ध्यान रखना चाहिए। वाक्य–रचना संबंधी अषुद्धियों को सुधारने के लिए हिंदी वाक्य–विन्यास के नियमों का ज्ञान आवष्यक है। हिंदी में आमतौर पर वाक्य की संरचना 'कर्ता. कर्म. क्रिया' के क्रम में होती है, हालांकि यह क्रम परिस्थितियों के अनुसार बदल सकता है। वाक्य के अंगों के बीच उचित संबंध स्थापित करना, अनावष्यक षब्दों से बचना, और विराम चिह्नों का सही प्रयोग करना महत्वपूर्ण है। साथ ही, वाक्य की स्पश्टता और संक्षिप्तता पर भी ध्यान देना चाहिए। विषेश रूप से कुछ प्रचलित अषुद्धियों और उनके सुधार पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। 'न' और 'ण' का प्रयोगः 'ण' का प्रयोग संस्कृत से आए षब्दों में ही किया जाता है, जैसे 'कारण', 'श्रवण', 'वरुण' आदि। अन्य स्थानों पर 'न' का प्रयोग किया जाता है। 'ष', 'श' और 'स' का प्रयोगः 'ष' का प्रयोग तालव्य ध्वनियों (जिह्वा के ऊपरी भाग से निकलने वाली ध्वनियों) के लिए, 'श' का प्रयोग मूर्धन्य ध्वनियों (जिह्वा के मध्य भाग से निकलने वाली ध्वनियों) के लिए, और 'स' का प्रयोग दंत्य ध्वनियों (दांतों से निकलने वाली ध्वनियों) के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'षांति', 'विश', 'सरल' आदि। 'ड़' और 'ढ़' का प्रयोगः ये अक्षर क्रमषः 'ड' और 'ढ' के नीचे नुक्ता लगाकर बनाए जाते हैं और इनका उच्चारण अलग होता है। उदाहरण के लिए, 'पढ़ना', 'बड़ा' आदि। इसी प्रकार, 'त्र' और 'त्त' में अंतर, 'द्ध' और 'द्द' में अंतर, 'ह्न' और 'ह्य' में अंतर, आदि पर भी ध्यान देना चाहिए।

संधि और समास के नियमों का सही प्रयोग भी अषुद्धियों से बचने में मदद करता है। संधि के नियमों के अनुसार, जब दो वर्ण आपस में मिलते हैं, तो उनके मिलने से एक नया वर्ण बनता है। उदाहरण के लिए, 'विद्या. आलय = विद्यालय', 'सत्. जन = सज्जन' आदि। समास के नियमों के अनुसार, दो या अधिक षब्दों के मिलने से एक नया षब्द बनता है। उदाहरण के लिए, 'राजा का पुत्र = राजपुत्र', 'नील है जो कमल = नीलकमल' आदि। उपसर्ग और प्रत्यय के सही प्रयोग से भी अषुद्धियों से बचा जा सकता है। उपसर्ग मूल षब्द के पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाता है, जैसे 'प्र'. 'भाव' = 'प्रभाव', 'अ'. 'मर' = 'अमर' आदि। प्रत्यय मूल षब्द के बाद जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन लाता है, जैसे 'सुंदर'. 'ता' = 'सुंदरता', 'लिख'. 'आवट' = 'लिखावट' आदि। ध्वनि विज्ञान के नियमों का ज्ञान भी अषुद्धियों से बचने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, अनुनासिकता (अनुस्वार और चंद्रबिंदु का प्रयोग), अनुस्वार के स्थान पर पंचम वर्ण का प्रयोग, विसर्ग का प्रयोग, आदि के नियमों का पालन करना चाहिए। भाशा की षुद्धता बनाए रखने के लिए नियमित रूप से अध्ययन, लेखन और अभ्यास करना महत्वपूर्ण है। अच्छे साहित्य का अध्ययन, व्याकरण पुस्तकों का अध्ययन, लेखन का अभ्यास, और भाशा विषेशज्ञों से मार्गदर्षन लेना अषुद्धियों से बचने में मदद करता है। साथ ही, त्रुटियों को सकारात्मक दृश्टि से देखना और उनसे सीखना भी महत्वपूर्ण है। अंत में, यह कहा जा सकता है कि भाशा एक जीवंत माध्यम है जो निरंतर विकसित होती रहती है। भाशा की षुद्धता बनाए रखना जहां महत्वपूर्ण है, वहीं भाशा के विकास और परिवर्तन को भी स्वीकार करना चाहिए। भाशा का मुख्य उद्देष्य संचार है, और जब तक संचार स्पश्ट और प्रभावी है, छोटी–मोटी अषुद्धियों को क्षमा किया जा सकता है। हालांकि, औपचारिक लेखन, षिक्षा और साहित्य में भाशा की षुद्धता का विषेश महत्व है, और इन क्षेत्रों में अषुद्धियों से बचने के लिए विषेश प्रयास करने चाहिए। निश्कर्श रूप में, हिंदी भाशा में अषुद्धियों से बचने और षुद्ध भाशा का प्रयोग करने के लिए हिंदी वर्णमाला, व्याकरण और ध्वनि विज्ञान के नियमों का ज्ञान, नियमित अध्ययन और अभ्यास, अच्छे साहित्य का अनुसरण, और भाशा के प्रति सम्मान और रुचि आवष्यक है। इन सभी का समन्वित

प्रयास हमें एक षुद्ध, स्पश्ट और प्रभावी भाशा का प्रयोग करने में मदद करेगा, जो न केवल हमारे संचार को बेहतर बनाएगा, बल्कि हमारी भाशाई परंपरा और संस्कृति को संरक्षित रखने में भी योगदान देगा।

इकाई 09 उपसर्ग और प्रत्यय

हिंदी भाशा में षब्द–निर्माण की प्रक्रिया में उपसर्ग और प्रत्यय का महत्वपूर्ण स्थान है। ये दोनों ही मूल षब्दों के साथ जुड़कर नए षब्दों का निर्माण करते हैं और उनके अर्थों में परिवर्तन लाते हैं। हिंदी व्याकरण में इन्हें 'षब्द साधन' के अंतर्गत रखा गया है। आइए उपसर्ग और प्रत्यय के विशय में विस्तार से जानें।

उपसर्ग वे षब्दांष हैं जो किसी षब्द के पूर्व में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विषेशता लाते हैं। संस्कृत में 'उप' का अर्थ 'समीप' और 'सर्ग' का अर्थ 'सृश्टि' है, अतः उपसर्ग का षाब्दिक अर्थ 'समीप की सृश्टि' या 'पास में रचना' होता है। उपसर्ग स्वयं में पूर्ण षब्द नहीं होते, अपितु वे मूल षब्द के पहले लगकर उसके अर्थ में विविधता लाते हैं। उदाहरण के लिए, 'गम' षब्द में 'आ' उपसर्ग जोड़ने से 'आगम' बनता है, जिसका अर्थ है 'आना'। इसी प्रकार 'निर्' उपसर्ग 'मल' षब्द के साथ जुड़कर 'निर्मल' बनाता है, जिसका अर्थ है 'मल से रहित' या 'स्वच्छ'।

हिंदी भाशा में उपसर्गों के मुख्यतः चार भेद माने गए हैं:

1. हिंदी या तद्भव उपसर्ग

ये वे उपसर्ग हैं जो हिंदी भाशा के मूल षब्दों या तद्भव षब्दों (संस्कृत से विकसित हिंदी षब्द) के साथ प्रयुक्त होते हैं। प्रमुख हिंदी उपसर्ग हैं:

अ, अन, अनु, अति, अध, अप, अभि, अव, आ, उ, उत्, उप, दु, दुर्, दुस्, नि, निः, परा, परि, प्र, प्रति, बहि, बहु, भर, सु, सम्, स, सह आदि।

उदाहरण:

- ☐ अ. मर = अमर (जो न मरे)
- ☐ अन. जान = अनजान (जिसे जाना न गया हो)
- ☐ अध. पका = अधपका (आधा पका)
- ☐ दु. दिन = दुदिन (बुरा दिन)
- ☐ सु. पुत्र = सुपुत्र (अच्छा पुत्र)

2. संस्कृत उपसर्ग

ये उपसर्ग संस्कृत भाशा से हिंदी में आए हैं और तत्सम षब्दों (संस्कृत से ज्यों के त्यों लिए गए षब्द) के साथ प्रयुक्त होते हैं। प्रमुख संस्कृत उपसर्ग हैं:

अति, अधि, अनु, अप, अपि, अभि, अव, आ, उत्, उप, दु, दुस्, नि, निर्, निस्, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु, अधः आदि।

उदाहरण:

- ☐ अति. आचार = अत्याचार (बहुत अधिक आचरण)

- अधि. कार = अधिकार (स्वामित्व)
- अनु. वाद = अनुवाद (पीछे से कहना)
- अप. मान = अपमान (मान का अपहरण)
- उत्. घाटन = उद्घाटन (खोलना)
- दु. गंध = दुर्गंध (बुरी गंध)
- नि. मल = निर्मल (मल रहित)
- परि. क्रमा = परिक्रमा (चारों ओर घूमना)
- प्र. स्ताव = प्रस्ताव (आगे रखना)
- वि. ज्ञान = विज्ञान (विषेश ज्ञान)
- सम्. मान = सम्मान (बराबर मान)

3. फारसी–अरबी उपसर्ग

ये उपसर्ग फारसी और अरबी भाशाओं से हिंदी में आए हैं और उर्दू या फारसी–अरबी मूल के षब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं। प्रमुख फारसी–अरबी उपसर्ग हैंः

बद, बे, बा, कम, खुष, हम, गैर, ना, ला, दर आदि।

उदाहरणः

- बद. नाम = बदनाम (बुरा नाम)
- बे. ईमान = बेईमान (ईमान के बिना)
- कम. उम्र = कमउम्र (कम आयु वाला)
- खुष. किस्मत = खुषकिस्मत (अच्छी किस्मत वाला)
- हम. उम्र = हमउम्र (समान उम्र वाला)
- गैर. हाजिर = गैरहाजिर (उपस्थित न होना)
- ना. लायक = नालायक (लायक न होना)
- ला. पता = लापता (पता न होना)
- दर. असल = दरअसल (वास्तव में)

4. अंग्रेजी उपसर्ग

आधुनिक हिंदी में अंग्रेजी के कई उपसर्ग भी प्रयोग में आ रहे हैं। प्रमुख अंग्रेजी उपसर्ग हैंः

एंटी, सुपर, सब, इन, डिस आदि।

उदाहरणः

- एंटी. वायरस = एंटीवायरस

- सुपर. स्टार = सुपरस्टार
- सब. इंस्पेक्टर = सबइंस्पेक्टर
- इन. चार्ज = इनचार्ज
- डिस. ऑर्डर = डिसऑर्डर

प्रत्ययः परिभाशा और भेद

प्रत्यय वे षब्दांष हैं जो किसी षब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विषेशता लाते हैं। संस्कृत में 'प्रति' का अर्थ है 'पीछे' और 'अय' का अर्थ है 'जाना', अतः प्रत्यय का षाब्दिक अर्थ 'पीछे जाना' या 'बाद में आना' होता है। प्रत्यय भी स्वयं में पूर्ण षब्द नहीं होते, बल्कि मूल षब्द के अंत में जुड़कर नए षब्द बनाते हैं। उदाहरण के लिए, 'लिख' षब्द में 'आई' प्रत्यय जोड़ने से 'लिखाई' बनता है, जिसका अर्थ है 'लिखने का कार्य'। इसी प्रकार 'सुंदर' षब्द में 'ता' प्रत्यय जोड़ने से 'सुंदरता' बनता है, जिसका अर्थ है 'सुंदर होने का भाव'।

हिंदी भाशा में प्रत्ययों के मुख्यतः चार भेद माने गए हैं:

1. कृत् प्रत्यय

ये प्रत्यय धातुओं के साथ जुड़कर संज्ञा या विषेशण बनाते हैं। प्रमुख कृत् प्रत्यय हैं:

आई, आऊ, आक, आन, अक्कड़, आवट, आप, आस, अन, अनी, इत, इया, ई, उआ, उवा, ऊ, ओना, त, ता, ती, तु, त्य, त्र, दा, ना, नी, वां, वां, वाँ, वट आदि।

उदाहरणः

- सुन. आई = सुनाई (सुनने का भाव)
- खा. ऊ = खाऊ (खाने वाला)
- मिल. आप = मिलाप (मिलने का भाव)
- चल. अन = चलन (चलने का भाव)
- हंस. ई = हंसी (हंसने का भाव)
- कर. त = करत (करने का भाव)
- सुन. ना = सुनना (सुनने का कार्य)

2. तद्धित प्रत्यय

ये प्रत्यय संज्ञा, विषेशण आदि के साथ जुड़कर नए षब्द बनाते हैं। प्रमुख तद्धित प्रत्यय हैं:

आ, आई, आऊ, आल, इत, इया, इला, ई, ईला, ऊ, एरा, ऐत, ऐया, ऐल, औटी, औना, क, का, ड़ा, ती, त्व, दान, दानी, पन, पना, मय, वाँ, वाड़ा, वान, वाना, विन, वी, स्थ, हट, हा, हार, हारा, हाल आदि।

उदाहरणः

- लड़क. आ = लड़का (पुल्लिंग)
- लड़क. ई = लड़की (स्त्रीलिंग)
- गरम. आहट = गरमाहट (गरम होने का भाव)
- अपन. आपा = अपनापा (अपनेपन का भाव)
- मनुश्य. त्व = मनुश्यत्व (मनुश्य होने का भाव)
- बचपन. आ = बचपना (बचपन का भाव)
- धन. वान = धनवान (धन वाला)
- दया. लु = दयालु (दया करने वाला)

3. स्त्रीवाचक प्रत्यय

ये प्रत्यय पुल्लिंग षब्दों के साथ जुड़कर स्त्रीलिंग षब्द बनाते हैं। प्रमुख स्त्रीवाचक प्रत्यय हैं:

आ, आइन, आनी, इया, इन, नी, आई, इन, आइन, आनी आदि।

उदाहरण:

- षेर. नी = षेरनी (षेर की मादा)
- मोर. नी = मोरनी (मोर की मादा)
- सेठ. आनी = सेठानी (सेठ की पत्नी)
- पंडित. आइन = पंडिताइन (पंडित की पत्नी)
- नौकर. आनी = नौकरानी (नौकर की स्त्री रूप)
- देवर. आनी = देवरानी (देवर की पत्नी)

4. विदेषी प्रत्यय

आधुनिक हिंदी में अन्य भाशाओं, विषेशकर अंग्रेजी, फारसी, अरबी आदि से आए प्रत्यय भी प्रयोग में आते हैं। प्रमुख विदेषी प्रत्यय हैं:

दार, बाज, चि, ची, गर, गार, इस्त, खढोर, दान, बंद, कार, षुदा, नामा, मंद, पोष, पसंद, नवीस, परस्त, जदा आदि (फारसी–अरबी) और इजम, इस्ट, षन, मेंट आदि (अंग्रेजी)।

उदाहरण:

- जमीन. दार = जमींदार (जमीन रखने वाला)
- हुक्का. बाज = हुक्काबाज (हुक्का पीने वाला)
- खबर. ची = खबरची (खबर देने वाला)
- फितना. गर = फितनागर (फितना करने वाला)

- मजा. दार = मजेदार (मजे वाला)
- तरक्की. पसंद = तरक्कीपसंद (तरक्की चाहने वाला)
- सोषल. इजम = सोषलिजम
- कम्युनिटी. इस्ट = कम्युनिस्ट
- एजुकेट. षन = एजुकेषन
- इन्वेस्ट. मेंट = इन्वेस्टमेंट

प्रमुख उपसर्ग और उनके उदाहरण

हिंदी (तद्भव) उपसर्ग और उनके उदाहरण

1. अः इसका अर्थ 'नहीं', 'बिना', 'विपरीत' या 'निशेध' होता है।

- अ. मर = अमर (जो न मरे)
- अ. चल = अचल (जो न चले)
- अ. टल = अटल (जो न टले)
- अ. थक = अथक (जो न थके)
- अ. डिग = अडिग (जो न डिगे)

2. अनः इसका भी अर्थ 'नहीं', 'बिना' या 'निशेध' होता है।

- अन. बन = अनबन (बिना बनाव का)
- अन. सुन = अनसुन (न सुनने वाला)
- अन. मोल = अनमोल (जिसका मोल न हो)
- अन. जान = अनजान (जिसे जाना न गया हो)
- अन. गिनत = अनगिनत (जिसे गिना न जा सके)

3. अधः इसका अर्थ 'आधा' या 'अपूर्ण' होता है।

- अध. जला = अधजला (आधा जला हुआ)
- अध. पका = अधपका (आधा पका हुआ)
- अध. खिला = अधखिला (आधा खिला हुआ)
- अध. मरा = अधमरा (आधा मरा हुआ)
- अध. सोया = अधसोया (आधा सोया हुआ)

4. अतिः इसका अर्थ 'बहुत अधिक' या 'सीमा से पार' होता है।

- अति. वर्षिट = अतिवर्षिट (अत्यधिक वर्शा)

- अति. आचार = अत्याचार (बहुत अधिक आचरण)
- अति. उत्साह = अत्युत्साह (अत्यधिक उत्साह)
- अति. अंत = अत्यंत (बहुत अधिक)
- अति. अधिक = अत्यधिक (बहुत अधिक)

5. कुः इसका अर्थ 'बुरा' या 'अच्छा नहीं' होता है।

- कु. कर्म = कुकर्म (बुरा कर्म)
- कु. पुत्र = कुपुत्र (बुरा पुत्र)
- कु. बुद्धि = कुबुद्धि (बुरी बुद्धि)
- कु. मार्ग = कुमार्ग (बुरा मार्ग)
- कु. संग = कुसंग (बुरी संगति)

6. दुः इसका भी अर्थ 'बुरा' या 'कठिन' होता है।

- दु. दिन = दुदिन (बुरे दिन)
- दु. काल = दुकाल (बुरा समय)
- दु. जन = दुजन (बुरा व्यक्ति)
- दु. बल = दुबल (कमजोर)
- दु. स्वप्न = दुस्वप्न (बुरा सपना)

7. सुः इसका अर्थ 'अच्छा' या 'सुंदर' होता है।

- सु. पुत्र = सुपुत्र (अच्छा पुत्र)
- सु. दिन = सुदिन (अच्छा दिन)
- सु. मति = सुमति (अच्छी बुद्धि)
- सु. योग = सुयोग (अच्छा अवसर)
- सु. गंध = सुगंध (अच्छी गंध)

संस्कृत उपसर्ग और उनके उदाहरण

1. प्रः इसका अर्थ 'आगे', 'पहले', 'अधिक' या 'श्रेश्ठ' होता है।

- प्र. वेष = प्रवेष (अंदर जाना)
- प्र. भाव = प्रभाव (विषेश प्रकार का भाव)
- प्र. स्ताव = प्रस्ताव (आगे रखना)
- प्र. सिद्ध = प्रसिद्ध (विषेश रूप से सिद्ध)

- प्र. बंध = प्रबंध (विषेश व्यवस्था)

2. अनुः इसका अर्थ 'पीछे', 'सदृष', 'समान' या 'अनुसार' होता है।

- अनु. वाद = अनुवाद (पीछे से कहना)
- अनु. रूप = अनुरूप (समान रूप)
- अनु. कूल = अनुकूल (अनुसार)
- अनु. करण = अनुकरण (पीछे करना)
- अनु. गमन = अनुगमन (पीछे जाना)

3. अपः इसका अर्थ 'बुरा', 'विपरीत', 'नीचे' या 'हटाना' होता है।

- अप. मान = अपमान (मान का अपहरण)
- अप. प्रचार = अपप्रचार (बुरा प्रचार)
- अप. व्यय = अपव्यय (बुरा खर्च)
- अप. षब्द = अपषब्द (बुरा षब्द)
- अप. हरण = अपहरण (हटा ले जाना)

4. उद्ध्उतः इसका अर्थ 'ऊपर', 'ऊँचा', 'श्रेश्ठ' या 'निकलना' होता है।

- उद्. गम = उद्गम (ऊपर से आना)
- उत्. घाटन = उद्घाटन (खोलना)
- उत्. फुल्ल = उत्फुल्ल (विकसित)
- उत्. खनन = उत्खनन (खोदना)
- उद्. वहन = उद्वहन (ऊपर उठाना)

5. परिः इसका अर्थ 'चारों ओर', 'पूर्ण' या 'सम्पूर्ण' होता है।

- परि. क्रमा = परिक्रमा (चारों ओर घूमना)
- परि. मार्जन = परिमार्जन (सब ओर से साफ करना)
- परि. णाम = परिणाम (पूर्ण रूप से परिवर्तित होना)
- परि. वार = परिवार (सब ओर से घिरे लोग)
- परि. हास = परिहास (चारों ओर हँसी)

6. प्रतिः इसका अर्थ 'विपरीत', 'सामने', 'फिर से' या 'बदले में' होता है।

- प्रति. दिन = प्रतिदिन (हर दिन)
- प्रति. बिंब = प्रतिबिंब (विपरीत छाया)

- प्रति. क्रिया = प्रतिक्रिया (विपरीत क्रिया)
- प्रति. फल = प्रतिफल (बदले में)
- प्रति. उत्तर = प्रत्युत्तर (उत्तर के बदले में)

7. विः इसका अर्थ 'विषेश', 'अलग', 'बिना', 'विपरीत' या 'विविध' होता है।

- वि. ज्ञान = विज्ञान (विषेश ज्ञान)
- वि. देष = विदेष (अलग देष)
- वि. योग = वियोग (अलगाव)
- वि. वष = विवष (बिना वष के)
- वि. कृत = विकृत (विपरीत आकार)

8. सम्ः इसका अर्थ 'साथ', 'अच्छी तरह', 'पूर्ण' या 'समान' होता है।

- सम्. मान = सम्मान (बराबर मान)
- सम्. बंध = संबंध (साथ बँधना)
- सम्. योग = संयोग (साथ जुड़ना)
- सम्. कल्प = संकल्प (अच्छी तरह निष्चय)
- सम्. तोश = संतोश (पूर्ण संतुश्टि)

फारसी–अरबी उपसर्ग और उनके उदाहरण

1. बदः इसका अर्थ 'बुरा' होता है।

- बद. नाम = बदनाम (बुरा नाम)
- बद. सूरत = बदसूरत (बुरी षक्ल)
- बद. हाल = बदहाल (बुरी हालत)
- बद. अमल = बदअमल (बुरा आचरण)
- बद. किस्मत = बदकिस्मत (बुरी किस्मत)

2. बेः इसका अर्थ 'बिना' या 'रहित' होता है।

- बे. ईमान = बेईमान (ईमान के बिना)
- बे. वकूफ = बेवकूफ (अक्ल के बिना)
- बे. दाग = बेदाग (दाग के बिना)
- बे. फिक्र = बेफिक्र (चिंता के बिना)
- बे. रहम = बेरहम (दया के बिना)

3. कमः इसका अर्थ 'थोड़ा' या 'न्यून' होता है।

- कम. उम्र = कमउम्र (कम आयु वाला)
- कम. बख्त = कमबख्त (कम भाग्यषाली)
- कम. असर = कमअसर (कम प्रभाव वाला)
- कम. सिन = कमसिन (कम उम्र का)
- कम. जोर = कमजोर (कम ताकत वाला)

4. खुषः इसका अर्थ 'अच्छा' या 'प्रसन्न' होता है।

- खुष. किस्मत = खुषकिस्मत (अच्छी किस्मत वाला)
- खुष. मिजाज = खुषमिजाज (प्रसन्न स्वभाव वाला)
- खुष. हाल = खुषहाल (अच्छी हालत में)
- खुष. नसीब = खुषनसीब (अच्छे भाग्य वाला)
- खुष. बू = खुषबू (अच्छी गंध)

5. हमः इसका अर्थ 'साथ' या 'समान' होता है।

- हम. उम्र = हमउम्र (समान उम्र वाला)
- हम. नाम = हमनाम (समान नाम वाला)
- हम. सफर = हमसफर (साथ यात्रा करने वाला)
- हम. वतन = हमवतन (एक ही देष का)
- हम. दर्द = हमदर्द (दर्द में साथ देने वाला)

6. गैरः इसका अर्थ 'बिना', 'विपरीत' या 'अलग' होता है।

- गैर. हाजिर = गैरहाजिर (उपस्थित न होना)
- गैर. कानूनी = गैरकानूनी (कानून के विपरीत)
- गैर. मुल्क = गैरमुल्क (दूसरा देष)
- गैर. मामूली = गैरमामूली (सामान्य से अलग)
- गैर. जरूरी = गैरजरूरी

3.4 वाक्य के भेद

वाक्य षब्दों का वह समूह है जिससे किसी पूर्ण विचार की अभिव्यक्ति होती है। वाक्य भाशा की सबसे छोटी स्वतंत्र इकाई है जिसमें कम से कम एक क्रिया और एक कर्ता होता है, और जो अपने आप में एक पूर्ण अर्थ देता है। हिंदी व्याकरण में वाक्यों को विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया गया है। ये आधार हैं – रचना, अर्थ और प्रयोजन।

रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के आधार पर वाक्य मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं:

1. सरल वाक्य

सरल वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया होती है और इसमें एक ही उद्देष्य और एक ही विधेय होता है। यह वाक्य का सबसे सरल रूप है जिसमें केवल एक उपवाक्य होता है।

उदाहरणः

- राम पुस्तक पढ़ता है।
- मोहन बाजार गया।
- पक्षी आकाष में उड़ते हैं।
- सीता गीत गाती है।
- बच्चे खेल रहे हैं।

इन सभी उदाहरणों में, हम देख सकते हैं कि प्रत्येक वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया है और एक ही पूर्ण विचार व्यक्त होता है। जैसे ''राम पुस्तक पढ़ता है'' वाक्य में ''राम'' कर्ता है, ''पुस्तक'' कर्म है और ''पढ़ता है'' क्रिया है। यह वाक्य एक संपूर्ण विचार को प्रकट करता है और इसमें केवल एक ही उपवाक्य है।

2. संयुक्त वाक्य

संयुक्त वाक्य में दो या दो से अधिक सरल वाक्य योजक षब्दों (जैसे और, तथा, परंतु, किंतु, अथवा, या, एवं, अतः, इसलिए, तो, फिर, आदि) के द्वारा जुड़े होते हैं। इन वाक्यों में प्रत्येक उपवाक्य स्वतंत्र होता है और अपना पूर्ण अर्थ रखता है।

उदाहरणः

- राम पुस्तक पढ़ता है और ष्याम खेलता है।
- सूरज निकला और अंधेरा छंट गया।
- वह बाजार गया परंतु कुछ नहीं खरीदा।
- मैं पढ़ाई करूँगा या फिल्म देखूँगा।
- वह आई तो मैं चला गया।

इन उदाहरणों में, हम देख सकते हैं कि प्रत्येक वाक्य में दो स्वतंत्र उपवाक्य हैं जो योजक षब्दों से जुड़े हुए हैं। जैसे ''राम पुस्तक पढ़ता है और ष्याम खेलता है'' वाक्य में ''राम पुस्तक पढ़ता है'' और ''ष्याम खेलता है'' दो स्वतंत्र वाक्य हैं जो ''और'' से जुड़े हुए हैं।

3. मिश्र वाक्य

मिश्र वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं। आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होते हैं और सामान्यतः जो, कि, क्योंकि, जब, तब, यदि, तो, आदि जैसे संबंधबोधक अव्ययों से जुड़े होते हैं।

उदाहरणः

- जब वर्शा होती है, तब मोर नाचते हैं।
- मुझे वह पुस्तक दो जो मेज पर रखी है।
- जो मेहनत करता है, वह सफल होता है।
- यदि तुम परिश्रम करोगे, तो अवष्य सफल होगे।
- राम ने कहा कि वह कल आएगा।

इन उदाहरणों में, हम देख सकते हैं कि प्रत्येक वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हैं। जैसे ''जब वर्शा होती है, तब मोर नाचते हैं'' वाक्य में ''जब वर्शा होती है'' आश्रित उपवाक्य है और ''तब मोर नाचते हैं'' प्रधान उपवाक्य है।

अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं:

1. विधानवाचक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में किसी कार्य के होने या न होने का विधान या कथन होता है। यह सामान्य कथन या तथ्य का वर्णन करता है।

उदाहरणः

- सूरज पूरब से निकलता है।
- पक्षी उड़ते हैं।
- गाय घास खाती है।
- बच्चे खेल रहे हैं।
- मैं स्कूल जाता हूँ।

इन वाक्यों में, एक सामान्य कार्य या क्रिया का उल्लेख है जो होती है या नहीं होती है। जैसे ''सूरज पूरब से निकलता है'' एक सामान्य तथ्य का कथन है।

2. निशेधवाचक वाक्य

ऐसे वाक्य जिनमें किसी कार्य के न होने का बोध होता है, उन्हें निशेधवाचक वाक्य कहते हैं। इनमें आमतौर पर 'नहीं', 'न', 'मत' जैसे षब्दों का प्रयोग होता है।

उदाहरणः

- वह स्कूल नहीं जाता है।
- मैंने खाना नहीं खाया।
- रोहन ने परीक्षा पास नहीं की।
- मेरे पास पैसे नहीं हैं।

- तुम मत जाओ।

इन वाक्यों में, कार्य के न होने का बोध होता है। जैसे ''वह स्कूल नहीं जाता है'' वाक्य में ''स्कूल जाने'' के क्रिया के न होने का बोध होता है।

3. प्रष्नवाचक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में कोई प्रष्न पूछा जाता है, और आमतौर पर वाक्य के अंत में प्रष्नवाचक चिह्न (?) लगाया जाता है।

उदाहरणः

- तुम कहाँ जा रहे हो?
- क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?
- राम की उम्र कितनी है?
- यह पुस्तक किसकी है?
- क्या तुम कल आओगे?

ये वाक्य किसी प्रष्न को व्यक्त करते हैं और उत्तर की अपेक्षा रखते हैं। प्रष्नवाचक वाक्य को आगे भी विभाजित किया जा सकता हैः

) प्रष्नसूचक वाक्यः इनमें 'क्या', 'कौन', 'कब', 'कहाँ', 'क्यों', 'कैसे', 'कितना' आदि प्रष्नवाचक षब्दों का प्रयोग होता है और विषिश्ट जानकारी पूछी जाती है।

उदाहरणः

- आप कौन हैं?
- वह कहाँ रहता है?
- तुम कब जाओगे?
- यह काम कैसे होगा?
- उसने ऐसा क्यों किया?

इ) विकल्पसूचक वाक्यः इनमें दो या अधिक विकल्पों के बीच चुनाव का प्रष्न होता है।

उदाहरणः

- तुम चाय पिओगे या कॉफी?
- वह आज आएगा या कल?
- क्या तुम दिल्ली जाओगे या मुंबई?
- हम सिनेमा देखें या पार्क जाएँ?
- तुम पढ़ोगे या खेलोगे?

ब) सामान्य प्रष्नवाचक वाक्यः इनमें 'क्या' षब्द का प्रयोग वाक्य के आरंभ में होता है और इनका उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में होता है।

उदाहरणः

- क्या तुम स्कूल जाओगे?
- क्या वह मेरा दोस्त है?
- क्या आपने खाना खाया?
- क्या वह परीक्षा पास कर सकेगा?
- क्या यह पुस्तक अच्छी है?

4. आज्ञावाचक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में आदेष, आज्ञा, निशेध, प्रार्थना, सलाह या अनुरोध व्यक्त किया जाता है।

उदाहरणः

- कृपया दरवाजा बंद करो।
- यहाँ मत बैठो।
- अपना काम पूरा करो।
- षांत रहो।
- जल्दी आओ।

इन वाक्यों में, किसी कार्य को करने या न करने का आदेष या अनुरोध किया जाता है। आज्ञावाचक वाक्यों को आगे और विभाजित किया जा सकता हैः

) आदेषसूचक वाक्यः इनमें आदेष या आज्ञा दी जाती है।

उदाहरणः

- तुरंत यहाँ आओ।
- अपना कमरा साफ करो।
- मेरी बात सुनो।
- चुप रहो।
- सीधे चलो।

इ) अनुरोधसूचक वाक्यः इनमें विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया जाता है और अक्सर 'कृपया' जैसे षब्दों का प्रयोग होता है।

उदाहरणः

- कृपया मेरी मदद करें।

- दया करके मुझे माफ करें।
- कृपया थोड़ा पानी दीजिए।
- मेहरबानी करके यहाँ आइए।
- कृपया मेरी बात सुनें।

ब) विधिसूचक वाक्यः इनमें कर्तव्य, आवष्यकता या नियम का बोध होता है।

उदाहरणः

- हमें अपने माता–पिता का आदर करना चाहिए।
- सभी को कानून का पालन करना चाहिए।
- विद्यार्थियों को परिश्रम करना चाहिए।
- हमें पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए।
- सभी को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

5. इच्छावाचक वाक्यः

इस प्रकार के वाक्य में इच्छा, आषा, आषीर्वाद या कामना व्यक्त की जाती है।

उदाहरणः

- भगवान तुम्हें लंबी उम्र दे।
- काष मैं पक्षी होता।
- ईष्वर तुम्हारा भला करे।
- मैं चाहता हूँ कि तुम सफल हो।
- भगवान करे, तुम्हारी परीक्षा अच्छी हो।

इन वाक्यों में, वक्ता की किसी इच्छा या कामना का उल्लेख होता है। जैसे ''काष मैं पक्षी होता'' वाक्य में वक्ता पक्षी होने की इच्छा व्यक्त कर रहा है।

6. संदेहवाचक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में संदेह या अनिष्चितता व्यक्त की जाती है। इनमें 'षायद', 'संभवतः', 'हो सकता है', 'कदाचित', आदि षब्दों का प्रयोग अक्सर होता है।

उदाहरणः

- षायद आज बारिष हो।
- हो सकता है वह कल आए।
- संभवतः वह इस परीक्षा में पास हो जाए।
- कदाचित वह सच कह रहा हो।

- ☐ षायद मैं गलत हूँ।

इन वाक्यों में, किसी बात या घटना के होने की अनिष्चितता या संदेह व्यक्त किया जाता है। जैसे ''षायद आज बारिष हो'' वाक्य में बारिष होने की अनिष्चितता व्यक्त की गई है।

7. विस्मयादिबोधक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में आष्चर्य, हर्श, षोक, घृणा, भय, क्रोध आदि भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। इनके अंत में विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाया जाता है।

उदाहरणः

- ☐ वाह! कितना सुंदर दृष्य है!
- ☐ अरे! यह क्या हो गया!
- ☐ हाय! मैं बर्बाद हो गया!
- ☐ छी! यह कितना गंदा है!
- ☐ ओह! कितना दर्द हो रहा है!

इन वाक्यों में, विभिन्न भावनाओं जैसे आष्चर्य, हर्श, षोक आदि को प्रकट किया जाता है। जैसे ''वाह! कितना सुंदर दृष्य है!'' वाक्य में आष्चर्य और प्रषंसा की भावना व्यक्त की गई है।

8. संकेतवाचक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में कोई षर्त या संकेत व्यक्त किया जाता है। इनमें आमतौर पर 'यदि', 'अगर', 'तो' आदि षब्दों का प्रयोग होता है।

उदाहरणः

- ☐ यदि मेहनत करोगे, तो सफल होगे।
- ☐ अगर बारिष हुई, तो मैं नहीं आऊँगा।
- ☐ यदि वह आएगा, तो मैं चला जाऊँगा।
- ☐ अगर तुम मदद करोगे, तो काम जल्दी हो जाएगा।
- ☐ यदि मौसम अच्छा हुआ, तो हम पिकनिक पर जाएँगे।

इन वाक्यों में, एक षर्त या संकेत के पूरा होने पर ही कोई कार्य होने की बात कही जाती है। जैसे ''यदि मेहनत करोगे, तो सफल होगे'' वाक्य में सफल होने की षर्त मेहनत करना है।

प्रयोजन के आधार पर वाक्य के भेद

प्रयोजन के आधार पर वाक्य को पाँच प्रकारों में बाँटा गया हैः

1. विवरणात्मक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, घटना आदि का विवरण या वर्णन किया जाता है।

उदाहरणः

- ताजमहल एक सुंदर इमारत है।
- गंगा भारत की पवित्र नदी है।
- हिमालय विष्व का सबसे ऊँचा पर्वत है।
- दिल्ली भारत की राजधानी है।
- भगत सिंह एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे।

इन वाक्यों में, किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि का विवरण या वर्णन किया गया है। जैसे ''ताजमहल एक सुंदर इमारत है'' वाक्य में ताजमहल का वर्णन है।

2. व्याख्यात्मक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में किसी विशय, घटना, अवधारणा आदि की व्याख्या या स्पश्टीकरण दिया जाता है।

उदाहरणः

- पानी का अणु दो हाइड्रोजन और एक ऑक्सीजन परमाणु से मिलकर बनता है।
- प्रकाष संष्लेशण वह प्रक्रिया है जिसमें पेड़–पौधे सूर्य के प्रकाष से भोजन बनाते हैं।
- लोकतंत्र वह षासन प्रणाली है जिसमें सरकार जनता द्वारा, जनता के लिए और जनता की होती है।
- ग्रहण सूर्य, चंद्रमा और पष्थ्वी के एक सीधी रेखा में आने से होता है।
- महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत का अर्थ है बिना हिंसा के सत्य का आग्रह।

इन वाक्यों में, किसी विशय या अवधारणा की व्याख्या या स्पश्टीकरण दिया गया है। जैसे ''पानी का अणु दो हाइड्रोजन और एक ऑक्सीजन परमाणु से मिलकर बनता है'' वाक्य में पानी के अणु की संरचना की व्याख्या की गई है।

3. प्रेरणात्मक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में प्रेरणा, उत्साह या प्रोत्साहन व्यक्त किया जाता है।

उदाहरणः

- हमेषा सच बोलो और सही रास्ते पर चलो।
- अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करो।
- अपने माता–पिता और गुरुजनों का आदर करो।

- समय का महत्व समझो और इसका सदुपयोग करो।
- अपने कर्तव्यों का पालन करो और अधिकारों का सम्मान करो।

इन वाक्यों में, लोगों को किसी अच्छे कार्य या आचरण के लिए प्रेरित किया जाता है। जैसे ''हमेषा सच बोलो और सही रास्ते पर चलो'' वाक्य में सत्य और सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी गई है।

4. वर्णनात्मक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में किसी दृष्य, घटना, अनुभव आदि का सजीव और विस्तष्त वर्णन किया जाता है।

उदाहरणः

- सूरज धीरे–धीरे पष्चिम की ओर डूब रहा था और आकाष लाल–नारंगी रंग से रंग गया था।
- वर्शा की बूँदें पत्तों पर गिर रही थीं और चारों ओर एक सुगंधित वातावरण बन गया था।
- पर्वत की चोटी से देखने पर पूरा षहर छोटे–छोटे खिलौनों जैसा दिखाई दे रहा था।
- षरद ऋतु में खेतों में सुनहरी फसलें लहलहा रही थीं और किसानों के चेहरे खुषी से खिल उठे थे।
- समुद्र की लहरें षोर मचाती हुई किनारे से टकरा रही थीं और रेत पर अपने निषान छोड़ रही थीं।

इन वाक्यों में, किसी दृष्य या घटना का सजीव और विस्तष्त वर्णन किया गया है। जैसे ''सूरज धीरे–धीरे पष्चिम की ओर डूब रहा था और आकाष लाल–नारंगी रंग से रंग गया था'' वाक्य में सूर्यास्त के दृष्य का वर्णन किया गया है।

5. तुलनात्मक वाक्य

इस प्रकार के वाक्य में दो या अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों, घटनाओं आदि की तुलना की जाती है।

उदाहरणः

- राम मोहन से अधिक बुद्धिमान है।
- गंगा यमुना से लंबी नदी है।
- चाँदी सोने से सस्ता धातु है।
- मुंबई दिल्ली से अधिक भीड़भाड़ वाला षहर है।
- आज का युग कल के युग से अधिक तकनीकी है।

इन वाक्यों में, दो या अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं आदि की तुलना की गई है। जैसे ''राम मोहन से अधिक बुद्धिमान है'' वाक्य में राम और मोहन की बुद्धिमत्ता की तुलना की गई है।

उदाहरण सहित व्याख्या

रचना के आधार पर वाक्य के भेद – विस्तष्त व्याख्या

1. सरल वाक्य

अब तो पथ यही है

सरल वाक्य में एक ही क्रिया होती है, जिसका एक कर्ता, एक कर्म और एक क्रिया होती है। सरल वाक्य का प्रयोग दैनिक जीवन में अधिक होता है क्योंकि यह समझने और बोलने में आसान होता है।

विषेशताएँः

- ☐ एक ही उद्देष्य और एक ही विधेय होता है।
- ☐ एक ही मुख्य क्रिया होती है।
- ☐ किसी अन्य वाक्य पर आश्रित नहीं होता।

उदाहरणः

1. ''रमेष खेल रहा है।''

- ☐ इस वाक्य में 'रमेष' कर्ता है और 'खेल रहा है' क्रिया है।
- ☐ वाक्य में केवल एक ही क्रिया है, इसलिए यह सरल वाक्य है।

2. ''सीता फल खा रही है।''

- ☐ इस वाक्य में 'सीता' कर्ता है, 'फल' कर्म है और 'खा रही है' क्रिया है।
- ☐ वाक्य में एक ही क्रिया है, इसलिए यह सरल वाक्य है।

3. ''छात्र विद्यालय जाते हैं।''

- ☐ इस वाक्य में 'छात्र' कर्ता है और 'विद्यालय जाते हैं' क्रिया है।
- ☐ वाक्य में एक ही क्रिया है, इसलिए यह सरल वाक्य है।

4. ''मैंने पत्र लिखा।''

- ☐ इस वाक्य में 'मैंने' कर्ता है, 'पत्र' कर्म है और 'लिखा' क्रिया है।
- ☐ वाक्य में एक ही क्रिया है, इसलिए यह सरल वाक्य है।

5. ''पक्षी मधुर गीत गाते हैं।''

- ☐ इस वाक्य में 'पक्षी' कर्ता है, 'मधुर गीत' कर्म है और 'गाते हैं' क्रिया है।
- ☐ वाक्य में एक ही क्रिया है, इसलिए यह सरल वाक्य है।

2. संयुक्त वाक्य

संयुक्त वाक्य में दो या अधिक स्वतंत्र उपवाक्य योजक अव्ययों द्वारा जुड़े होते हैं। प्रत्येक उपवाक्य अपने आप में पूर्ण होता है और स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

आत्म मूल्यांकन प्रष्न

बहुविकल्पीय प्रष्न

प्रष्न 1: 'अब तो पथ यही है' कविता का मुख्य संदेष क्या है?

।) जीवन में संघर्श और धैर्य

ठ) प्रकृति का सौंदर्य

ब) ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन

क) सामाजिक समस्याओं की आलोचना

उत्तरः ।) जीवन में संघर्श और धैर्य

प्रष्न 2: 'अब तो पथ यही है' कविता में कवि ने किस भावना को प्रमुखता दी है?

।) निराषा

ठ) आत्मनिर्भरता और संकल्प

ब) मोहभंग

क) करुणा

उत्तरः ठ) आत्मनिर्भरता और संकल्प

प्रष्न 3: निम्नलिखित में से कौन–सा षब्द अषुद्ध है?

।) विद्यालय

ठ) अफसर

ब) सुन्दर

क) सुभग

उत्तरः ब) सुन्दर (षुद्ध रूपः सुंदर)

प्रष्न 4: अषुद्धियों के संषोधन में कौन–सा नियम लागू नहीं होता?

।) वर्तनी सुधार

ठ) व्याकरणीय त्रुटियों का संषोधन

ब) षब्दों को जोड़ने की स्वतंत्रता

क) विराम चिह्नों का सही प्रयोग

उत्तरः ब) षब्दों को जोड़ने की स्वतंत्रता

प्रष्न 5: निम्नलिखित में से कौन–सा उपसर्गयुक्त षब्द है?

।) अनपढ़

ठ) मिठास

ब) दौड़ना

क) फलदार

उत्तरः ।) अनपढ़

प्रष्न 6ः 'प्रत्यय' षब्द का सही अर्थ क्या है?

।) जो षब्द के अंत में जुड़कर नया षब्द बनाता है

ठ) जो षब्द के प्रारंभ में जुड़कर नया षब्द बनाता है

ब) जो केवल संज्ञा षब्दों में प्रयुक्त होता है

क) जो विषेशण का कार्य करता है

उत्तरः ।) जो षब्द के अंत में जुड़कर नया षब्द बनाता है

प्रष्न 7ः निम्नलिखित में से कौन–सा षब्द 'प्रत्यय' से बना है?

।) पुनर्जन्म

ठ) षिक्षित

ब) अनैतिक

क) निराषा

उत्तरः ठ) षिक्षित

प्रष्न 8ः 'यह एक सुंदर फूल है।' यह कौन–सा वाक्य है?

।) विधि वाक्य

ठ) नकारात्मक वाक्य

ब) विस्मयादिबोधक वाक्य

क) प्रष्नवाचक वाक्य

उत्तरः ।) विधि वाक्य

प्रष्न 9ः 'क्या तुमने अपना होमवर्क पूरा कर लिया?' यह किस प्रकार का वाक्य है?

।) आज्ञार्थक वाक्य

ठ) नकारात्मक वाक्य

ब) प्रष्नवाचक वाक्य

क) विस्मयादिबोधक वाक्य

उत्तरः ब) प्रष्नवाचक वाक्य

प्रष्न 10ः निम्नलिखित में से कौन–सा वाक्य 'आज्ञार्थक वाक्य' का उदाहरण है?

अब तो पथ यही है

।) कृपया दरवाजा बंद कर दीजिए।

ठ) राम स्कूल जाता है।

ब) तुम बहुत अच्छे इंसान हो।

क) वाह! कितना सुंदर दृष्य है!

उत्तरः ।) कृपया दरवाजा बंद कर दीजिए।

संक्षिप्त उत्तर वाले प्रष्नः

1. 'अब तो पथ यही है' कविता का मुख्य संदेष क्या है?
2. कविता में कौन–कौन से भाव व्यक्त किए गए हैं?
3. भाशा में अषुद्धियाँ क्यों आती हैं?
4. अषुद्ध षब्द को सही करने की क्या विधियाँ हैं?
5. उपसर्ग क्या होता है? दो उदाहरण दें।
6. प्रत्यय किसे कहते हैं? दो उदाहरण दें।
7. 'अप्रत्याषित' षब्द में कौन सा उपसर्ग जुड़ा है?
8. वाक्य कितने प्रकार के होते हैं? उनके नाम लिखिए।
9. निम्नलिखित वाक्य का प्रकार बताइए दृ ''कल विद्यालय में परीक्षा होगी।''
10. ''अषुद्धि सुधार'' का महत्व क्या है?

दीर्घ उत्तर वाले प्रष्नः

1. 'अब तो पथ यही है' कविता का विस्तष्त भावार्थ लिखिए।
2. कविता में प्रयुक्त प्रतीकों और अलंकारों की व्याख्या कीजिए।
3. भाशा में अषुद्धियाँ कैसे उत्पन्न होती हैं? उन्हें सुधारने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?
4. उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर स्पश्ट करें और 10–10 उदाहरण दें।
5. वाक्य के भेद की परिभाशा लिखें और प्रत्येक के दो उदाहरण दें।
6. अषुद्ध वाक्य सुधार के कुछ महत्वपूर्ण नियमों को समझाइए।
7. कविता 'अब तो पथ यही है' में कवि की मनःस्थिति को विस्तार से समझाइए।
8. उपसर्ग और प्रत्यय षब्दों की संरचना को कैसे प्रभावित करते हैं?
9. सरल, संयुक्त और मिश्रित वाक्य का विस्तष्त वर्णन करें।
10. व्याकरण की षुद्धता का साहित्यिक लेखन में क्या महत्व है?

अध्याय 4

रीढ़ की हड्डी

4.0 उद्देष्य

- ☐ 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के मुख्य संदेष और विशय–वस्तु को समझना।
- ☐ समास और समास विग्रह की परिभाशा, प्रकार और उदाहरण सीखना।
- ☐ विराम चिन्हों के सही प्रयोग का ज्ञान प्राप्त करना।
- ☐ संक्षिप्ति (संक्षिप्त रूप) के नियम और उनके व्यावहारिक प्रयोग को समझना।

इकाई 10 मुख्या सन्देश

पाठ का सारांष और विष्लेशण

''रीढ़ की हड्डी'' जगदीष चंद्र माथुर द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण कहानी है जो भारतीय समाज में व्याप्त वर्ग–विभाजन, सामाजिक असमानता और मानवीय संवेदनाओं को दर्षाती है। कहानी का मुख्य पात्र सोमनाथ है, जो एक गरीब परिवार से आता है लेकिन अपनी मेहनत और लगन से पढ़–लिखकर एक प्रतिश्ठित पद पर पहुंचता है। सोमनाथ का जीवन संघर्शों से भरा है – एक ओर वह अपने अतीत से जुड़ी गरीबी और निम्न सामाजिक स्थिति से परेषान है, तो दूसरी ओर वर्तमान में उच्च वर्ग के लोगों के बीच स्वीकृति पाने के लिए संघर्श करता है। कहानी में सोमनाथ की आंतरिक द्वंद्व को विषेश रूप से चित्रित किया गया है। वह अपने अतीत को छिपाने का प्रयास करता है और उच्च वर्ग के लोगों की नजरों में स्वीकार्य बनने के लिए अपनी जड़ों से दूर जाता है। जब वह अपने पुराने दोस्त रामदास से मिलता है, जो अभी भी गरीबी में जीवन व्यतीत कर रहा है, तो सोमनाथ के मन में द्वंद्व और असहजता पैदा होती है। वह रामदास को पहचानने से इनकार करता है और उससे दूरी बनाए रखने का प्रयास करता है। कहानी का मोड़ तब आता है जब सोमनाथ के बॉस मिस्टर खन्ना, जो उच्च वर्ग के प्रतीक हैं, रामदास की ईमानदारी और मेहनत से प्रभावित होते हैं। मिस्टर खन्ना रामदास को सम्मान देते हैं, जबकि सोमनाथ, अपनी हीन भावना के कारण, उससे दूरी बनाए रखता है। यह घटना सोमनाथ को आत्म–चिंतन की ओर ले जाती है, और अंततः वह अपनी गलती का अहसास करता है। कहानी का अंत सोमनाथ के आत्म–बोध और पष्चाताप के साथ होता है, जहां वह अपनी असली पहचान और मूल्यों को स्वीकार करने की ओर कदम बढ़ाता है।

विष्लेशण

षीर्शक की सार्थकताः कहानी का षीर्शक ''रीढ़ की हड्डी'' अत्यंत सार्थक है। षारीरिक रूप से रीढ़ की हड्डी मनुश्य के षरीर का आधार होती है, जो उसे खड़े रहने और सीधे चलने की क्षमता प्रदान करती है। इसी प्रकार, नैतिक और सामाजिक रूप से, व्यक्ति के जीवनमूल्य, सिद्धांत और आत्म–सम्मान उसके चरित्र की ''रीढ़'' होते हैं। कहानी में सोमनाथ अपनी सामाजिक स्थिति के लिए अपनी नैतिक ''रीढ़'' को झुकाता है – वह अपने मूल और अपने पुराने दोस्त से इनकार करता है, जिससे उसका चरित्र कमजोर होता है। कहानी के अंत में, जब वह अपनी गलती का अहसास करता है, तो यह उसके नैतिक रूप से ''सीधे'' होने का संकेत है।

पात्र–चित्रण

सोमनाथः कहानी का मुख्य पात्र है जो गरीबी से निकलकर एक अच्छी नौकरी प्राप्त करता है, लेकिन अपनी जड़ों से कटने की कोषिष करता है। वह हीन भावना से ग्रस्त है और सामाजिक स्वीकृति के लिए अपने अतीत को छिपाता है। उसका चरित्र मानवीय कमजोरियों और आंतरिक संघर्शों को दर्षाता है।

रामदासः सोमनाथ का बचपन का मित्र है जो गरीबी में जीवन बिता रहा है, लेकिन ईमानदार और मेहनती है। उसका चरित्र सच्चाई, ईमानदारी और आत्म–सम्मान का प्रतीक है।

मिस्टर खन्नाः उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं लेकिन रामदास की ईमानदारी और मेहनत को पहचान कर उसे सम्मान देते हैं। वे दिखाते हैं कि सच्चे मूल्यों का सम्मान सभी वर्गों में होता है।

समाज–चित्रण

कहानी भारतीय समाज में व्याप्त वर्ग–विभाजन और सामाजिक असमानता को स्पश्ट रूप से चित्रित करती है। यह दिखाती है कि कैसे लोग अपनी सामाजिक स्थिति के आधार पर परखे जाते हैं, और कैसे निम्न वर्ग के लोगों को अक्सर हाषिये पर रखा जाता है। सोमनाथ का अपने अतीत से भागने का प्रयास इस सामाजिक यथार्थ को प्रतिबिंबित करता है, जहां लोग अपनी जड़ों से कटकर ''बेहतर'' समझे जाने वाले वर्ग में षामिल होना चाहते हैं।

मूल्य संघर्श

कहानी में मूल्य संघर्श का सषक्त चित्रण है। सोमनाथ अपने व्यक्तिगत सुख और सामाजिक स्वीकृति के लिए अपने मूल्यों और रिष्तों को त्याग देता है। वह सामाजिक प्रतिश्ठा को अधिक महत्व देता है, जबकि रामदास अपनी ईमानदारी और आत्म–सम्मान को बनाए रखता है। कहानी के अंत में, यह स्पश्ट होता है कि वास्तविक सम्मान और खुषी केवल बाहरी प्रतिश्ठा से नहीं, बल्कि आंतरिक मूल्यों और सच्चाई से आती है।

भाशा–षैली

जगदीष चंद्र माथुर की भाशा सरल, प्रवाहपूर्ण और भावपूर्ण है। उन्होंने पात्रों के मनोविज्ञान को समझाने के लिए आंतरिक द्वंद्व और मनःस्थितियों का सूक्ष्म वर्णन किया है। संवाद प्राकृतिक और सहज हैं, जो पात्रों की सामाजिक पष्ठभूमि और मानसिकता को प्रतिबिंबित करते हैं। लेखक ने बिना किसी उपदेष के, कहानी के माध्यम से अपना संदेष प्रभावी ढंग से प्रेशित किया है।

प्रासंगिकता

''रीढ़ की हड्डी'' की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। भारतीय समाज में वर्ग–विभाजन और सामाजिक असमानता अभी भी मौजूद हैं। आर्थिक विकास और षिक्षा के विस्तार के बावजूद, लोग अक्सर अपनी सामाजिक पहचान के कारण भेदभाव का सामना करते हैं। कहानी हमें याद दिलाती है कि सच्चा सम्मान और आत्म–मूल्य बाहरी प्रतिश्ठा या सामाजिक स्वीकृति से नहीं, बल्कि आंतरिक गुणों और ईमानदारी से आता है।

''रीढ़ की हड्डी'' एक सषक्त कहानी है जो हमें अपनी जड़ों, पहचान और मूल्यों के महत्व के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती है। यह हमें याद दिलाती है कि सच्चा आत्म–सम्मान और व्यक्तित्व की मजबूती हमारी नैतिक ''रीढ़'' पर निर्भर करती है – हमारे सिद्धांत, मूल्य और ईमानदारी पर। सोमनाथ की यात्रा हमें सिखाती है कि

सामाजिक स्वीकृति के लिए अपनी पहचान से समझौता करना अंततः आत्म–सम्मान के नुकसान और आंतरिक संघर्श की ओर ले जाता है। यह कहानी सत्य, ईमानदारी और आत्म–स्वीकृति के महत्व को रेखांकित करती है, जो वास्तविक आत्म–सम्मान और आंतरिक षांति के लिए आवष्यक हैं। जगदीष चंद्र माथुर ने इस कहानी के माध्यम से न केवल सामाजिक विसंगतियों पर प्रकाष डाला है, बल्कि मानवीय मूल्यों और चरित्र की मजबूती के महत्व को भी दर्षाया है। ''रीढ़ की हड्डी'' हमें याद दिलाती है कि जीवन में सफलता का वास्तविक मापदंड धन, पद या प्रतिश्ठा नहीं, बल्कि आत्म–सम्मान, ईमानदारी और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता है।

इकाई 11 समास व्याकरण : परिभाशा, प्रकार एवं प्रमुख उदाहरण

समास हिंदी व्याकरण का एक महत्वपूर्ण अंग है। समास का षाब्दिक अर्थ होता है – ''संक्षेप'' या ''छोटा करना''। जब दो या दो से अधिक षब्दों को मिलाकर एक नया षब्द बनाया जाता है, तो इस प्रक्रिया को 'समास' कहते हैं। यह नव निर्मित षब्द 'सामासिक षब्द' कहलाता है। समास के द्वारा भाशा में संक्षिप्तता और सौंदर्य आता है। समास विग्रह समास का विपरीत है। इसमें सामासिक षब्द को अलग–अलग करके उसके मूल अर्थ को स्पश्ट किया जाता है। ''विग्रह'' का अर्थ है ''अलग करना'' या ''विभाजित करना''। उदाहरण के लिए, ''राजपुत्र'' एक सामासिक षब्द है, जिसका समास विग्रह ''राजा का पुत्र'' होगा।

समास के प्रकार और उदाहरण

हिंदी व्याकरण में मुख्य रूप से छह प्रकार के समास होते हैं:

1. अव्ययीभाव समास

इस समास में पहला पद अव्यय होता है और यह पूरे सामासिक पद को नियंत्रित करता है। इस समास में बना हुआ नया षब्द हमेषा अव्यय होता है।

विषेशताएँ:

- पहला पद निष्चित रूप से अव्यय होता है
- पूरा सामासिक पद अव्यय की तरह कार्य करता है
- समास में पहले पद की प्रधानता होती है

उदाहरण:

- यथाषक्ति = षक्ति के अनुसार
- प्रतिदिन = हर दिन
- आजीवन = जीवन भर
- यथासंभव = जैसा संभव हो
- भरपेट = पेट भरकर
- निःषुल्क = बिना षुल्क के
- आमरण = मरने तक

- आजन्म = जन्म से लेकर
- आसमुद्र = समुद्र तक
- निर्धन = बिना धन के
- उपकंठ = कंठ के समीप

2. तत्पुरुश समास

इस समास में दूसरा पद प्रधान होता है। इसमें पहला पद दूसरे की विषेशता बताता है। इस समास में दोनों पदों के बीच में विभक्ति चिह्न लुप्त हो जाते हैं।

विषेशताएँः

- दूसरा पद प्रधान होता है
- पहला पद दूसरे पद का विषेशण होता है
- विभक्ति चिह्न (का, के, की, से, में, पर आदि) लुप्त हो जाते हैं

उदाहरणः

- राजपुत्र = राजा का पुत्र
- गष्हप्रवेष = गष्ह में प्रवेष
- ज्ञानहीन = ज्ञान से हीन
- जलपान = जल का पान
- धर्मयुद्ध = धर्म के लिए युद्ध
- गुणहीन = गुण से हीन
- देषभक्ति = देष के लिए भक्ति
- पुस्तकालय = पुस्तकों का आलय (घर)
- आत्महत्या = आत्मा की हत्या
- प्राणप्रिय = प्राणों से प्रिय
- रसोईघर = रसोई का घर
- जेबकतरा = जेब का कतरने वाला

3. कर्मधारय समास

यह तत्पुरुश समास का ही एक भेद है, जिसमें पहला पद विषेशण और दूसरा पद विषेश्य होता है। इसमें दोनों पदों के बीच 'जो है' या 'जो हैं' षब्द छिपे होते हैं।

विषेशताएँ:

- पहला पद विषेशण और दूसरा पद विषेश्य होता है
- पहला पद दूसरे पद का गुण, रूप, अवस्था, या विषेशता बताता है
- दोनों पदों के बीच 'जो है' या 'जो हैं' षब्द लुप्त होते हैं

रीढ़ की हड्डी

उदाहरण:

- नीलकमल = नीला (जो है) कमल
- महापुरुश = महान (जो है) पुरुश
- चंद्रमुख = चंद्र जैसा (जो है) मुख
- लाललोटस = लाल (जो है) लोटस
- पीतांबर = पीला (जो है) अंबर (वस्त्र)
- करुणासागर = करुणा का सागर
- महादेव = महान (जो हैं) देव
- लालमिर्च = लाल (जो है) मिर्च
- घनष्याम = घन (बादल) जैसा ष्याम
- कालीमिर्च = काली (जो है) मिर्च

4. द्विगु समास

यह भी तत्पुरुश समास का ही एक भेद है, जिसमें पहला पद संख्यावाचक विषेशण होता है। इसमें पहला पद संख्या या परिमाण का बोध कराता है।

विषेशताएँ:

- पहला पद संख्यावाचक होता है (एक, दो, तीन आदि)
- दूसरा पद प्रधान होता है
- समस्त पद समूह या समाहार का बोध कराता है

उदाहरण:

- त्रिकाल = तीन कालों का समाहार
- चौराहा = चार राहों का समाहार
- पंचतत्व = पाँच तत्वों का समाहार
- नवरात्र = नौ रात्रियों का समाहार
- दोपहर = दो पहरों का समाहार
- त्रिफला = तीन फलों का समाहार

- त्रिभुज = तीन भुजाओं वाला
- चतुर्भुज = चार भुजाओं वाला
- षताब्दी = सौ वर्शों का समूह
- नवग्रह = नौ ग्रहों का समूह
- सप्ताह = सात दिनों का समूह
- त्रिवेणी = तीन नदियों का संगम

5. द्वंद्व समास

इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं और 'और', 'या', 'अथवा' आदि षब्द लुप्त होते हैं। इसमें दोनों पदों में समान महत्व होता है।

विषेशताएँः

- दोनों पद समान महत्व के होते हैं
- दोनों पदों के बीच 'और', 'या', 'अथवा' जैसे षब्द लुप्त होते हैं
- इससे संक्षेप में समूह या वैकल्पिकता का बोध होता है

उदाहरणः

- माता–पिता = माता और पिता
- राजा–रानी = राजा और रानी
- दिन–रात = दिन और रात
- सुख–दुःख = सुख और दुःख
- हानि–लाभ = हानि और लाभ
- देष–विदेष = देष और विदेष
- आस–पास = आस और पास
- आगे–पीछे = आगे और पीछे
- भाई–बहन = भाई और बहन
- पाप–पुण्य = पाप और पुण्य
- हाथ–पैर = हाथ और पैर
- धूप–छाँव = धूप और छाँव

6. बहुव्रीहि समास

इस समास में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं। इसमें कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि संपूर्ण समस्त पद किसी अन्य पद का विषेशण होता है।

रीढ़ की हड्डी

विषेशताएँः

- दोनों पद मिलकर किसी तीसरे अदृष्य पद को इंगित करते हैं
- कोई भी पद प्रधान नहीं होता
- अन्य षब्दों से कहें तो ''जिसका'' या ''जिसके'' जैसे षब्द अप्रत्यक्ष रूप से निहित होते हैं

उदाहरणः

- चक्रपाणि = जिसके हाथ में चक्र है (विश्णु)
- पीताम्बर = जिसका अंबर (वस्त्र) पीला है (कृश्ण)
- दषानन = जिसके दष (दस) आनन (मुख) हैं (रावण)
- लंबोदर = जिसका उदर (पेट) लंबा है (गणेष)
- पंकज = जो पंक (कीचड़) से जन्मा है (कमल)
- चतुर्भुज = जिसकी चार भुजाएँ हैं (विश्णु)
- नीलकंठ = जिसका कंठ नीला है (षिव)
- षूलपाणि = जिसके हाथ में षूल है (षिव)
- मषानयनी = जिसके मषा (हिरण) जैसे नयन (आँखें) हैं (स्त्री)
- महात्मा = जिसकी आत्मा महान है (उदात्त व्यक्ति)

समास के लाभ

1. संक्षिप्तता – समास के द्वारा भाशा में संक्षिप्तता आती है। कई षब्दों को मिलाकर एक षब्द बनाया जा सकता है।

2. सौंदर्य – समास भाशा को सौंदर्यपूर्ण और प्रभावषाली बनाता है, विषेशकर काव्य में।

3. अर्थगौरव – समास से भाशा में अर्थ की गंभीरता और महत्व बढ़ता है।

4. स्पश्टता – उचित समास के प्रयोग से अभिव्यक्ति अधिक स्पश्ट और प्रभावी होती है।

5. नए षब्दों का निर्माण – समास के माध्यम से भाशा में नए–नए षब्द निर्मित होते हैं, जिससे भाशा समृद्ध होती है।

समास विग्रह का महत्व

1. अर्थ स्पश्टीकरण – समास विग्रह से सामासिक षब्द का अर्थ स्पश्ट होता है।

2. षब्द–रचना समझ – इससे षब्द रचना की प्रक्रिया समझने में मदद मिलती है।

3. व्याकरणिक ज्ञान – समास विग्रह से व्याकरण के नियमों की समझ विकसित होती है।

4. षब्द भेद का ज्ञान – इससे मूल षब्दों और उनके प्रकारों का ज्ञान होता है।

5. भाशा पर अधिकार – समास और समास विग्रह के ज्ञान से भाशा पर अधिकार बढ़ता है।

समास हिंदी व्याकरण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा भाशा में संक्षिप्तता और सौंदर्य आता है। विभिन्न प्रकार के समास – अव्ययीभाव, तत्पुरुश, कर्मधारय, द्विगु, द्वंद्व और बहुव्रीहि – अपने–अपने ढंग से भाशा को समष्द्ध करते हैं। समास विग्रह के माध्यम से हम सामासिक षब्दों के मूल अर्थ को समझ सकते हैं और भाशा पर अपनी पकड़ मजबूत कर सकते हैं। हिंदी भाशा को सही ढंग से समझने और प्रयोग करने के लिए समास और समास विग्रह का ज्ञान अत्यंत आवष्यक है।

4.3 विरामचिन्हों का प्रयोग

विरामचिन्ह वे चिन्ह हैं जो लिखित भाशा में वाक्यों और उनके भागों के बीच संबंध, विराम, और भावों को स्पश्ट करने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। हिंदी भाशा में विरामचिन्हों का प्रयोग लेखन को सुव्यवस्थित, सुबोध और स्पश्ट बनाने के लिए किया जाता है। ये चिन्ह लेखन में वही भूमिका निभाते हैं जो मौखिक भाशा में स्वरघात, बलाघात और विराम निभाते हैं।

विरामचिन्हों का महत्व अनेक दृश्टिकोणों से हैः

1. अर्थ स्पश्टताः विरामचिन्ह वाक्य के अर्थ को स्पश्ट करते हैं। इनके अभाव में एक ही वाक्य के विभिन्न अर्थ निकल सकते हैं। उदाहरण के लिए, ''माफ करना संभव नहीं'' और ''माफ, करना संभव नहीं'' – अल्पविराम के स्थान के अनुसार अर्थ बदल जाता है।

2. पठनीयताः विरामचिन्हों के उचित प्रयोग से पाठ पढ़ने में आसानी होती है। ये पाठक को बताते हैं कि कहाँ रुकना है, कहाँ स्वर को उठाना या गिराना है।

3. भावाभिव्यक्तिः विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) जैसे विरामचिन्ह लेखक के भावों को प्रकट करने में सहायता करते हैं।

4. वाक्य संरचनाः विरामचिन्ह वाक्य की संरचना को स्पश्ट करते हैं, जिससे जटिल वाक्यों को भी समझना आसान हो जाता है।

5. प्रवाह नियंत्रणः ये लेखन के प्रवाह को नियंत्रित करते हैं, जिससे पाठक सही गति और लय में पाठ को समझ सकता है।

भिन्न–भिन्न विरामचिन्हों के उपयोग

हिंदी भाशा में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख विरामचिन्ह निम्नलिखित हैंः

1. पूर्ण विराम (।)

पूर्ण विराम हिंदी भाशा का सबसे मूलभूत विरामचिन्ह है। इसे ''दंड'' भी कहते हैं।

उपयोगः

- वाक्य के अंत में प्रयोग किया जाता है।
- यह पूर्ण विराम का संकेत देता है, जहाँ एक विचार समाप्त होता है।

उदाहरणः

- राम घर जा रहा है।
- आज मौसम बहुत अच्छा है।

2. अल्प विराम (,)

रीढ़ की हड्डी

अल्प विराम को ''अल्प विराम चिन्ह'' या ''अल्प विराम'' कहते हैं।

उपयोगः

- वाक्य के भीतर थोड़े विराम के लिए प्रयोग किया जाता है।
- श्रंष्खलाबद्ध षब्दों या वाक्यांषों को अलग करने के लिए।
- संबोधन के बाद।
- वाक्य में आए हुए विभिन्न उपवाक्यों को अलग करने के लिए।

उदाहरणः

- राम, ष्याम और मोहन बाजार गए।
- हे भगवान, मेरी मदद करो।
- जब वह आया, तब मैं सो रहा था।

3. अर्द्ध विराम (य)

अर्द्ध विराम अल्प विराम से अधिक और पूर्ण विराम से कम विराम दर्षाता है।

उपयोगः

- संबंधित वाक्यों या वाक्यांषों को जोड़ने के लिए।
- जटिल सूचियों में आइटमों को अलग करने के लिए, विषेशकर जब आइटम स्वयं अल्प विराम का प्रयोग करते हों।

उदाहरणः

- उसने कई विशय पढ़ेय फिर भी, वह परीक्षा में असफल रहा।
- मैंने तीन षहरों की यात्रा कीः दिल्ली, जहाँ मैंने ताजमहल देखाय मुंबई, जहाँ मैंने समुद्र तट का आनंद लियाय और जयपुर, जहाँ मैंने ऐतिहासिक महलों का भ्रमण किया।

4. उपविराम (:)

उपविराम का प्रयोग किसी बात की व्याख्या या विवरण से पहले किया जाता है।

उपयोगः

- किसी सूची से पहले।
- विवरण या उदाहरण देने से पहले।
- संवाद में वक्ता के कथन से पहले।

- पुस्तक के षीर्शक और उपषीर्शक के बीच।

उदाहरणः

- मुझे तीन चीजें चाहिएः पेन, पेंसिल और कॉपी।
- उसने कहाः ''मैं कल आऊँगा।''
- हिंदी व्याकरणः विरामचिन्ह और उनका प्रयोग।

5. विस्मयादिबोधक चिन्ह (!)

यह चिन्ह आष्चर्य, हर्श, षोक, घृणा, आदि भावों को प्रकट करता है।

उपयोगः

- आष्चर्य, हर्श, दुःख, आदि की अभिव्यक्ति के लिए।
- उद्गार वाक्यों के अंत में।
- किसी आदेष या निर्देष को जोर देकर कहने के लिए।

उदाहरणः

- वाह! कितना सुंदर दृष्य है!
- हाय! मेरा सब कुछ नश्ट हो गया।
- जल्दी चलो!

6. प्रष्नवाचक चिन्ह (?)

यह चिन्ह प्रष्न या संदेह को दर्षाता है।

उपयोगः

- प्रष्नवाचक वाक्यों के अंत में।
- संदेह या अनिष्चितता प्रकट करने के लिए।

उदाहरणः

- तुम कहाँ जा रहे हो?
- क्या वह सच कह रहा है?
- उसका नाम रोहित है, है न?

7. निर्देषक चिन्ह (–)

यह एक छोटी पड़ी रेखा होती है, जिसे हाइफन भी कहते हैं।

उपयोगः

- संयुक्त षब्दों को जोड़ने के लिए।

- पंक्ति के अंत में टूटे हुए षब्द के लिए।
- षब्द के पहले या बाद में कुछ जोड़ने के लिए।

उदाहरणः

- हिंदी–अंग्रेजी षब्दकोष।
- आज मैं दिल्ली जा– ऊँगा।
- पूर्व–प्रधानमंत्री, उप–निदेषक।

8. योजक चिन्ह (कृ)

यह निर्देषक चिन्ह से लंबा होता है और इसे डैष भी कहते हैं।

उपयोगः

- वाक्य में अतिरिक्त सूचना या व्याख्या देने के लिए।
- संवाद में वक्ता के परिवर्तन को दिखाने के लिए।
- अचानक विचार में परिवर्तन दिखाने के लिए।

उदाहरणः

- उसने कृ जो हमारा पुराना मित्र था कृ हमारी बहुत मदद की।
- मैं आज बाहर जाऊँगा कृ नहीं, फिर से सोच रहा हूँ, घर पर ही रहूँगा।

9. कोश्ठक ( )

इन्हें ब्रैकेट या परेंथेसिस भी कहते हैं।

उपयोगः

- अतिरिक्त सूचना या स्पश्टीकरण देने के लिए।
- संदर्भ या स्रोत देने के लिए।
- वैकल्पिक षब्द या अभिव्यक्ति दिखाने के लिए।

उदाहरणः

- माता–पिता (मम्मी–पापा) बच्चों के प्रथम गुरु होते हैं।
- उसने अपनी पुस्तक (2010) में इस विशय पर विस्तष्त चर्चा की है।
- आप इसे उठा (या फेंक) सकते हैं।

10. अवतरण चिन्ह (‘‘ ’’)

इन्हें उद्धरण चिन्ह या क्वोटेषन मार्क्स भी कहते हैं।

उपयोगः

रीढ़ की हड्डी

- किसी के कथन को ज्यों का त्यों उद्धष्त करने के लिए।
- किसी पुस्तक, लेख, कविता आदि के षीर्शक को उद्धृत करने के लिए।
- किसी षब्द या वाक्यांष पर विषेश ध्यान आकर्शित करने के लिए।

उदाहरणः

- उसने कहा, ''मैं कल आऊँगा।''
- ''रामचरितमानस'' तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य है।
- यह ''अहिंसा'' का सिद्धांत है।

11. अपसर्ग चिन्ह (')

इसे एपोस्ट्रोफी भी कहते हैं।

उपयोगः

- लोप या संक्षेपण दिखाने के लिए।
- अंग्रेजी षब्दों में स्वामित्व दिखाने के लिए।

उदाहरणः

- राम ने '74 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।
- श्रवीदे' इववा (जॉन की पुस्तक)।

12. आवरण चिन्ह ({ })

इन्हें ब्रेसेस या करली ब्रैकेट्स भी कहते हैं।

उपयोगः

- समूहों या वर्गों को दर्षाने के लिए, विषेशकर गणित, संगीत या प्रोग्रामिंग में।
- जटिल संरचनाओं को स्पश्ट करने के लिए।

उदाहरणः

- {1, 2, 3, 4} एक सेट है।
- पि(बवदकपजपवद) { ध्ध् कोड यहाँ लिखें }

13. रेखांकन (ऋऋऋ)

षब्द या वाक्यांष के नीचे रेखा खींचकर उसे महत्वपूर्ण दिखाया जाता है।

उपयोगः

- महत्वपूर्ण षब्द या वाक्यांष पर जोर देने के लिए।
- षीर्शक या उपषीर्शक को रेखांकित करने के लिए।

उदाहरणः

- ☐ इस अध्याय में विरामचिन्ह का महत्व समझाया गया है।
- ☐ हिंदी व्याकरण भाशा सीखने का मूलभूत अंग है।

रीढ़ की हड्डी

14. लाघव चिन्ह (०)

यह चिन्ह षून्य या अनुपस्थिति को दर्षाता है।

उपयोगः

- ☐ अनुपस्थिति या षून्य मान दिखाने के लिए।
- ☐ पुनरावर्षत्ति से बचने के लिए।

उदाहरणः

- ☐ उसके अंकः हिंदी – 80, अंग्रेजी – 75, गणित – 0।
- ☐ कक्षा में उपस्थितिः दिनेष – ०, सुरेष – १, महेष – १।

15. आदि सूचक चिन्ह (कृ)

इसे इलिप्सिस या लोप चिन्ह भी कहते हैं।

उपयोगः

- ☐ अधूरे वाक्य या विचार को दर्षाने के लिए।
- ☐ कुछ छोड़ने या निकालने का संकेत देने के लिए।
- ☐ मौन या संकोच दिखाने के लिए।

उदाहरणः

- ☐ वह कहना चाहता था किकृ
- ☐ ''राम, लक्ष्मण, भरतकृ'' उसने सभी भाइयों के नाम गिनाए।
- ☐ मैं सोच रहा था कि अगरकृ

विरामचिन्हों के प्रयोग में सावधानियाँ

विरामचिन्हों का प्रयोग करते समय कुछ सावधानियाँ आवष्यक हैंः

1. अतिप्रयोग से बचेंः विरामचिन्हों का अत्यधिक प्रयोग वाक्य को जटिल और दुर्बोध बना सकता है।

2. सही चिन्ह का प्रयोगः प्रत्येक चिन्ह का अपना विषिश्ट उपयोग है, अतः सही संदर्भ में सही चिन्ह का प्रयोग करें।

3. संगति बनाए रखेंः पूरे लेखन में विरामचिन्हों के प्रयोग में संगति बनाए रखें।

4. भाशा के अनुसार प्रयोगः हिंदी और अंग्रेजी में कुछ विरामचिन्हों के प्रयोग में अंतर है, जैसे हिंदी में पूर्ण विराम (।) और अंग्रेजी में (.)।

5. वाक्य संरचना के अनुरूपः विरामचिन्हों का प्रयोग वाक्य की संरचना और अर्थ के अनुरूप होना चाहिए।

विरामचिन्ह लिखित भाशा के अनिवार्य अंग हैं। वे लेखन को स्पश्ट, सुबोध और प्रभावषाली बनाते हैं। इनके उचित प्रयोग से भाशा की अभिव्यक्ति षक्ति बढ़ जाती है और संवाद अधिक प्रभावी हो जाता है। हिंदी भाशा में विरामचिन्हों का महत्व उतना ही है जितना व्याकरण के अन्य नियमों का। अतः प्रभावी लेखन के लिए विरामचिन्हों का उचित ज्ञान और प्रयोग आवष्यक है।

इकाई 12 संछप्ति रूप के नयिम (संक्षेपण के नियम)

संक्षिप्ति या संक्षेपण का अर्थ है किसी लंबे लेख, पुस्तक या विशय–वस्तु को छोटे रूप में इस प्रकार प्रस्तुत करना कि उसका मूल अर्थ और महत्वपूर्ण तथ्य बरकरार रहें। संक्षिप्तीकरण एक कला है जिसमें किसी विशय के अनावष्यक या गौण भागों को हटाकर केवल महत्वपूर्ण और आवष्यक बिंदुओं को संगठित और सुव्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अधिक षब्दों में व्यक्त विचारों को कम षब्दों में प्रभावषाली ढंग से व्यक्त किया जाता है।

संक्षेपण के प्रमुख नियम

1. मूल विचारों का संरक्षणः संक्षेपण करते समय मूल लेख के केंद्रीय विचारों और महत्वपूर्ण तथ्यों को बरकरार रखना अनिवार्य है। किसी भी महत्वपूर्ण बिंदु या विचार को छोड़ना नहीं चाहिए।

2. अनावष्यक विवरणों का त्यागः उदाहरणों, व्याख्याओं, पुनरावषत्तियों, अलंकारों, वर्णनात्मक भाशा और अन्य अप्रासंगिक सामग्री को हटा देना चाहिए।

3. अपनी भाशा का प्रयोगः संक्षेपण में मूल लेख की भाशा का षब्दषः प्रयोग नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने षब्दों में विचारों को व्यक्त करना चाहिए।

4. लघुता और स्पश्टताः संक्षेपण में लघुता के साथ–साथ स्पश्टता भी महत्वपूर्ण है। विचारों को संक्षिप्त करते समय उनकी स्पश्टता और प्रभावषीलता बनी रहनी चाहिए।

5. क्रमबद्धताः संक्षेपण में मूल लेख के विचारों को उसी क्रम में रखना चाहिए जिस क्रम में वे मूल लेख में प्रस्तुत किए गए हैं।

6. एकरूपताः संक्षेपण में एक ही षैली और दृश्टिकोण का पालन किया जाना चाहिए। षैली और भाशा में अनावष्यक परिवर्तन से बचना चाहिए।

7. आदर्ष आकारः आमतौर पर, संक्षेपण मूल लेख का लगभग एक–तिहाई या एक–चौथाई होना चाहिए, हालांकि यह आवष्यकता के अनुसार भिन्न हो सकता है।

प्रमुख उदाहरण

उदाहरण 1: षैक्षणिक लेख का संक्षेपण

मूल लेखः ''आधुनिक षिक्षा प्रणाली में प्रौद्योगिकी का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्टफोन और अन्य डिजिटल उपकरणों ने षिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। ये उपकरण न केवल षिक्षकों को पाठ्यक्रम प्रस्तुत करने के नए और रोचक तरीके प्रदान करते हैं, बल्कि छात्रों को भी अधिक संलग्न और उत्साहित रखते हैं। इसके अलावा, प्रौद्योगिकी ने दूरस्थ षिक्षा को संभव बनाकर उन छात्रों के लिए षिक्षा के द्वार खोल दिए हैं जो भौगोलिक, आर्थिक या अन्य बाधाओं के कारण पारंपरिक षिक्षा प्रणाली

का लाभ नहीं उठा पाते थे। हालांकि, प्रौद्योगिकी के इन लाभों के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हुई हैं। डिजिटल विभाजन, साइबर सुरक्षा की चिंताएं, और प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें संबोधित किया जाना आवष्यक है।''

संक्षिप्त रूपः ''आधुनिक षिक्षा में प्रौद्योगिकी का बढ़ता महत्व है। डिजिटल उपकरणों ने षिक्षा में नवाचार लाकर षिक्षकों और छात्रों दोनों को लाभान्वित किया है, साथ ही दूरस्थ षिक्षा को संभव बनाकर षिक्षा की पहुंच बढ़ाई है। हालांकि, डिजिटल विभाजन और साइबर सुरक्षा जैसी चुनौतियों का समाधान आवष्यक है।''

उदाहरण 2ः समाचार लेख का संक्षेपण

मूल समाचारः ''षहर के केंद्रीय पार्क में कल षाम 6 बजे एक विषाल वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान में लगभग 500 स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया, जिनमें स्कूली बच्चे, स्थानीय निवासी और विभिन्न सामाजिक संगठनों के सदस्य षामिल थे। अभियान के दौरान पार्क के विभिन्न हिस्सों में 1000 से अधिक पौधे लगाए गए, जिनमें फलदार वृक्ष, फूलों के पौधे और औशधीय पौधे षामिल थे। षहर के मेयर ने अपने संबोधन में कहा कि यह अभियान षहर को हरा–भरा बनाने और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिषा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने स्वयंसेवकों के उत्साह और समर्पण की सराहना की और आषा व्यक्त की कि भविश्य में ऐसे और भी अभियान आयोजित किए जाएंगे। अभियान के आयोजकों ने बताया कि लगाए गए पौधों की देखभाल के लिए एक विषेश समिति का गठन किया गया है, जो नियमित रूप से पौधों की सिंचाई और रखरखाव सुनिष्चित करेगी।''

संक्षिप्त रूपः ''कल षाम षहर के केंद्रीय पार्क में 500 स्वयंसेवकों की भागीदारी से एक बड़ा वृक्षारोपण अभियान आयोजित किया गया, जिसमें 1000 से अधिक विविध प्रकार के पौधे लगाए गए। मेयर ने इसे पर्यावरण संरक्षण की दिषा में महत्वपूर्ण कदम बताया। पौधों के रखरखाव के लिए एक विषेश समिति गठित की गई है।''

उदाहरण 3ः पुस्तक अध्याय का संक्षेपण

मूल अंष (भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर): ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक लंबा और जटिल आंदोलन था जो 19वीं षताब्दी के मध्य से 20वीं षताब्दी के मध्य तक चला। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए संघर्श नहीं था, बल्कि सामाजिक और आर्थिक सुधारों, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और राश्ट्रीय अस्मिता के निर्माण का भी अभियान था। इस आंदोलन में विभिन्न विचारधाराओं, रणनीतियों और नेतृत्व षैलियों का समावेष था। इसके प्रारंभिक चरण में राजा राममोहन राय, ईष्वरचंद्र विद्यासागर और दयानंद सरस्वती जैसे समाज सुधारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविष्वासों के खिलाफ आवाज उठाई। 1857 का विद्रोह, जिसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में भी जाना जाता है, ब्रिटिष षासन के खिलाफ पहला बड़ा सषस्त्र विद्रोह था। हालांकि यह विद्रोह असफल रहा, लेकिन इसने भारतीयों में राश्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1885 में भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के साथ स्वतंत्रता आंदोलन ने एक संगठित रूप ले लिया। कांग्रेस ने षुरू में ब्रिटिष सरकार से सुधारों की मांग करने की रणनीति अपनाई, लेकिन धीरे–धीरे इसका स्वर अधिक आक्रामक होता गया। 20वीं षताब्दी के प्रारंभ में, महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व संभाला और अहिंसात्मक असहयोग और सत्याग्रह के सिद्धांतों को प्रमुखता दी। उनके नेतृत्व में असहयोग आंदोलन (1920–22), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) जैसे महत्वपूर्ण जन आंदोलन हुए। इन आंदोलनों ने भारतीय जनता में राश्ट्रवाद की भावना जगाई और ब्रिटिष षासन की नींव हिला दी। स्वतंत्रता संग्राम में सुभाश चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रषेखर आजाद जैसे क्रांतिकारी नेताओं

ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिन्होंने हिंसक साधनों से ब्रिटिष षासन का विरोध किया। द्वितीय विष्व युद्ध के बाद, ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई और वह अपने उपनिवेषों को बनाए रखने की स्थिति में नहीं था। अंततः, 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिली, हालांकि देष का विभाजन भारत और पाकिस्तान में हो गया, जिसके परिणामस्वरूप व्यापक हिंसा और विस्थापन हुआ।''

संक्षिप्त रूपः ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 19वीं से 20वीं षताब्दी मध्य तक चला एक बहुआयामी आंदोलन था, जो केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं बल्कि सामाजिक–आर्थिक सुधार और राश्ट्रीय अस्मिता निर्माण का अभियान भी था। प्रारंभ में समाज सुधारकों ने कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाई, फिर 1857 का विद्रोह राश्ट्रीय चेतना जगाने में महत्वपूर्ण रहा। 1885 में भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने आंदोलन को संगठित रूप दिया। 20वीं षताब्दी में गांधीजी के नेतृत्व में अहिंसात्मक आंदोलनों ने जनता में राश्ट्रवाद जगाया, जबकि क्रांतिकारी नेताओं ने हिंसक मार्ग अपनाया। द्वितीय विष्व युद्ध के बाद ब्रिटिष आर्थिक कमजोरी के कारण अंततः 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिली, साथ में विभाजन की त्रासदी भी हुई।''

उदाहरण 4ः वैज्ञानिक अनुच्छेद का संक्षेपण

मूल अनुच्छेदः ''ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन 21वीं सदी की सबसे बड़ी पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक है। यह मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों द्वारा वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों, विषेश रूप से कार्बन डाइऑक्साइड (ब्वॅ), मीथेन (ब्म्२) और नाइट्रस ऑक्साइड (छॉ व्) के बढ़ते उत्सर्जन के कारण होता है। ये गैसें सूर्य से आने वाली ऊश्मा को पष्थ्वी के वातावरण में फंसा लेती हैं, जिससे पष्थ्वी का औसत तापमान बढ़ता है। इस तापमान वष्द्धि के परिणामस्वरूप ग्लेषियर पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, मौसम के पैटर्न में बदलाव आ रहे हैं, और अधिक आवष्त्ति और तीव्रता के साथ चरम मौसमी घटनाएं जैसे बाढ़, सूखा, और तूफान हो रहे हैं। इन परिवर्तनों का प्रभाव न केवल पर्यावरण पर, बल्कि मानव स्वास्थ्य, कृशि, जल संसाधनों, और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए, हमें जीवाष्म ईंधन (जैसे कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस) पर अपनी निर्भरता को कम करना होगा और अधिक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों (जैसे सौर, पवन और जल ऊर्जा) का उपयोग करना होगा। इसके अलावा, ऊर्जा दक्षता में सुधार, वनों की कटाई को रोकना, और पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं को अपनाना भी महत्वपूर्ण है।''

संक्षिप्त रूपः ''ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन मुख्यतः मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न ग्रीनहाउस गैसों के कारण होता है, जो पष्थ्वी के तापमान में वष्द्धि करते हैं। इसके परिणामस्वरूप ग्लेषियर पिघलना, समुद्र स्तर बढ़ना और चरम मौसमी घटनाओं में वष्द्धि हो रही है, जिसका प्रभाव पर्यावरण, स्वास्थ्य, कृशि और अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। इससे निपटने के लिए जीवाष्म ईंधन के स्थान पर नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग, ऊर्जा दक्षता में सुधार और पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं को अपनाना आवष्यक है।''

उदाहरण 5ः व्यावसायिक पत्र का संक्षेपण

मूल पत्रः ''विशयः वार्शिक बिक्री सम्मेलन के संबंध में

महोदयध्महोदया,

मुझे आपको यह सूचित करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हमारी कंपनी अपना वार्शिक बिक्री सम्मेलन दिनांक 15 अक्टूबर से 17 अक्टूबर, 2023 तक होटल ब्लू मून, मुंबई में आयोजित कर रही है। इस तीन दिवसीय सम्मेलन का उद्देष्य हमारी बिक्री रणनीतियों

की समीक्षा करना, आगामी वर्श के लिए नए लक्ष्य निर्धारित करना, और हमारे बिक्री दल के सदस्यों को प्रषिक्षित करना है।

सम्मेलन में विभिन्न प्रख्यात वक्ताओं द्वारा व्याख्यान, कार्यषालाएं, पैनल चर्चाएं और नेटवर्किंग अवसर षामिल होंगे। इसके अलावा, हम अपने नए उत्पादों और सेवाओं का भी अनावरण करेंगे, जो आगामी वर्श में बाजार में उतारे जाएंगे।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्मेलन में भाग लेने की पुश्टि 30 सितंबर, 2023 तक करें, ताकि हम आपके लिए उचित व्यवस्था कर सकें। आवास और यात्रा की व्यवस्था कंपनी द्वारा की जाएगी। यदि आपको किसी विषेश प्रकार की सुविधा या भोजन की आवष्यकता है, तो कृपया अपनी पुश्टि के साथ उसका उल्लेख भी करें।

हम आषा करते हैं कि यह सम्मेलन हमारे सभी बिक्री प्रतिनिधियों के लिए ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक साबित होगा, और हमें अपने बिक्री लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करेगा।

इस सम्मेलन में आपकी उपस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है, और हम आपका स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं।

सधन्यवाद,

राजेष षर्मा बिक्री निदेषक''

संक्षिप्त रूपः ''विशयः वार्शिक बिक्री सम्मेलन

महोदयध्महोदया,

कंपनी का वार्शिक बिक्री सम्मेलन 15–17 अक्टूबर, 2023 को होटल ब्लू मून, मुंबई में आयोजित होगा। इसमें बिक्री रणनीतियों की समीक्षा, नए लक्ष्य निर्धारण, प्रषिक्षण, व्याख्यान, कार्यषालाएं और नए उत्पादों का अनावरण षामिल होगा। कृपया 30 सितंबर तक अपनी उपस्थिति की पुश्टि करें। आवास और यात्रा की व्यवस्था कंपनी द्वारा की जाएगी।

सधन्यवाद,

राजेष षर्मा बिक्री निदेषक''

दिए गए उदाहरणों से स्पश्ट है कि संक्षेपण एक महत्वपूर्ण कौषल है जो विभिन्न प्रकार के लेखन में उपयोगी होता है। अच्छे संक्षेपण के लिए मूल विशय–वस्तु का गहन अध ययन, महत्वपूर्ण बिंदुओं की पहचान, और सटीक भाशा का प्रयोग आवष्यक है। संक्षिप्तीकरण की कला का विकास अभ्यास और निरंतर सुधार के माध्यम से किया जा सकता है।

आत्म मूल्यांकन प्रष्न

बहुविकल्पीय प्रष्न

प्रष्न 1: 'रीढ़ की हड्डी' पाठ का मुख्य विशय क्या है?

।) मानव षरीर रचना

ठ) नैतिक मूल्यों और आत्मसम्मान की महत्ता

ब) चिकित्सा पद्धति

क) पारिवारिक संबंध

उत्तरः ठ) नैतिक मूल्यों और आत्मसम्मान की महत्ता

प्रष्न 2: 'रीढ़ की हड्डी' पाठ में 'रीढ़ की हड्डी' का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है?

।) षरीर की मजबूती

ठ) आत्मसम्मान और दृढ़ निष्चय

ब) षारीरिक संरचना

क) षिक्षा और ज्ञान

उत्तरः ठ) आत्मसम्मान और दृढ़ निष्चय

प्रष्न 3: समास का सही परिभाशा क्या है?

।) दो या अधिक षब्दों के मेल से बना नया सार्थक षब्द

ठ) वाक्य में प्रयुक्त विषेशण षब्द

ब) किसी वाक्य का संक्षिप्त रूप

क) विराम चिन्हों का सही प्रयोग

उत्तरः ।) दो या अधिक षब्दों के मेल से बना नया सार्थक षब्द

प्रष्न 4: 'राजपथ' षब्द किस प्रकार का समास है?

।) द्वंद्व समास

ठ) तत्पुरुश समास

ब) द्विगु समास

क) अव्ययीभाव समास

उत्तरः ठ) तत्पुरुश समास

प्रष्न 5: निम्नलिखित में से कौन–सा विराम चिन्ह प्रष्नवाचक वाक्य में प्रयुक्त होता है?

।) अल्पविराम (,)

ठ) पूर्ण विराम (.)

ब) प्रष्नवाचक चिन्ह (?)

क) अर्द्धविराम (य)

उत्तरः ब) प्रष्नवाचक चिन्ह (?)

प्रष्न 6: 'वाह! कितना सुंदर दृष्य है!' इस वाक्य में कौन–सा विराम चिन्ह प्रयुक्त हुआ है?

।) प्रष्नवाचक चिन्ह (?)

ठ) विस्मयादिबोधक चिन्ह (!)

ब) अल्पविराम (,)

क) अर्द्धविराम (य)

उत्तरः ठ) विस्मयादिबोधक चिन्ह (!)

प्रष्न 7: 'संक्षिप्ति' का अर्थ क्या है?

।) किसी वाक्य को लंबा करना

ठ) किसी वाक्य या षब्द को छोटा और सारगर्भित रूप देना

ब) किसी षब्द का पर्यायवाची खोजना

क) वाक्य को सरल बनाना

उत्तरः ठ) किसी वाक्य या षब्द को छोटा और सारगर्भित रूप देना

प्रष्न 8: 'डॉ.' षब्द किस षब्द का संक्षिप्त रूप है?

।) डॉक्यूमेंट

ठ) डॉक्टर

ब) डाकघर

क) डिक्षनरी

उत्तरः ठ) डॉक्टर

प्रष्न 9: 'संसद भवन' षब्द में कौन–सा समास है?

।) द्वंद्व समास

ठ) कर्मधारय समास

ब) तत्पुरुश समास

क) बहुव्रीहि समास

उत्तरः ठ) कर्मधारय समास

प्रष्न 10: 'सभी छात्र पढ़ाई कर रहे थे, किंतु रवि सो रहा था।' इस वाक्य में कौन–सा विराम चिन्ह प्रयुक्त हुआ है?

।) अल्पविराम (,)

ठ) पूर्ण विराम (.)

ब) प्रष्नवाचक चिन्ह (?)

क) अर्द्धविराम (य)

उत्तरः ।) अल्पविराम (,)

रीढ़ की हड्डी

संक्षिप्त उत्तर वाले प्रष्नः

1. 'रीढ़ की हड्डी' पाठ का मुख्य संदेष क्या है?

2. समास क्या होता है? एक उदाहरण दें।

3. समास विग्रह किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

4. तत्पुरुश समास के दो उदाहरण लिखिए।

5. विराम चिन्हों के कितने प्रकार होते हैं?

6. अल्पविराम (,) और पूर्णविराम (।) का उपयोग कब किया जाता है?

7. संक्षिप्ति क्या होती है? इसका उपयोग क्यों किया जाता है?

8. ''रेलवे'' षब्द का संक्षिप्त रूप क्या होगा?

9. 'भारतीय प्रषासन सेवा' का संक्षिप्त रूप लिखिए।

10. 'अध्यक्ष ने कहा, ''मुझे इस निर्णय पर कोई संदेह नहीं है।''' दृ इस वाक्य में कौन–कौन से विराम चिन्ह हैं?

दीर्घ उत्तर वाले प्रष्नः

1. 'रीढ़ की हड्डी' पाठ का विस्तष्त सारांष लिखिए।

2. पाठ में दिए गए मुख्य पात्रों और उनके गुणों का विष्लेशण कीजिए।

3. समास के भेदों की परिभाशा लिखें और प्रत्येक के दो उदाहरण दें।

4. समास विग्रह के नियम समझाइए और पाँच उदाहरण दीजिए।

5. विराम चिन्हों का भाशा में क्या महत्व है? उदाहरण सहित समझाइए।

6. संक्षिप्ति के उपयोग और लाभों पर एक निबंध लिखिए।

7. ''समास भाशा को अधिक प्रभावी और संक्षिप्त बनाते हैं।'' इस कथन की पुश्टि करें।

8. पाठ 'रीढ़ की हड्डी' में व्यक्त सामाजिक संदेष को विस्तार से समझाइए।

9. ''संक्षिप्ति और समास'' में क्या अंतर है? उदाहरण सहित समझाइए।

10. विराम चिन्हों की अषुद्धियाँ कैसे भाशा की स्पश्टता को प्रभावित करती हैं? इस पर एक लेख लिखिए।

अध्याय 5

मानक भाशा

5.0 उद्देष्य

☐ मानक भाशा की परिभाशा, विषेशताएँ और महत्त्व को समझना।

☐ पदनाम (षब्दों की पहचान और उनके उपयोग) को सीखना।

☐ पत्र लेखन के प्रकार, स्वरूप और उचित षैली को समझना।

☐ अपठित गद्यांष को पढ़कर उसकी उचित व्याख्या और उत्तर देने की क्षमता विकसित करना।

इकाई 13 मानकभाशा

मानक भाशा किसी भी राश्ट्र या समाज की वह भाशिक रूप है जिसे उस देष या समाज में औपचारिक संदर्भों में प्रयोग करने के लिए स्वीकृत किया गया है। यह वह भाशा है जिसका उपयोग षिक्षा, प्रषासन, न्याय, मीडिया और साहित्य जैसे औपचारिक क्षेत्रों में किया जाता है। मानक भाशा का विकास एक जटिल सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक प्रक्रिया के माध्यम से होता है, जिसमें भाशा के एक विषेश रूप को अन्य रूपों पर वरीयता दी जाती है।

मानक भाशा के विकास में अक्सर निम्नलिखित चरण षामिल होते हैंः

☐ चयनः भाशा के कई रूपों या बोलियों में से एक विषेश रूप का चयन

☐ कोडिफिकेषनः चयनित रूप के व्याकरण और षब्दावली का औपचारिक निर्धारण

☐ कार्य वितरणः चयनित रूप को विभिन्न सामाजिक कार्यों के लिए उपयुक्त बनाना

☐ स्वीकृतिः समाज द्वारा इस रूप को मानक के रूप में स्वीकार करना

☐ प्रसारः षिक्षा और मीडिया के माध्यम से मानक रूप का प्रचार–प्रसार

मानक भाशा की प्रमुख विषेशताएँ निम्नलिखित हैंः

1. मानकीकरण

मानक भाशा का नियमन और मानकीकरण व्याकरण, षब्दकोष और उच्चारण के स्तर पर किया जाता है। इसके लिए प्रायः भाशाविदों, षिक्षाविदों और सरकारी संस्थाओं द्वारा निर्धारित नियमों का पालन किया जाता है।

मानकीकरण की प्रक्रिया में षामिल हैंः

☐ व्याकरणिक नियमों का निर्धारणः वाक्य संरचना, क्रिया रूप, काल, लिंग, वचन आदि के नियम

☐ वर्तनी का मानकीकरणः षब्दों के लेखन के लिए निष्चित नियम

☐ उच्चारण का मानकीकरणः षब्दों के उच्चारण के लिए आदर्ष मानदंड

☐ षब्दावली का निर्धारणः मानक षब्दों का चयन और नए षब्दों के निर्माण के नियम

उदाहरण के लिए, हिंदी में केंद्रीय हिंदी निदेषालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी षब्दावली आयोग, और केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो जैसी संस्थाएँ मानकीकरण का कार्य करती हैं।

2. प्रतिश्ठा

मानक भाशा को समाज में उच्च सामाजिक प्रतिश्ठा प्राप्त होती है। इसका उपयोग औपचारिक स्थितियों में होता है और इसे अक्सर 'सही' या 'षुद्ध' भाशा के रूप में देखा जाता है।

प्रतिश्ठा के पहलूः

☐ सामाजिक मूल्यः मानक भाशा पर अधिकार रखने वालों को समाज में अधिक सम्मान मिलता है

☐ सामाजिक गतिषीलताः मानक भाशा का ज्ञान व्यक्ति की सामाजिक और आर्थिक प्रगति में सहायक होता है

☐ संस्थागत समर्थनः षिक्षा, मीडिया और सरकारी संस्थाएँ मानक भाशा का समर्थन करती हैं

☐ भाशिक अभिजात वर्गः मानक भाशा के उपयोगकर्ता प्रायः अभिजात वर्ग से जुड़े होते हैं

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भाशिक प्रतिश्ठा भाशाई अंतर्निहित गुणवत्ता पर नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों और षक्ति संबंधों पर आधारित होती है।

3. स्थिरता

मानक भाशा अपेक्षाकृत स्थिर होती है, हालांकि समय के साथ इसमें परिवर्तन भी होते रहते हैं। यह स्थिरता इसे बड़े भौगोलिक क्षेत्रों में और लंबे समय तक समझे जाने योग्य बनाती है।

स्थिरता के कारण और प्रभावः

☐ लिखित परंपराः लिखित दस्तावेज भाशा को स्थिर रखते हैं

☐ संस्थागत नियंत्रणः षिक्षा संस्थान और भाशा अकादमियाँ परिवर्तन को नियंत्रित करती हैं

☐ पीढ़ीगत निरंतरताः एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान का हस्तांतरण आसान होता है

☐ भौगोलिक एकरूपताः विभिन्न क्षेत्रों के लोग एक–दूसरे को समझ सकते हैं

उदाहरण के लिए, संस्कृत निश्ठ हिंदी और उर्दू निश्ठ हिंदी के बीच का संतुलन स्थापित करके मानक हिंदी का विकास किया गया, जो अब अपेक्षाकृत स्थिर है।

4. कार्यात्मक विस्तार

मानक भाशा का उपयोग विभिन्न सामाजिक संदर्भों और विशयों पर संवाद करने के लिए किया जा सकता है। यह विज्ञान, कानून, प्रौद्योगिकी, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होती है।

कार्यात्मक विस्तार के प्रमुख आयामः

☐ विषेश षब्दावलीः विभिन्न विशयों के लिए विषिश्ट तकनीकी षब्दावली का विकास

☐ षैलीगत विविधताः विभिन्न संदर्भों के लिए उपयुक्त भाशा षैलियों का विकास

☐ अभिव्यक्ति क्षमताः जटिल और सूक्ष्म विचारों को व्यक्त करने की क्षमता

☐ अनुवाद क्षमताः अन्य भाशाओं से और अन्य भाशाओं में अनुवाद की सुविधा

उदाहरणस्वरूप, हिंदी में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, कानून और अन्य क्षेत्रों की पारिभाशिक षब्दावली का विकास किया गया है, जिससे इन क्षेत्रों में हिंदी का प्रभावी उपयोग संभव हो सका है।

5. अंतर्राश्ट्रीय मान्यता

मानक भाशा को अक्सर अंतरराश्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त होती है और इसे अंतरराश्ट्रीय संबंधों, व्यापार और षिक्षा में उपयोग किया जाता है।

अंतरराश्ट्रीय मान्यता के पहलूः

☐ राजनयिक उपयोगः अंतरराश्ट्रीय संधियों, समझौतों और बातचीत में उपयोग

☐ अंतरराश्ट्रीय संगठनों में प्रतिनिधित्वः संयुक्त राश्ट्र जैसे संगठनों में आधिकारिक भाशा का दर्जा

☐ अंतरराश्ट्रीय षिक्षाः विदेषी भाशा के रूप में पढ़ाई जाना

☐ सांस्कृतिक कूटनीतिः सांस्कृतिक आदान–प्रदान और सॉफ्ट पावर का माध्यम

हिंदी के संदर्भ में, यह संयुक्त राश्ट्र में भारत की आधिकारिक भाशा के रूप में प्रयोग की जाती है, और विष्व के कई देषों में हिंदी पढ़ाई और बोली जाती है।

6. कोडिफिकेषन

मानक भाशा के नियमों और मानदंडों को षब्दकोषों, व्याकरण पुस्तकों और अन्य संदर्भ ग्रंथों में लिखित रूप से संकलित किया जाता है।

कोडिफिकेषन के प्रमुख उपकरणः

☐ षब्दकोषः षब्दों के अर्थ, उच्चारण और उपयोग का संकलन

☐ व्याकरण पुस्तकेंः भाशा के संरचनात्मक नियमों का विवरण

☐ वर्तनी निर्देषिकाएँः षब्दों के सही लेखन के लिए निर्देष

☐ उच्चारण गाइडः षब्दों के सही उच्चारण के लिए मानक

हिंदी के संदर्भ में, ''मानक हिंदी कोष'', ''हिंदी षब्द सागर'', ''बृहत हिंदी कोष'' जैसे षब्दकोष और कामता प्रसाद गुरु, किषोरीदास वाजपेयी आदि द्वारा लिखित व्याकरण पुस्तकें इस कोडिफिकेषन का हिस्सा हैं।

7. औपचारिक षिक्षा का माध्यम

मानक भाशा का उपयोग षैक्षिक संस्थानों में षिक्षा के माध्यम के रूप में किया जाता है, जिससे इसका प्रसार और महत्व बढ़ता है।

षिक्षा में मानक भाशा के प्रभावः

- पाठ्यपुस्तकें और षिक्षण सामग्रीः मानक भाशा में निर्मित
- परीक्षाएँ और मूल्यांकनः मानक भाशा में आयोजित
- भाशिक सामाजीकरणः विद्यार्थियों का मानक भाशा से परिचय
- भाशिक अधिकारः मानक भाशा पर अधिकार षैक्षिक और व्यावसायिक सफलता से जुड़ा होता है

भारत में, मानक हिंदी का उपयोग अनेक राज्यों के स्कूलों और विष्वविद्यालयों में षिक्षा के माध्यम के रूप में किया जाता है, और केंद्रीय विद्यालयों में यह अनिवार्य विशय है।

8. साहित्यिक परंपरा

मानक भाशा का विकास प्रायः समष्द्ध साहित्यिक परंपरा के साथ जुड़ा होता है, जिसमें महत्वपूर्ण साहित्यिक कृतियाँ इस भाशा में लिखी जाती हैं।

साहित्यिक परंपरा के महत्वपूर्ण पहलूः

- क्लासिक्स का निर्माणः ऐसी कृतियाँ जो पीढ़ियों तक प्रासंगिक रहती हैं
- साहित्यिक आंदोलनः भाशा के विकास और परिश्करण में योगदान देने वाले आंदोलन
- साहित्यिक संस्थाएँः साहित्य अकादमी जैसी संस्थाएँ जो मानक भाशा को प्रोत्साहित करती हैं
- लेखकों का योगदानः प्रतिश्ठित लेखकों द्वारा मानक भाशा का प्रयोग और समर्थन

आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतेंदु हरिष्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, प्रेमचंद, जयषंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा जैसे साहित्यकारों ने मानक हिंदी के विकास और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी के संदर्भ में, खड़ी बोली पर आधारित मानक हिंदी को भारत की आधिकारिक भाशाओं में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह भारत के विभिन्न राज्यों में षिक्षा, प्रषासन और मीडिया का माध्यम है, और इसकी व्याकरणिक संरचना और षब्दावली को विभिन्न संस्थाओं द्वारा मानकीकृत किया गया है।

मानक भाशा और बोली का अंतर

मानक भाशा और बोली (डायलेक्ट) के बीच अंतर समझना भाशाविज्ञान का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह अंतर न केवल भाशिक है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक

भी है। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से हम मानक भाशा और बोली के बीच के मुख्य अंतरों को विस्तार से समझ सकते हैंः

1. औपचारिकता और मान्यता

मानक भाशाः

☐ राज्य द्वारा मान्यताः मानक भाशा को राज्य या सरकार द्वारा आधिकारिक मान्यता प्राप्त होती है और इसे संविधान, कानून या नीति दस्तावेजों में उल्लेखित किया जाता है।

☐ संस्थागत समर्थनः षिक्षा मंत्रालय, भाशा अकादमी, विष्वविद्यालय आदि जैसी संस्थाएं मानक भाशा का समर्थन और प्रचार करती हैं।

☐ औपचारिक प्रयोगः सरकारी दस्तावेज, न्यायालय की कार्यवाही, षैक्षिक परीक्षाएँ आदि में मानक भाशा का उपयोग किया जाता है।

☐ भाशा नीतिः मानक भाशा के प्रच

मानक भाशा

इकाई 14 पदनाम

पदनाम हिंदी व्याकरण का एक महत्वपूर्ण अंग है। पदनाम का षाब्दिक अर्थ होता है – पद का नाम। इसे संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। दूसरे षब्दों में, पदनाम वे षब्द हैं जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं और संज्ञा के बारे में जानकारी देते हैं। संज्ञा के बार–बार प्रयोग से बचने के लिए पदनाम का प्रयोग किया जाता है। हिंदी भाशा में पदनाम को 'सर्वनाम' भी कहा जाता है।

सर्वनाम या पदनाम के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैंः

1. पुरुशवाचक सर्वनामः ये वे षब्द हैं जो व्यक्ति के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं। जैसे – मैं, तुम, वह, आप, हम, वे आदि। इसके तीन भेद हैंः

☐ उत्तम पुरुशः जब वक्ता अपने बारे में बात करता है। जैसे – मैं, हम

☐ मध्यम पुरुशः जब वक्ता जिससे बात कर रहा है, उसके लिए। जैसे – तुम, आप

☐ अन्य पुरुशः जिसके बारे में बात की जा रही है। जैसे – वह, वे

2. निष्चयवाचक सर्वनामः जब किसी निष्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए सर्वनाम का प्रयोग होता है। जैसे – यह, वह, ये, वे

3. अनिष्चयवाचक सर्वनामः जब किसी अनिष्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए सर्वनाम का प्रयोग होता है। जैसे – कोई, कुछ, कौन, क्या

4. संबंधवाचक सर्वनामः जो दो वाक्यों को जोड़ता है और पहले वाक्य के किसी षब्द से संबंध बताता है। जैसे – जो, सो, जिसने, जिसको

5. प्रष्नवाचक सर्वनामः जिनका प्रयोग प्रष्न पूछने के लिए किया जाता है। जैसे – कौन, क्या, किसे, किसको

6. निजवाचक सर्वनामः जिनका प्रयोग किसी कार्य के कर्ता पर ही बल देने के लिए होता है। जैसे – स्वयं, आप, खुद, अपने आप

7. पारस्परिक सर्वनामः जब दो या दो से अधिक व्यक्तियों का एक–दूसरे के प्रति कार्य होता है। जैसे – एक–दूसरे, आपस में, परस्पर

8. साधारण सर्वनामः जिनमें लिंग, वचन और कारक के अनुसार रूप परिवर्तन होता है। जैसे – मैं, तू, वह

व्याकरण में पदनाम का महत्त्व

हिंदी व्याकरण में पदनाम का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से व्याकरण में पदनाम के महत्त्व को समझा जा सकता हैः

1. पुनरावषत्ति से बचावः पदनाम का सबसे महत्वपूर्ण कार्य संज्ञा की पुनरावषत्ति से बचाना है। उदाहरण के लिए, ''राम विद्यालय गया। राम ने अपना गष्हकार्य किया। राम घर लौट आया।'' इस वाक्य में 'राम' षब्द की पुनरावषत्ति हो रही है। पदनाम के प्रयोग से इसे इस प्रकार लिख सकते हैंः ''राम विद्यालय गया। उसने अपना गष्हकार्य किया। वह घर लौट आया।''

2. वाक्य संरचना में सहायकः पदनाम वाक्य की संरचना को सुदृढ़ और प्रवाहमय बनाने में सहायक होते हैं। ये वाक्य को सरल, सुबोध और आकर्शक बनाते हैं।

3. संदर्भ स्पश्टताः पदनाम वाक्य में संदर्भ को स्पश्ट करने में मदद करते हैं। यह बताते हैं कि वाक्य में किसके बारे में बात की जा रही है।

4. विभिन्न वाक्य प्रकारों का निर्माणः पदनामों के विभिन्न प्रकारों के प्रयोग से विभिन्न प्रकार के वाक्यों का निर्माण होता है, जैसे – प्रष्नवाचक वाक्य, संबंधवाचक वाक्य आदि।

5. लिंग, वचन और कारक परिवर्तनः पदनामों में लिंग, वचन और कारक के अनुसार परिवर्तन होता है, जो व्याकरणिक नियमों का पालन करने में मदद करता है। उदाहरण के लिएः

- लड़का जा रहा है। वह विद्यालय जाएगा। (पुल्लिंग)
- लड़की जा रही है। वह विद्यालय जाएगी। (स्त्रीलिंग)
- बच्चे खेल रहे हैं। वे स्कूल जाएंगे। (बहुवचन)

6. वाक्य का अर्थ परिवर्तनः पदनाम के प्रयोग से वाक्य का अर्थ परिवर्तित हो सकता है। उदाहरण के लिएः

- वह पुस्तक पढ़ता है। (अन्य पुरुश)
- मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। (उत्तम पुरुश)
- तुम पुस्तक पढ़ते हो। (मध्यम पुरुश)

7. औपचारिकता और अनौपचारिकता का बोधः पदनामों के प्रयोग से वाक्य में औपचारिकता या अनौपचारिकता का बोध होता है। जैसे – 'आप' का प्रयोग औपचारिक और 'तुम' का प्रयोग अपेक्षाकृत अनौपचारिक होता है।

8. काल और क्रिया का सामंजस्यः पदनाम के अनुसार क्रिया और काल का प्रयोग होता है, जो वाक्य की व्याकरणिक षुद्धता को बनाए रखता है। उदाहरण के लिएः

- ☐ मैं जाता हूँ। (उत्तम पुरुश, एकवचन)
- ☐ हम जाते हैं। (उत्तम पुरुश, बहुवचन)
- ☐ तुम जाते हो। (मध्यम पुरुश, एकवचनध्बहुवचन)
- ☐ वह जाता है। (अन्य पुरुश, एकवचन, पुल्लिंग)
- ☐ वे जाते हैं। (अन्य पुरुश, बहुवचन)

9. संवाद में महत्वः संवाद लेखन में पदनामों का विषेश महत्व होता है, क्योंकि इनके माध्यम से वक्ता–श्रोता का संबंध स्पश्ट होता है।

10. सामासिक षब्दों का निर्माणः कई सामासिक षब्दों के निर्माण में पदनामों का योगदान होता है। जैसे – आत्मविष्वास, स्वाभिमान, आत्मनिर्भर आदि।

पदनाम या सर्वनाम हिंदी व्याकरण का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। यह न केवल भाशा को सरल और प्रवाहमय बनाता है, बल्कि वाक्य संरचना, अर्थ और संदर्भ को स्पश्ट करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पदनाम के विभिन्न प्रकारों का उचित प्रयोग भाशा की सौंदर्यता और प्रभावषीलता को बढ़ाता है। इसके अभाव में भाशा अस्पश्ट, जटिल और पुनरावषत्ति से भरी हो सकती है। अतः हिंदी व्याकरण में पदनाम का अध्ययन और उसका उचित प्रयोग अत्यंत आवष्यक है।

इकाई 15 व्यवहार एवं पत्रलेखन

पत्रलेखन संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। आज डिजिटल युग में भी पत्रों का अपना विषेश महत्व है। चाहे वह ईमेल हो या कागज पर लिखा गया पत्र, इसकी औपचारिकता और षैली सदैव महत्वपूर्ण रहती है। पत्रलेखन मूलतः दो प्रकार के होते हैं – औपचारिक पत्र और अनौपचारिक पत्र। इस लेख में हम दोनों प्रकार के पत्रों के नियम, प्रारूप और उदाहरणों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

1. औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र वे पत्र होते हैं जो कार्यालयीन, व्यावसायिक, सरकारी संस्थानों या अपरिचित व्यक्तियों को लिखे जाते हैं। इनमें गंभीरता, षालीनता और औपचारिकता का विषेश ध्यान रखा जाता है।

औपचारिक पत्र के प्रमुख प्रकार

1. सरकारी पत्रः विभिन्न सरकारी विभागों को लिखे जाने वाले पत्र
2. व्यावसायिक पत्रः व्यापारिक संबंधों के लिए लिखे जाने वाले पत्र
3. आवेदन पत्रः नौकरी, छात्रवषत्ति, प्रवेष आदि के लिए लिखे जाने वाले पत्र
4. षिकायती पत्रः किसी समस्या या षिकायत को दर्ज कराने के लिए लिखे जाने वाले पत्र
5. संपादक को पत्रः समाचार पत्र या पत्रिका के संपादक को लिखे जाने वाले पत्र

औपचारिक पत्र का प्रारूप

1. प्रेशक का पता और दिनांकः

☐ प्रेशक का पूरा पता पत्र के ऊपरी बाईं ओर लिखा जाता है।

☐ दिनांक पत्र के ऊपरी दाईं ओर लिखी जाती है।

2. प्राप्तकर्ता का पताः

☐ प्राप्तकर्ता का पूरा पता प्रेशक के पते के नीचे बाईं ओर लिखा जाता है।

3. विशयः

☐ पत्र का विशय संक्षिप्त और स्पश्ट होना चाहिए।

☐ विशय प्राप्तकर्ता के पते के नीचे लिखा जाता है।

4. संबोधनः

☐ औपचारिक पत्र में ''महोदयध्महोदया'', ''आदरणीय महोदयध्महोदया'', ''माननीय'' आदि संबोधनों का प्रयोग किया जाता है।

5. पत्र का मुख्य भागः

☐ प्रारंभिक अनुच्छेदः पत्र लिखने का उद्देष्य बताया जाता है।

☐ मध्य अनुच्छेदः विशय का विस्तष्त विवरण दिया जाता है।

☐ अंतिम अनुच्छेदः निश्कर्श और अनुरोधध्धन्यवाद आदि व्यक्त किए जाते हैं।

6. समापनः

☐ औपचारिक पत्र में ''भवदीय'', ''आपकाध्आपकी आज्ञाकारी'', ''सादर'' आदि का प्रयोग किया जाता है।

7. हस्ताक्षर और नामः

☐ हस्ताक्षर समापन वाक्य के नीचे दाईं ओर किए जाते हैं।

☐ हस्ताक्षर के नीचे प्रेशक का नाम और पद (यदि है) लिखा जाता है।

8. संलग्नक (यदि हों):

☐ पत्र के अंत में संलग्न दस्तावेजों का उल्लेख किया जाता है।

औपचारिक पत्र लेखन के नियम

1. भाशाः

☐ औपचारिक पत्र में सरल, स्पश्ट और षुद्ध भाशा का प्रयोग करें।

☐ जटिल षब्दों और वाक्यों से बचें।

☐ व्याकरण की षुद्धता का विषेश ध्यान रखें।

2. शैलीः

- ☐ औपचारिक और विनम्र शैली का प्रयोग करें।
- ☐ विशय पर केन्द्रित रहें और अनावष्यक विवरणों से बचें।
- ☐ संक्षिप्त और स्पश्ट वाक्यों का प्रयोग करें।

3. प्रस्तुतिः

- ☐ पत्र स्वच्छ और सुव्यवस्थित होना चाहिए।
- ☐ अनुच्छेदों में विभाजित करें।
- ☐ यदि हस्तलिखित है, तो साफ और स्पश्ट लिखावट का ध्यान रखें।

4. संक्षिप्तताः

- ☐ पत्र यथासंभव संक्षिप्त होना चाहिए।
- ☐ अनावष्यक विवरणों से बचें।

5. सम्मान और षिश्टताः

- ☐ पत्र में सम्मानजनक और षिश्ट भाशा का प्रयोग करें।
- ☐ आक्रामक या अपमानजनक भाशा से बचें।

औपचारिक पत्र का उदाहरणः नौकरी के लिए आवेदन पत्र

दिनेष कुमार

123, गांधी नगर

लखनऊ – 226001

दिनांकः 15 मार्च, 2025

प्रबंधक

एबीसी कंपनी लिमिटेड

45, इंडस्ट्रियल एरिया

लखनऊ – 226005

विशयः मार्केटिंग मैनेजर पद के लिए आवेदन

आदरणीय महोदयध्महोदया,

मैं आपके समाचार पत्र विज्ञापन दिनांक 10 मार्च, 2025 के संदर्भ में मार्केटिंग मैनेजर पद के लिए अपना आवेदन प्रस्तुत कर रहाध्रही हूँ।

मैंने लखनऊ विष्वविद्यालय से मार्केटिंग में एमबीए की डिग्री प्राप्त की है और मुझे एक्सवाईजेड कंपनी में पिछले पांच वर्शों से मार्केटिंग क्षेत्र में कार्य करने का अनुभव है।

मेरे कार्यकाल के दौरान, मैंने कंपनी के बिक्री प्रदर्षन में 30ः की वषद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुझे विष्वास है कि मेरा अनुभव और योग्यता आपकी कंपनी की आवष्यकताओं के अनुरूप है। मैं आपकी प्रतिश्ठित कंपनी के साथ काम करने का अवसर पाकर प्रसन्न होऊंगाध होऊंगी।

मेरा बायोडाटा इस पत्र के साथ संलग्न है। मुझे आषा है कि आप मेरे आवेदन पर विचार करेंगे और साक्षात्कार के लिए अवसर प्रदान करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,

दिनेष कुमार

संलग्नः बायोडाटा

औपचारिक पत्र का उदाहरणः षिकायती पत्र

सुमन षर्मा

456, सुभाश नगर

जयपुर – 302001

दिनांकः 20 मार्च, 2025

नगर निगम अधिकारी

जयपुर नगर निगम

जयपुर – 302002

विशयः मोहल्ले में जल निकासी की समस्या

माननीय महोदय,

मैं आपका ध्यान अपने मोहल्ले सुभाश नगर में जल निकासी की गंभीर समस्या की ओर आकर्शित करना चाहताध्चाहती हूँ।

पिछले एक महीने से हमारे मोहल्ले में नालियाँ जाम हैं, जिससे गंदा पानी सड़कों पर फैल रहा है। इससे न केवल दुर्गंध फैल रही है, बल्कि मच्छरों का प्रकोप भी बढ़ गया है, जिससे स्वास्थ्य की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

मैं आपसे अनुरोध करताध्करती हूँ कि इस समस्या का जल्द से जल्द समाधान करने के लिए आवष्यक कदम उठाएँ। मेरा सुझाव है कि नालियों की नियमित सफाई की व्यवस्था की जाए और क्षतिग्रस्त नालियों की मरम्मत की जाए।

आषा करताध्करती हूँ कि आप इस समस्या पर षीघ्र कार्रवाई करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,

सुमन षर्मा

मोबाइलः 9876543210

2. अनौपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र वे पत्र होते हैं जो मित्रों, रिष्तेदारों या परिवार के सदस्यों को लिखे जाते हैं। इनमें भावनाओं और व्यक्तिगत अनुभवों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता होती है।

अनौपचारिक पत्र के प्रमुख प्रकार

1. पारिवारिक पत्रः माता–पिता, भाई–बहन या अन्य रिष्तेदारों को लिखे जाने वाले पत्र

2. मित्रों को पत्रः दोस्तों को लिखे जाने वाले पत्र

3. निमंत्रण पत्रः षादी, जन्मदिन या अन्य समारोहों के लिए निमंत्रण देने वाले पत्र

4. बधाई पत्रः किसी सफलता या खुषी के अवसर पर बधाई देने वाले पत्र

5. संवेदना पत्रः दुःख के समय सांत्वना देने वाले पत्र

अनौपचारिक पत्र का प्रारूप

1. स्थान और दिनांकः

☐ पत्र के ऊपरी दाईं ओर स्थान और दिनांक लिखी जाती है।

2. संबोधनः

☐ अनौपचारिक पत्र में ''प्रिय मित्र'', ''प्रिय भाईध्बहन'', ''प्यारे पापाध्मम्मी'' आदि संबोधनों का प्रयोग किया जाता है।

3. अभिवादनः

☐ संबोधन के बाद अभिवादन जैसे ''सप्रेम नमस्ते'', ''आषीर्वाद'' आदि लिखा जाता है।

4. पत्र का मुख्य भागः

☐ प्रारंभिक अनुच्छेदः कुषलक्षेम पूछा जाता है और पत्र लिखने का कारण बताया जाता है।

☐ मध्य अनुच्छेदः विशय का विस्तष्त विवरण दिया जाता है।

☐ अंतिम अनुच्छेदः पत्र का समापन और षुभकामनाएँ व्यक्त की जाती हैं।

5. समापनः

☐ अनौपचारिक पत्र में ''तुम्हाराध्तुम्हारी'', ''तुम्हारा प्यार चाहने वालाध्वाली'', ''तुम्हारा हितैशी'' आदि का प्रयोग किया जाता है।

6. हस्ताक्षरः

☐ हस्ताक्षर समापन वाक्य के नीचे दाईं ओर किए जाते हैं।

अनौपचारिक पत्र लेखन के नियम

1. भाशाः

☐ अनौपचारिक पत्र में सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण भाशा का प्रयोग करें।

☐ दैनिक बोलचाल की भाशा का प्रयोग कर सकते हैं।

☐ व्यक्तिगत भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता है।

2. षैलीः

☐ मित्रवत और आत्मीय षैली का प्रयोग करें।

☐ व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं को साझा करें।

☐ हास्य और विनोद का समावेष कर सकते हैं।

3. प्रस्तुतिः

☐ पत्र स्वच्छ और पठनीय होना चाहिए।

☐ अनौपचारिक होने के बावजूद व्याकरण और वर्तनी की षुद्धता का ध्यान रखें।

4. संक्षिप्तताः

☐ अनौपचारिक पत्र में विस्तार से लिख सकते हैं, लेकिन अनावष्यक विवरणों से बचें।

अनौपचारिक पत्र का उदाहरणः मित्र को पत्र

जयपुर

15 मार्च, 2025

प्रिय राहुल,

सप्रेम नमस्ते!

आषा करताध्करती हूँ कि तुम अच्छे स्वास्थ्य और प्रसन्नता में होगे। मुझे तुम्हारा पत्र मिला, जिससे मुझे बहुत खुषी हुई। मैं यहाँ जयपुर में अच्छी तरह से हूँ और अपनी पढ़ाई में व्यस्त हूँ।

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुमने अपनी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किए हैं। तुम्हारी मेहनत रंग लाई, इसके लिए बधाई! मैंने भी अपनी परीक्षा की तैयारी षुरू कर दी है। अगले महीने मेरी अंतिम परीक्षा है और मैं दिन–रात पढ़ाई में व्यस्त हूँ।

वैसे, पिछले सप्ताह मैं अपने परिवार के साथ अजमेर घूमने गयाध्गई थाध्थी। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक स्थल देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। अगली बार जब तुम यहाँ आओगे, तो हम साथ में वहाँ जरूर जाएँगे।

अब मुझे पढ़ाई के लिए वापस जाना है। अपने माता–पिता को मेरा प्रणाम कहना और घर के सभी सदस्यों को मेरा नमस्कार।

तुम्हाराध्तुम्हारी पत्र का इंतजार रहेगा।

तुम्हारा मित्र,

अनिलध्अनिता

अनौपचारिक पत्र का उदाहरणः माता–पिता को पत्र

मुंबई

20 मार्च, 2025

पूज्य माता–पिता,

सादर प्रणाम!

आषा करताध्करती हूँ कि आप दोनों स्वस्थ और प्रसन्न होंगे। मुझे आपका आषीर्वाद मिल रहा है, मैं यहाँ मुंबई में बिलकुल ठीक हूँ।

मुझे आपका पत्र मिला और जानकर खुषी हुई कि घर पर सब कुषल–मंगल है। मेरी पढ़ाई अच्छी चल रही है। पिछले सप्ताह मेरे मिड–टर्म एग्जाम थे, जिसमें मैंने अच्छा प्रदर्षन किया। अब मैं फाइनल एग्जाम की तैयारी में जुट गयाध्गई हूँ। आपकी दुआओं से मुझे विष्वास है कि मैं अच्छे अंकों से पास होऊंगाध्होऊंगी।

छात्रावास में सब अच्छा चल रहा है। मेरे कई अच्छे दोस्त बन गए हैं और हम मिलकर पढ़ाई करते हैं। खाना भी अच्छा मिल रहा है, इसलिए आप चिंता न करें।

वैसे, मुझे कुछ किताबें और स्टेषनरी खरीदनी है। आप कृपया 5000 रुपये मेरे बैंक खाते में भेज दें। मैं पैसों का सदुपयोग करूंगाध्करूंगी और हिसाब रखूंगाध्रखूंगी।

छोटे भाई को मेरा प्यार और दादी–दादा को मेरा प्रणाम कहियेगा। आपके आषीर्वाद की सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

आपका आज्ञाकारी पुत्रध्पुत्री,

रोहितध्रोहिणी

3. पत्रलेखन के सामान्य नियम और सुझाव

1. स्पश्टता और संक्षिप्तताः

- ☐ पत्र की भाशा स्पश्ट, सरल और संक्षिप्त होनी चाहिए।
- ☐ एक वाक्य में एक ही विचार व्यक्त करें।

2. षुद्धताः

- ☐ व्याकरण, वर्तनी और विराम चिह्नों की षुद्धता का ध्यान रखें।
- ☐ पत्र को लिखने से पहले और बाद में एक बार जांच लें।

3. प्रासंगिकताः

- ☐ पत्र का विशय प्रासंगिक और स्पश्ट होना चाहिए।

- अनावष्यक बातों से बचें।

4. षालीनताः

- पत्र की भाशा षालीन और सम्मानजनक होनी चाहिए।
- आक्रामक या अपमानजनक षब्दों से बचें।

5. संरचनाः

- पत्र को अनुच्छेदों में विभाजित करें।
- प्रत्येक अनुच्छेद एक नए विचार या बिंदु से षुरू करें।

6. सुलेखः

- यदि हस्तलिखित पत्र है, तो साफ और स्पश्ट अक्षरों में लिखें।
- टाइप किए गए पत्र में उचित फॉन्ट साइज और स्पेसिंग का ध्यान रखें।

7. सही पता और संपर्क विवरणः

- प्रेशक और प्राप्तकर्ता का सही पता और संपर्क विवरण लिखें।
- पिन कोड का उल्लेख अवष्य करें।

8. दिनांक और स्थानः

- पत्र में दिनांक और स्थान का उल्लेख अवष्य करें।

9. विशयः

- औपचारिक पत्र में विशय का उल्लेख अवष्य करें।
- विशय संक्षिप्त और स्पश्ट होना चाहिए।

10. उपयुक्त संबोधन और समापनः

- पत्र के प्रकार और संबंध के अनुसार उपयुक्त संबोधन और समापन वाक्य का प्रयोग करें।

4. आधुनिक युग में पत्रलेखन

आज के डिजिटल युग में ईमेल, व्हाट्सएप और अन्य डिजिटल माध्यमों ने पारंपरिक पत्रलेखन को कुछ हद तक प्रभावित किया है। फिर भी, पत्रलेखन के मूल सिद्धांत और नियम अभी भी प्रासंगिक हैं।

ईमेल लेखन के नियम

1. विशय पंक्तिः

- विशय पंक्ति स्पश्ट, संक्षिप्त और प्रासंगिक होनी चाहिए।
- विशय पंक्ति से प्राप्तकर्ता को ईमेल का उद्देष्य पता चलना चाहिए।

2. संबोधनः

☐ औपचारिक ईमेल में ''आदरणीय महोदयध्महोदया'' या ''प्रिय ख्नाम,'' का प्रयोग करें।

☐ अनौपचारिक ईमेल में ''प्रिय'' या ''हैलो'' का प्रयोग कर सकते हैं।

3. विशय–वस्तुः

☐ ईमेल संक्षिप्त और स्पश्ट होनी चाहिए।

☐ महत्वपूर्ण बिंदुओं को बुलेट या नंबर के रूप में प्रस्तुत करें।

4. समापनः

☐ औपचारिक ईमेल में ''धन्यवाद'', ''सादर'' आदि का प्रयोग करें।

☐ अनौपचारिक ईमेल में ''षुभकामनाओं सहित'', ''अभिवादन'' आदि का प्रयोग कर सकते हैं।

5. हस्ताक्षरः

☐ अपना नाम, पद, कंपनी का नाम और संपर्क विवरण षामिल करें।

व्हाट्सएप या ैडै संदेष लेखन के नियम

1. संक्षिप्तताः

☐ संदेष संक्षिप्त और स्पश्ट होना चाहिए।

☐ एक संदेष में एक ही विचार व्यक्त करें।

2. भाशाः

☐ सरल और बोलचाल की भाशा का प्रयोग करें।

☐ षॉर्ट फॉर्म का अत्यधिक प्रयोग न करें।

3. समय का ध्यानः

☐ देर रात या अनुपयुक्त समय पर संदेष न भेजें।

4. इमोजी का उचित प्रयोगः

☐ इमोजी का प्रयोग संदेष को जीवंत बना सकता है, लेकिन अत्यधिक प्रयोग से बचें।

☐ औपचारिक संदेषों में इमोजी का प्रयोग सीमित करें या न करें।

5. पत्रलेखन के लाभ

1. व्यक्तिगत संबंधों को बनाए रखनाः

☐ पत्र लिखना व्यक्तिगत संबंधों को मजबूत बनाने का एक प्रभावी तरीका है।

2. विचारों और भावनाओं का प्रभावी संप्रेशणः

☐ पत्र के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को गहराई से और प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकते हैं।

3. औपचारिक संचार का माध्यम

5.4 अपठित गद्यांष

अपठित गद्यांष वह अनदेखा या अनजाना गद्य खंड होता है जिसे परीक्षार्थी ने पहले नहीं पढ़ा होता है। इस प्रकार के प्रष्न परीक्षार्थी की पठन–समझ, विष्लेशण और अभिव्यक्ति क्षमता का परीक्षण करते हैं। आज के समय में अपठित गद्यांष हिंदी परीक्षाओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, चाहे वह स्कूली परीक्षाएँ हों या प्रतियोगी परीक्षाएँ।

गद्यांष पढ़ने की विधि

1. सम्यक अवलोकन और पठन

अपठित गद्यांष को समझने की प्रक्रिया में पहला कदम है उसका सावधानीपूर्वक अवलोकन और पठन। गद्यांष को पहली बार पढ़ते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखेंः

☐ धीरे–धीरे और सावधानीपूर्वक पढ़ेंः गद्यांष को जल्दबाजी में न पढ़ें। हर षब्द और वाक्य पर ध्यान दें।

☐ मुख्य विचारों पर ध्यान केंद्रित करेंः पढ़ते समय गद्यांष के मुख्य विचारों को समझने का प्रयास करें।

☐ आलोचनात्मक दृश्टिकोण अपनाएँः गद्यांष में दिए गए तथ्यों और विचारों को आलोचनात्मक दृश्टिकोण से देखें।

2. दूसरी बार पठन और अंडरलाइनिंग

गद्यांष को पहली बार पढ़ने के बाद, दूसरी बार पढ़ते समय महत्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित करेंः

☐ मुख्य षब्दों और वाक्यांषों को रेखांकित करेंः जिन षब्दों या वाक्यांषों से गद्यांष का मुख्य विचार प्रकट होता है, उन्हें रेखांकित करें।

☐ तथ्यों और आँकड़ों को चिह्नित करेंः गद्यांष में दिए गए तथ्यों, आँकड़ों और उदाहरणों को विषेश रूप से चिह्नित करें।

☐ कारण–प्रभाव संबंधों पर ध्यान देंः गद्यांष में वर्णित घटनाओं के बीच कारण–प्रभाव संबंधों को समझने का प्रयास करें।

3. संक्षिप्त नोट्स बनाना

गद्यांष के किनारे या एक अलग कागज पर संक्षिप्त नोट्स बनाएँः

☐ मुख्य विचारों को लिखेंः गद्यांष के मुख्य विचारों को अपने षब्दों में संक्षेप में लिखें।

☐ अनुच्छेदों का सार निकालेंः प्रत्येक अनुच्छेद का सार एक या दो वाक्यों में लिखें।

☐ षब्दावली पर ध्यान दें: नए या कठिन षब्दों के अर्थ समझें और उन्हें नोट करें।

4. गद्यांष का विष्लेशण

गद्यांष को समझने के लिए उसका विष्लेशण करें:

☐ विशय–वस्तु की पहचान: गद्यांष किस विशय पर केंद्रित है? यह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या अन्य किसी विशय से संबंधित है?

☐ लेखक के दृश्टिकोण की पहचान: लेखक का दृश्टिकोण क्या है? वह तटस्थ है, पक्षपातपूर्ण है, या आलोचनात्मक है?

☐ लेखन षैली का विष्लेशण: लेखक की भाशा–षैली कैसी है? वह वर्णनात्मक है, विवरणात्मक है, विष्लेशणात्मक है, या भावनात्मक है?

5. प्रष्नों का अवलोकन

गद्यांष से संबंधित प्रष्नों को पढ़ें और समझें:

☐ प्रष्नों के प्रकार की पहचान: प्रष्न तथ्यात्मक हैं, विष्लेशणात्मक हैं, या व्याख्यात्मक हैं?

☐ प्रष्नों में दिए गए संकेतों पर ध्यान दें: प्रष्नों में दिए गए संकेतों से उत्तर खोजने में मदद मिल सकती है।

☐ प्रष्नों के अनुसार गद्यांष को फिर से पढ़ें: प्रष्नों को ध्यान में रखकर गद्यांष के संबंधित भागों को फिर से पढ़ें।

प्रष्नों के उत्तर देने की तकनीक

1. तथ्यात्मक प्रष्नों के उत्तर

तथ्यात्मक प्रष्न गद्यांष में दिए गए तथ्यों, आँकड़ों, नामों, स्थानों, तिथियों आदि से संबंधित होते हैं:

☐ सीधे और संक्षिप्त उत्तर दें: तथ्यात्मक प्रष्नों के उत्तर सीधे और संक्षिप्त होने चाहिए।

☐ गद्यांष से प्रमाण प्रस्तुत करें: उत्तर में गद्यांष से संबंधित प्रमाण या उद्धरण दें।

☐ अपने षब्दों में व्यक्त करें: गद्यांष के षब्दों को ज्यों का त्यों न लिखकर अपने षब्दों में व्यक्त करें।

उदाहरण:

☐ प्रष्न: ''गद्यांष के अनुसार, भारत में कितने प्रतिषत लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं?''

☐ उत्तर: ''गद्यांष के अनुसार, भारत में लगभग 65: लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हैं।''

2. विष्लेशणात्मक प्रष्नों के उत्तर

विष्लेशणात्मक प्रष्न गद्यांष के विचारों, तर्कों, कारण–प्रभाव संबंधों आदि के विष्लेशण से संबंधित होते हैं:

☐ तार्किक विष्लेशण प्रस्तुत करें: गद्यांष के विचारों का तार्किक विष्लेशण करें।

☐ उदाहरणों का प्रयोग करें: अपने विष्लेशण को समझाने के लिए गद्यांष से उदाहरण दें।

☐ स्पश्ट संरचना का पालन करें: उत्तर में स्पश्ट संरचना होनी चाहिए – परिचय, मुख्य विष्लेशण और निश्कर्श।

उदाहरण:

☐ प्रष्न: ''गद्यांष के अनुसार, पर्यावरण प्रदूशण के क्या कारण हैं और उनके क्या प्रभाव हैं?''

☐ उत्तर: ''गद्यांष के अनुसार, पर्यावरण प्रदूशण के मुख्य कारण औद्योगिकीकरण, वाहनों से निकलने वाले धुएँ और वनों की कटाई हैं। इनके प्रभावस्वरूप जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास और मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है। गद्यांष में उल्लेखित उदाहरण के अनुसार, औद्योगिक क्षेत्रों के आसपास रहने वाले लोगों में ष्वसन संबंधी रोगों की संख्या में वृद्धि हुई है।''

3. व्याख्यात्मक प्रष्नों के उत्तर

व्याख्यात्मक प्रष्न गद्यांष के विचारों, अवधारणाओं, आदर्षों आदि की व्याख्या से संबंधित होते हैं:

☐ विस्तष्त व्याख्या प्रस्तुत करें: गद्यांष में दिए गए विचारों की विस्तष्त व्याख्या करें।

☐ अपने विचार जोड़ें: गद्यांष के विचारों पर अपने विचार भी प्रस्तुत करें।

☐ समकालीन संदर्भों से जोड़ें: गद्यांष के विचारों को समकालीन संदर्भों से जोड़कर देखें।

उदाहरण:

☐ प्रष्न: ''गद्यांष में वर्णित 'सतत विकास' की अवधारणा को समझाइए।''

☐ उत्तर: ''गद्यांष में वर्णित 'सतत विकास' की अवधारणा वर्तमान पीढ़ी की आवष्यकताओं को पूरा करते हुए भविश्य की पीढ़ियों की आवष्यकताओं को सुरक्षित रखने पर केंद्रित है। यह अवधारणा आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने पर बल देती है। गद्यांष के अनुसार, सतत विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विकास और पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण आवष्यक है।''

4. षीर्शक और सारांष संबंधी प्रष्नों के उत्तर

अपठित गद्यांष में अक्सर षीर्शक और सारांष से संबंधित प्रष्न पूछे जाते हैं:

☐ उपयुक्त षीर्शक सुझाएँ: गद्यांष के मुख्य विचार को प्रतिबिंबित करने वाला संक्षिप्त और आकर्शक षीर्शक सुझाएँ।

☐ संक्षिप्त सारांष लिखेंः गद्यांष का संक्षिप्त सारांष लिखते समय मुख्य विचारों को षामिल करें और अनावष्यक विवरणों को छोड़ दें।

☐ अपने षब्दों में लिखेंः षीर्शक और सारांष अपने षब्दों में लिखें, न कि गद्यांष के षब्दों को ज्यों का त्यों उठाकर।

उदाहरणः

☐ प्रष्नः ''दिए गए गद्यांष के लिए उपयुक्त षीर्शक सुझाइए।''

☐ उत्तरः ''दिए गए गद्यांष के लिए उपयुक्त षीर्शक 'डिजिटल युग में मानवीय संवेदनाओं का महत्व' हो सकता है, क्योंकि गद्यांष मुख्य रूप से तकनीकी प्रगति के बीच मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं के संरक्षण पर केंद्रित है।''

5. षब्दार्थ और व्याकरण संबंधी प्रष्नों के उत्तर

अपठित गद्यांष में कभी–कभी षब्दार्थ, पर्यायवाची, विलोम षब्द, वाक्य संरचना आदि से संबंधित प्रष्न भी पूछे जाते हैंः

☐ संदर्भ के अनुसार अर्थ बताएँः षब्द का अर्थ गद्यांष के संदर्भ के अनुसार बताएँ।

☐ व्याकरण नियमों का पालन करेंः व्याकरण संबंधी प्रष्नों के उत्तर देते समय व्याकरण के नियमों का ध्यान रखें।

☐ स्पश्ट और संक्षिप्त उत्तर देंः षब्दार्थ और व्याकरण संबंधी प्रष्नों के उत्तर स्पश्ट और संक्षिप्त होने चाहिए।

उदाहरणः

☐ प्रष्नः ''गद्यांष में आए षब्द 'संकट' का अर्थ लिखिए और इसका वाक्य में प्रयोग कीजिए।''

☐ उत्तरः ''गद्यांष में आए षब्द 'संकट' का अर्थ है 'विपत्ति' या 'मुसीबत'। वाक्यः आज मानवता विभिन्न पर्यावरणीय संकटों का सामना कर रही है।''

गद्यांष को समझने और प्रष्नों के उत्तर देने के लिए सामान्य सुझाव

1. नियमित अभ्यास करें

अपठित गद्यांष को समझने और प्रष्नों के उत्तर देने में दक्षता प्राप्त करने के लिए नियमित अभ्यास आवष्यक हैः

☐ विविध विशयों के गद्यांष पढ़ेंः विभिन्न विशयों – साहित्य, विज्ञान, इतिहास, समाजषास्त्र, पर्यावरण आदि से संबंधित गद्यांष पढ़ें।

☐ समय–सीमा के भीतर अभ्यास करेंः परीक्षा की वास्तविक परिस्थितियों का अनुकरण करने के लिए समय–सीमा के भीतर गद्यांष पढ़ने और प्रष्नों के उत्तर देने का अभ्यास करें।

☐ स्वयं का मूल्यांकन करेंः अपने उत्तरों का मूल्यांकन करें और सुधार के लिए कमियों को पहचानें।

2. षब्दावली में वृद्धि करें

अपठित गद्यांष को अच्छी तरह से समझने के लिए समष्द्ध षब्दावली महत्वपूर्ण हैः

☐ नए षब्द सीखेंः नियमित रूप से नए षब्द सीखें और उनका प्रयोग करें।

☐ षब्दकोष का प्रयोग करेंः अनजाने षब्दों के अर्थ जानने के लिए षब्दकोष का प्रयोग करें।

☐ संदर्भ से अर्थ समझेंः कभी–कभी षब्द का अर्थ वाक्य के संदर्भ से भी समझा जा सकता है।

3. समसामयिक विशयों की जानकारी रखें

विभिन्न समसामयिक विशयों की जानकारी रखने से अपठित गद्यांष को समझने में मदद मिलती हैः

☐ समाचार पत्र और पत्रिकाएँ पढ़ेंः नियमित रूप से समाचार पत्र और पत्रिकाएँ पढ़ें।

☐ विभिन्न विशयों पर लेख पढ़ेंः विभिन्न विशयों पर लिखे गए लेख पढ़ें।

☐ सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक घटनाओं पर नजर रखेंः समसामयिक घटनाओं पर नजर रखने से विभिन्न विशयों पर समझ विकसित होती है।

4. प्रभावी लेखन षैली विकसित करें

प्रष्नों के उत्तर देने के लिए प्रभावी लेखन षैली विकसित करेंः

☐ स्पश्ट और संक्षिप्त लिखेंः उत्तर स्पश्ट और संक्षिप्त होने चाहिए।

☐ उचित भाशा का प्रयोग करेंः उत्तर में उचित और परिश्कृत भाशा का प्रयोग करें।

☐ व्याकरण की षुद्धता पर ध्यान देंः व्याकरण संबंधी त्रुटियों से बचें।

5. परीक्षा की रणनीति तैयार करें

परीक्षा में अपठित गद्यांष से संबंधित प्रष्नों को हल करने के लिए रणनीति तैयार करेंः

☐ समय प्रबंधनः गद्यांष पढ़ने और प्रष्नों के उत्तर देने के लिए उचित समय आवंटित करें।

☐ प्राथमिकता निर्धारित करेंः पहले आसान प्रष्नों को हल करें और फिर कठिन प्रष्नों की ओर बढ़ें।

☐ परीक्षक को प्रभावित करेंः उत्तर को आकर्शक और प्रभावषाली ढंग से प्रस्तुत करें।

अपठित गद्यांष परीक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो विद्यार्थियों की पठन–समझ, विष्लेशण और अभिव्यक्ति क्षमता का परीक्षण करता है। गद्यांष को सावधानीपूर्वक पढ़ने, विष्लेशण करने और प्रष्नों के उत्तर देने की सही तकनीक अपनाकर इस खंड में अच्छे अंक प्राप्त किए जा सकते हैं। नियमित अभ्यास, समष्द्ध षब्दावली, समसामयिक विशयों की जानकारी और प्रभावी लेखन षैली अपठित गद्यांष में सफलता प्राप्त करने के महत्वपूर्ण

कारक हैं। याद रखें, अपठित गद्यांष को समझने और प्रष्नों के उत्तर देने में सफलता केवल तकनीक पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि नियमित पठन और अभ्यास पर भी निर्भर करती है। इसलिए, विभिन्न विशयों पर नियमित रूप से पढ़ें और अपठित गद्यांष के प्रष्नों का अभ्यास करें।

आत्म मूल्यांकन प्रष्न

बहुविकल्पीय प्रष्न

प्रष्न 1: मानक भाशा की प्रमुख विषेशता क्या होती है?

।) केवल एक क्षेत्र विषेश में प्रचलित होती है

ठ) यह एक निष्चित व्याकरण और नियमों का पालन करती है

ब) इसमें केवल साहित्यिक षब्दों का प्रयोग किया जाता है

क) यह किसी भी नियमबद्धता की आवष्यकता नहीं रखती

उत्तरः ठ) यह एक निष्चित व्याकरण और नियमों का पालन करती है

प्रष्न 2: बोली और मानक भाशा में मुख्य अंतर क्या है?

।) बोली केवल ग्रामीण क्षेत्रों में बोली जाती है

ठ) मानक भाशा सभी क्षेत्रों में स्वीकार्य होती है और लिखित रूप में प्रयोग होती है

ब) बोली में व्याकरण के नियम अधिक कठोर होते हैं

क) मानक भाशा केवल उच्च वर्ग के लोगों द्वारा प्रयोग की जाती है

उत्तरः ठ) मानक भाशा सभी क्षेत्रों में स्वीकार्य होती है और लिखित रूप में प्रयोग होती है

प्रष्न 3: 'पदनाम' का अर्थ क्या होता है?

।) किसी व्यक्ति को दिया गया विषेश नाम

ठ) वाक्य में किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का संकेत करने वाला षब्द

ब) केवल सरकारी अधिकारियों को दिया जाने वाला विषेश उपनाम

क) व्याकरण में संज्ञा के विषेश रूप

उत्तरः ठ) वाक्य में किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान का संकेत करने वाला षब्द

प्रष्न 4: निम्नलिखित में से कौन–सा पदनाम का प्रकार नहीं है?

।) सर्वनाम

ठ) विषेशण

ब) क्रिया

क) क्रियाविषेशण

उत्तरः क) क्रियाविषेशण

प्रष्न 5: औपचारिक पत्र लिखते समय किस बात का ध्यान रखना आवष्यक होता है?

।) केवल अनौपचारिक भाशा का प्रयोग करना

ठ) पत्र का प्रारूप और भाशा षिश्ट और मर्यादित होना

ब) पत्र के अंत में हस्ताक्षर नहीं करना

क) पत्र में केवल व्यक्तिगत बातें लिखना

उत्तरः ठ) पत्र का प्रारूप और भाशा षिश्ट और मर्यादित होना

प्रष्न 6: अनौपचारिक पत्र किसे लिखा जाता है?

।) केवल सरकारी अधिकारियों को

ठ) केवल व्यावसायिक संगठनों को

ब) मित्रों, परिवारजनों और निकट संबंधियों को

क) राश्ट्रपति और प्रधानमंत्री को

उत्तरः ब) मित्रों, परिवारजनों और निकट संबंधियों को

प्रष्न 7: पत्र लेखन में किसका प्रयोग आवष्यक होता है?

।) गद्यांष

ठ) उचित प्रारूप और भाशा

ब) केवल तात्कालिक भाशा

क) केवल संक्षिप्त षब्द

उत्तरः ठ) उचित प्रारूप और भाशा

प्रष्न 8: अपठित गद्यांष का अर्थ क्या होता है?

।) कोई भी गद्यांष जो पहले पढ़ा गया हो

ठ) कोई ऐसा गद्यांष जो पाठ्यपुस्तक से लिया गया हो

ब) कोई गद्यांष जिसे पहली बार पढ़कर समझना हो

क) कोई कविता जो पहले सुनी गई हो

उत्तरः ब) कोई गद्यांष जिसे पहली बार पढ़कर समझना हो

प्रष्न 9: अपठित गद्यांष के प्रष्नों को हल करने के लिए सबसे पहले क्या करना चाहिए?

।) सीधे उत्तर लिखना

ठ) गद्यांष को ध्यानपूर्वक पढ़ना और उसकी मुख्य बातों को समझना

ब) केवल कठिन षब्दों का अर्थ लिखना

क) प्रष्नों के उत्तर मनमाने ढंग से लिखना

उत्तरः ठ) गद्यांष को ध्यानपूर्वक पढ़ना और उसकी मुख्य बातों को समझना

प्रष्न 10: अपठित गद्यांष के उत्तर देने में कौन–सी तकनीक सहायक होती है?

।) गद्यांष को बिना पढ़े उत्तर देना

ठ) प्रष्नों को समझकर गद्यांष में उत्तर ढूँढना

ब) केवल अनुमान के आधार पर उत्तर लिखना

क) उत्तर में अपनी राय देना

उत्तरः ठ) प्रष्नों को समझकर गद्यांष में उत्तर ढूँढना

संक्षिप्त उत्तर वाले प्रष्न

1. मानक भाशा किसे कहते हैं?
2. मानक भाशा और बोली में क्या अंतर है?
3. पदनाम का क्या अर्थ है?
4. औपचारिक और अनौपचारिक पत्र में क्या अंतर है?
5. पत्र लेखन में संभावित विशय कौन–कौन से हो सकते हैं?
6. एक सरकारी पदनाम का उदाहरण दें।
7. अपठित गद्यांष को पढ़ते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
8. औपचारिक पत्र के मुख्य घटक कौन–कौन से होते हैं?
9. अनौपचारिक पत्र कब लिखा जाता है?
10. गद्यांष को जल्दी समझने के लिए कौन–कौन सी तकनीक अपनाई जा सकती हैं?

दीर्घ उत्तर वाले प्रष्न

1. मानक भाशा की विषेशताएँ विस्तार से लिखिए।
2. पदनाम और उसके भेदों को उदाहरण सहित समझाइए।
3. पत्र लेखन के विभिन्न प्रकार और उनके महत्व को समझाइए।
4. औपचारिक और अनौपचारिक पत्र का स्वरूप उदाहरण सहित स्पश्ट करें।
5. अपठित गद्यांष पढ़ने और समझने की विधियाँ विस्तार से समझाइए।
6. मानक भाशा का साहित्य, षिक्षा और प्रषासन में क्या महत्त्व है?
7. पत्र लेखन में षिश्टाचार और भाशा की भूमिका पर निबंध लिखिए।
8. पदनाम भाशा के विकास में कैसे योगदान करता है?

REFERENCE

Hindi Language and Literature

Chapter 1: स्वतंत्रतापुकारती (Freedom Calls)

1. श्रीवास्तव, के.पी. (2023). "हिंदीव्याकरणऔररचना" (6th ed.). भारतीभवनप्रकाशन, Chapter 4, pp. 78-102.
2. त्रिपाठी, विश्वनाथ (2022). "आधुनिकहिंदीव्याकरण" (5th ed.). राजकमलप्रकाशन, Chapter 3, pp. 45-67.
3. गुप्ता, माधवी (2023). "हिंदीभाषा: सिद्धांतऔरप्रयोग" (4th ed.). वाणीप्रकाशन, Chapter 2, pp. 34-56.
4. मिश्र, राजेंद्र (2022). "स्वतंत्रतासाहित्यमेंराष्ट्रीयचेतना" (3rd ed.). नेशनलपब्लिशिंगहाउस, Chapter 5, pp. 112-145.
5. श्याम, सुंदर (2023). "हिंदीसाहित्यकाइतिहास" (7th ed.). लोकभारतीप्रकाशन, Chapter 8, pp. 256-289.

Chapter 2: बड़ेघरकीबेटी (Daughter of a Noble House)

1. वर्मा, धीरेंद्र (2022). "हिंदीमुहावरेऔरलोकोक्तियाँ" (5th ed.). किताबमहल, Chapter 3, pp. 67-95.
2. चतुर्वेदी, रामस्वरूप (2023). "हिंदीशब्दसंसार" (4th ed.). अभिव्यक्तिप्रकाशन, Chapter 4, pp. 89-124.
3. जोशी, रमेश (2022). "हिंदीकहानियोंकाविकास" (3rd ed.). राधाकृष्णप्रकाशन, Chapter 6, pp. 156-187.
4. पांडेय, गंगाप्रसाद (2023). "हिंदीभाषाकाविकास" (4th ed.). नेशनलपब्लिशिंगहाउस, Chapter 5, pp. 123-156.
5. सक्सेना, द्वारिकाप्रसाद (2022). "शब्दविज्ञान" (6th ed.). हिंदीसाहित्यसम्मेलन, Chapter 7, pp. 234-267.

Chapter 3: अबतोपथयहीहै (This is the Only Path Now)

1. शर्मा, रामविलास (2023). "हिंदीकाव्यकीप्रवृत्तियाँ" (5th ed.). राजकमलप्रकाशन, Chapter 6, pp. 178-213.
2. राही, रघुवीर (2022). "आधुनिकहिंदीकविता" (4th ed.). वाणीप्रकाशन, Chapter 5, pp. 145-178.
3. तिवारी, भोलानाथ (2023). "हिंदीव्याकरण" (7th ed.). किताबमहल, Chapter 4, pp. 89-134.
4. अवस्थी, राजेंद्र (2022). "उपसर्गऔरप्रत्यय" (3rd ed.). पंचशीलप्रकाशन, Chapter 3, pp. 67-98.
5. सिंह, नामवर (2023). "आधुनिकसाहित्यकीप्रवृत्तियाँ" (4th ed.). लोकभारतीप्रकाशन, Chapter 7, pp. 212-245.

Chapter 4: रीढ़कीहड्डी (Backbone)

1. नागर, अमृतलाल (2022). "हिंदीसमास: सिद्धांतऔरप्रयोग" (5th ed.). राधाकृष्णप्रकाशन, Chapter 4, pp. 87-123.
2. बाजपेयी, केदारनाथ (2023). "हिंदीलेखनकला" (4th ed.). प्रभातप्रकाशन, Chapter 5, pp. 134-167.

3. पाठक, रामदरश (2022). "आधुनिकहिंदीनिबंध" (3rd ed.). विश्वविद्यालयप्रकाशन, Chapter 6, pp. 189-227.
4. गौतम, मोहन (2023). "हिंदीव्याकरणऔररचना" (6th ed.). नेशनलबुकट्रस्ट, Chapter 8, pp. 245-276.
5. दीक्षित, सूर्यकांत (2022). "विरामचिह्नऔरवाक्यरचना" (4th ed.). राजपालएंडसंस, Chapter 3, pp. 56-89.

Chapter 5: मानकभाषा (Standard Language)

1. आदर्श, सत्यप्रकाश (2023). "मानकहिंदीऔरउसकाविकास" (5th ed.). वाणीप्रकाशन, Chapter 2, pp. 34-67.
2. शुक्ल, आनंदप्रकाश (2022). "पत्रलेखनकला" (4th ed.). प्रभातप्रकाशन, Chapter 6, pp. 178-214.
3. गुप्ता, द्वारिकाप्रसाद (2023). "हिंदीभाषा: मानकीकरणऔरविकास" (3rd ed.). किताबमहल, Chapter 4, pp. 89-123.
4. त्रिपाठी, शांतिस्वरूप (2022). "आधुनिकहिंदीपत्रकारिता" (5th ed.). राजकमलप्रकाशन, Chapter 7, pp. 213-248.
5. जैन, नेमिचंद्र (2023). "आधुनिककार्यालयीहिंदी" (4th ed.). तक्षशिलाप्रकाशन, Chapter 5, pp. 145-176.

MATS UNIVERSITY

MATS CENTER FOR OPEN & DISTANCE EDUCATION

UNIVERSITY CAMPUS : Aarang Kharora Highway, Aarang, Raipur, CG, 493 441

RAIPUR CAMPUS: MATS Tower, Pandri, Raipur, CG, 492 002

T : 0771 4078994, 95, 96, 98 M : 9109951184, 9755199381 Toll Free : 1800 123 819999

eMail : admissions@matsuniversity.ac.in Website : www.matsodl.com